बम्बई के मराठी रंगमंच पर इस गौरवशाली नाटक को प्रस्तुत करने का श्रेय डा० श्रीराम लागू को है। उन्होंने इस नाटक के अब तक दो सौ से भी अधिक प्रदर्शन किए हैं।
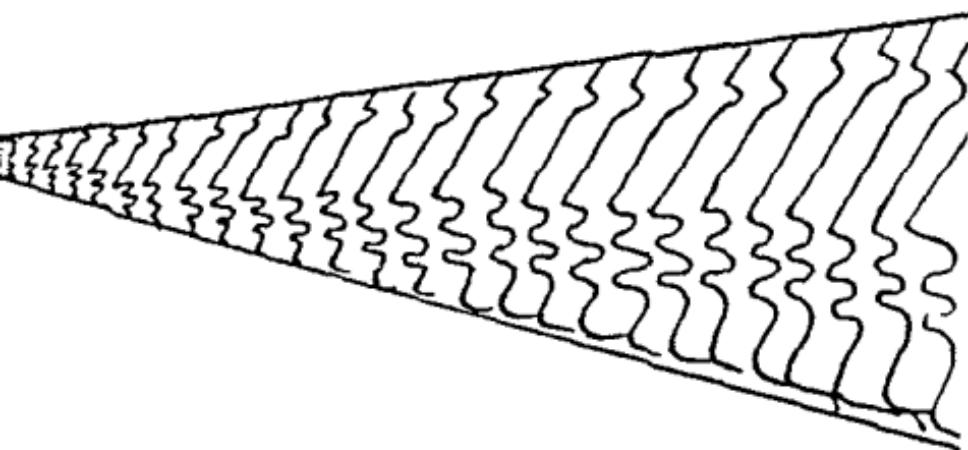
लिपि प्रकाशन
1, अंसारी रोड़, नई दिल्ली-110 002

हिमालय की छाया

वसन्त कानेटकर

अनुवादक :

डा० कुसुम कुमार
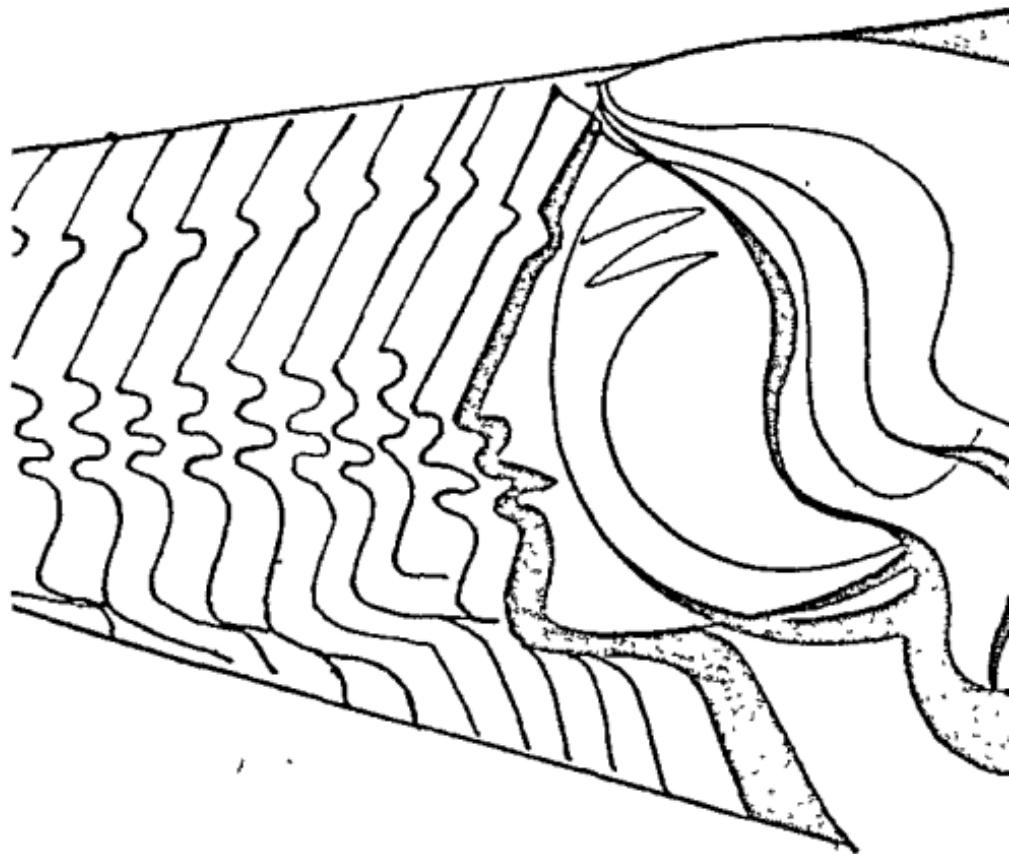
मूल मराठी नाटक 'हिमालयाची सावली' का अनुवाद

मूल्य : दस रुपये

प्रथम संस्करण : सितम्बर, 1978

प्रकाशक

लिपि प्रकाशन

1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मुद्रक : शब्दशिल्पी द्वारा प्रगति प्रिंटर्स, दिल्ली-32

HIMALAYA KI CHHAYA

By : Vasant Kanetkar

Rs. 10.00

हिमालय की छाया

पात्र-परिचय

नाना साहेव, उर्फ प्रोफेसर गुंडो गोविन्द भानू
वयो
पुरुषोत्तम
केशवराव
कृष्णाबाई
जगन्नाथ
अरुंधती
तातोवा
आवाजी
पांडू
तांगेवाला

"···उस वक्त जब ये बोलते थे, व्यवहार करते थे, वैसा न करते तो मेरे मन मे टिका इनका रथ कब का जमीन पर लग गया होता।···देखते क्या हो, गर्दन उठाकर आसमान की तरफ देखो! और बताओ क्या कभी ऐसा हिमालय-पुरुष देखा है तुमने अपनी आंखो से?···देखते कैसे? मैं नही देख पाई रे! हम सभी खड़े थे उनके पांवों के पास···उनकी छाया में। ऊपर दिखता है सिर्फ आसमान। चोटी कही दिखाई ही नही देती। चोटी तक नजर ही नही पहुंच पाती!···"

पहला अंक

[बीसवीं शती का प्रारंभिक काल। दिसंबर के अंतिम सप्ताह का कोई एक दिन। सुबह के ग्यारह बजे हैं। पूना—अर्थात् उस काल का पूना। शहर से कुछ दूर, पर्वत के पावों मे बिछी हरी-भरी धरती पर बसे 'अनाथ अबला आश्रम' का वातावरण। इसी वातावरण में आश्रम के संस्थापक प्रोफेसर गुंडो गोविंद भानू की पर्णकुटी। पर्णकुटी यानी कि एक ऐसी झोंपड़ी जिसकी दीवारों का आकार ऊबड़-खाबड़ है। छत भी पत्तों की है। बाहर ड्योढ़ी है और उसी के सामने एक बरामदा। ड्योढी के पास एक चरखी लगा कुआं भी है।

प्रो० गुंडो गोविंद भानू 'ज्ञानसंवर्धक मडल' के चेटफील्ड कालेज से दो वर्ष पहले ही सेवानिवृत्त हुए है। तभी से लाख विरोधों के बावजूद उन्होंने 'अनाथ अबला आश्रम' का काम बड़ी दृढ़ता से संभाल रखा है। इस आश्रम के साथ ही साथ नाना साहेब ने हाल ही में 'महिला शिक्षण मंदिर' की स्थापना भी की है और इसीलिए उन्हे चेटफील्ड कालेज से नियत अवधि से कुछ पहले ही निवृत्त होना पड़ा है। आश्रम और शिक्षण मंदिर का कच्चा-सा ढांचा अभी पिछले वर्ष ही उन्होंने खड़ा किया है और अनेक असुविधाओं के बावजूद भी वे इस पर्णकुटी मे सपरिवार रहने लगे हैं। परिवार—यानी कि उनकी पत्नी सावित्रीबाई उर्फ बयो, बड़ा लड़का पुरुषोत्तम, लड़की

कृष्णाबाई, बच्चों का मामा तातोबा काशीकर, एक तरुण शिष्य केशव मोरेश्वर दातार जो कभी गरीब था इसलिए नाना साहेब का आश्रित था लेकिन अब पढ़-लिखकर उनके काम में सहभागी हो गया है। कुल इतने ही लोग। परदा उठता है।

पुरुषोत्तम—उम्र बीस के आसपास, छोटे कटे हुए बाल, बदन पर मजदूरों जैसी कमीज, घुटनों के जरा नीचे कसकर टांकी हुई धोती। हल्की पतली मूछें, चुस्त मुद्रा। धुले हुए गीले कपड़ों की बाल्टी लेकर अंदर आता है, बाल्टी नीचे रखता है और उसमें से एक गीला कपड़ा लेकर फटकने लगता है। तभी बाहर से, सिर पर पानी की गागर लिए हुए कृष्णाबाई आती हैं। कृष्णाबाई सोलह-सत्रह साल की सावली सलोनी शोख लड़की है। अंगों में उभार के कारण अपनी उम्र से जरा बड़ी लगती है। सादी नौ गज की साड़ी, बार्डर वाली चोली और ऊपर जैकेट पहने है। हाथों में काच की कुछ चूड़ियां हैं, इसके अलावा उसने इस वक्त कोई गहना नही पहन रखा। कृष्णाबाई आती है—]

कृष्णा : (थमकर) यह क्या भैय्या ? थोड़ी देर रुक जाता तो मैं ना कपड़े धो देती ?

पुरुषोत्तम : (मुस्कराकर) खाली बैठा था इसलिए धो दिए। इसमें बिगड़ क्या गया ? लोगों के थोड़े ही धोए हैं ?

कृष्णा : (गागर लेकर जल्दी से जाते हुए, कृत्रिम गुस्से से) तू भी अजीब है। औरतों के काम औरतें करें, मर्दों के मर्द ! मुझे नहीं अच्छा लगता हां !

पुरुषोत्तम : केशवराव से कहना ये सब, मुझसे नहीं।

कृष्णा : (जाते जाते, रुककर, पीछे मुड़कर, बड़ी-बड़ी आंखें करके) भैय्या !

पुरुषोत्तम : (कपड़े रखते हुए) अरे हां हा···लेकिन···कितनी एकदम चिढ़ जाती है ? देख, मैं कपड़े छटक देता हूं तू अंदर जाकर फैला दे इन्हें। चल, चल···झटपट कर, अभी क्यों आ गई तो—

कृष्णा : और तेरे हाथ में उसने यह कपड़े देख लिए तो मुझे फाड़ खाएगी। पता है ? तू तो मर्द है तुझे कोई क्या कहेगा ?

पुरुषोत्तम : ऐसे कह रही है जैसे मैंने आज ही कपड़े धोए है। अरे ! कपड़े वर्तन धोते धोते तो हाथ सख्त हो गए है यहां !

कृष्णा : हुए होंगे छुटपन में। जब से कालेज गया है तब से नहीं।

[कृष्णाबाई गागर लेकर अंदर जाती है। पुरुषोत्तम गीली धोती को फटककर तह लगाता हुआ मुह ही मुह मे बोलता है—'कितनी भी पढ़-लिख जाएं ये औरतें, रहेगी तो औरतें ही।' यह उद्गार सुनती हुई कृष्णाबाई अदर से आती है और उसके हाथ की धोती अंदर ले जाती हुई गुस्से से कहती है—'यह कहने से ही तू भानू के घराने का पुरुष लगता है !' पुरुषोत्तम हंसकर कहता है—'क्यो ने मेरा नाम यूं ही तो पुरुषोत्तम नहीं रक्खा।' इसी बातचीत मे पुरुषोत्तम एक-एक कपडा छटक कर कृष्णा को देता जाता है और वह अंदर ले जाती है। यह सब बडी सहजता से हो रहा है। उसका दिया हुआ एक कपड़ा हाथ में लेती हुई—]

कृष्णा : तार आने का वक्त निकल तो नही गया ना भैय्या ?

पुरुषोत्तम : (ठंडे स्वर में) तार तो कब का आ चुका।

कृष्णा : (आश्चर्य से) तार आ गया ? अरे सच ? क्या हुआ ?

पुरुषोत्तम : जग्गू भैय्या अफ्रीका से बंबई पहुंच चुका है। होटल मे ठहरा हुआ है। आज हम सबसे मिलने वह—

कृष्णा : (चिढ़कर) यह तू मुझे बता रहा है ? अरे, यह तार तो मैंने लिया था।

पुरुषोत्तम : सचमुच अब तक तो उसे आ जाना चाहिए था। देख क्या रही है ऐसे ?

कृष्णा : भैय्या, तेरा बी० एस-सी० का रिजल्ट निकलना था ना

आज ?

पुरुषोत्तम : (ठंडे स्वर में) दस बजे ही निकल चुका होगा।

कृष्णा : उसी का तार तो आना था। अब तक आ जाना चाहिए था।

पुरुषोत्तम : आ चुका है।

कृष्णा : (चिल्ला कर) अरे ! तार आ गया ? कब ? कहा है ? मुझे कैसे पता नही चला ?

पुरुषोत्तम : तू नहा रही थी तब। तार आए तो एक घंटा हो चुका होगा।

कृष्णा : (गुस्से से) और भैय्या तू मुझे अब बता रहा है। वह भी··· रिजल्ट का क्या हुआ, पहले वो बता। मुझे तार दिखा।

पुरुषोत्तम : दिखाता हू···दिखाऊगा ही, पहले उस कुर्ते को···

कृष्णा : (हाथ का कुर्ता बाल्टी में पटकती हुई) नही···पहले तार दिखा। तुझे मेरी कसम।

पुरुषोत्तम : कसमे क्या खिला रही है, अनपढ औरतो की तरह। (कुर्ते की जेब से तार निकालकर उसके हाथ मे देते हुए) ले, देख ले।

कृष्णा : (तार पढ़कर···खुशी से दिल भर आता है) फर्स्ट क्लास फर्स्ट···भैय्या तुझे सब प्राइजिज···गोल्ड मेडल तक मिल गया ? कितना अच्छा हो गया रे ! ···नाना और बयो को जब पता चलेगा तो कितनी खुशी होगी उन्हे।

पुरुषोत्तम : बयो का तो ठीक है पर नाना के बारे मे कुछ मत कह। अनाथ अबला आश्रम की किसी बाल विधवा ने सादी बोर्ड की परीक्षा भी पास कर ली तो उन्हे ब्रह्मानंद होगा लेकिन यह तार पढकर···हू !

कृष्णा : बेमतलब बोलता है तू भी।

पुरुषोत्तम : बेमतलब ? (उसके हाथ से तार लेकर) अब देख तुझे मैं एक तमाशा दिखाता हू।

कृष्णा : (हड़बड़ाकर) तमाशा ? कैसा तमाशा ?

पुरुषोत्तम : (गीला कुर्त्ता फटकते हुए) कृष्णाबाई, फर्ज कर नाना आ गए और उन्हे पता चला कि रिजल्ट का तार अभी तक नही आया। जानती है वो क्या कहेंगे ?

कृष्णा : क्या कहेगे ?

पुरुषोत्तम : (नकल उतारते हुए) पुरुषोत्तम बारह बज चुके है, तार नही आया, तू फेल हो गया···कर्त्तव्य मे चूक गया···बुरा हुआ···तुझे बीसवा साल लगने तक तेरी पढाई की जिम्मेदारी मुझ पर थी, अब आगे तू अपना आप देख। और बस विषय खत्म।

कृष्णा : इसे तू तमाशा कहता है भैय्या ?

पुरुषोत्तम : आगे सुन तो सही। कुछ ही देर बाद मैं यह तार उन तक पहुचा दूगा। तार पढकर नाना मुझे आवाज लगाकर कहेगे—'पुरुषोत्तम तार आ गया। तू अव्वल दर्जे मे अव्वल नबरो से पास हुआ है। सब प्राइजिज भी मिले है, बहुत अच्छा हुआ। तुझे बीसवा साल लगने तक तेरी पढ़ाई की जिम्मेवारी मेरी थी, अब आगे तू अपना रास्ता आप ढूढ। और विषय खत्म। बस इससे आगे कुछ नही। (हंसता है)

कृष्णा : (दु:ख से) इसे तू तमाशा समझता है, भैय्या ?

पुरुषोत्तम : (गंभीर होकर कुर्त्ता फटकता है) हा, लोगों को इसमे खूब मजा आता है···मैंने समझा तुझे भी आएगा···पर तू तो मेरी ही तरह है···(जल्दी से विषय बदल कर) कृष्णा यह कुर्त्ता तार पर डाल देगी ? इसे ऐसे ही छटकना रहा मैं तो बेचारा फट जाएगा और नाना गुस्सा करेंगे। किसी का गुस्सा किसी पर। हम पर नाना का जो प्रेम है उसका लेनदार कम से कम यह कुर्त्ता तो न हो !

[कृष्णाबाई कुर्त्ता लेकर अदर जाती है। पुरुषोत्तम भी अंदर जाकर बाल्टी रखता है और हाथ पोछता हुआ बाहर आता है। कृष्णाबाई बाहर आकर विचारमग्न हुई पुरुषोत्तम से कहती है—]

कृष्णा : भैय्या… (दीन स्वर में) तू सचमुच ही यह तमाशा करेगा ?

पुरुषोत्तम . (कुछ कुछ मजाक, कुछ कुछ कड़ुवेपन से) हां ! इन्सान के स्वभाव की मेरी परख किस दर्जे की है, उसका पता खुद मुझे चलना चाहिए ? देख अगर तू ने बीच में कोई शैतानी की तो हम सब की कसम होगी तुझे।

कृष्णा : (दीन स्वर में) नहीं…नहीं…पर पहले बोल…कसम टूट गई।

पुरुषोत्तम · छ: जमात अंग्रेजी की पढ के भी तू दादी अम्मा ही बनी रही।

कृष्णा : रहने दे। पर पहले, कसम टूट गई कह ना ! भैय्या… भैय्या तेरे इस तमाशे की वजह से बयो पर क्या बीतेगी उसका भी कुछ सोचा है ? उसकी कल्पना करते ही मेरे तो पेट मे कुछ कुछ होने लगता है। बयो को रोता देखना चाहता है न तू भैय्या ?

पुरुषोत्तम : तू तो पागल है। बयो क्या तेरी तरह टुसक टुसक रोनेवाली औरत है ? खुद अदर से कितनी भी दु खी क्यो न हो लेकिन मुह का पट्टा ऐसे चलाएगी कि रोनेवालो को हंसा दे। कैसे कहेगी बताऊ ? (नकल करता है) …अरे मेरे लल्ला…अरे मेरे राजा…हाय राम कितना सूख गया ? …सेहत कितनी खराब हो गई…अरे एकाध साल मरी फेल भी हो गई—परीक्षा रे, तो दिल को कितना लगा लिया है ?

[उसी वक्त बयो की आवाज सुनाई देती है—पुरुषा…केशवा…कृष्णाबाई…सब मर गए क्या अपने अपने काम मे ?…पुरुषा मरा तो बैठा होगा किताब में मुह छिपाए, पर उस चुड़ैल को कुछ अकल है कि नही ? वक्त पे कोई किसी का नही…]

कृष्णा : (जल्दी से) मैंय्या…बयो आ गई।…(बाहर जाने लगती है)

पुरुषोत्तम : (जाती हुई कृष्णा को रोकते हुए) पहले अंदर जा और बचे हुए कपड़े सूखने के लिए डाल इतने में तुझे तमाशा दिखाता हूं।

कृष्णा : (अंदर जाते जाते) पर मैंय्या, बयो को तू वह तार…

पुरुषोत्तम : मुझे सब पता है तूने बीच मे अड़ंगी लगाई तो देखना।

[कृष्णा जल्दी से अन्दर जाती है। पुरुषोत्तम बाहर का जायजा लेते हुए घुटनों मे सिर डाल कर जमीन पर बैठ जाता है। इसी बीच बयो बाहर किसी को आवाज लगाती है…'अरे मेरे बेटे, ऐ तांगे वाले…हनुमन्त कि मारुति क्या नाम बताया तूने अपना ? तांगेवाला : 'मारुति… मारुति।' बयो · 'देख बेटा बोझ उठाने का एक पैसा ज्यादा दे दूंगी पर यह बोरी तो…' तांगेवाला : 'छी: छी.…बोझा उठाने के पैसे किसलिए ? तांगे का भाडा दे दीजिए…आप आगे चलिए…।' इसी के साथ जल्दी से सावित्री बाई उर्फ बयो प्रवेश करती है। बिना चप्पल। हाथ मे एक थैला और पीतल का डिब्बा। उम्र पैंतालीस के आसपास, मुद्रा चुस्त, बातचीत का ढग ठस्केदार। परिस्थितियों और अनुभव से खूब सीखी हुई। स्त्री सुलभ डर और लज्जा नष्ट हो चुके हैं। क्षण में प्यार करना, क्षण मे चिढ जाने वाला स्वभाव। घर आती है गुस्से मे, जोर से बोलती हुई—'कितनी धूप है। चक्कर आकर मर जाए आदमी। छाया के लिए एक पेड़ तक नही दिखा। दुःख ही दु.ख है हर कही। ऊपर से इन बच्चो की और मुसीबत…पुरुषा…

कृष्णे···]

बयो (**पुरुषोत्तम को घुटनों में सिर डाले हुए देखकर गुस्से से**) पुरुषा मरे, इतनी आवाजें लगाई तुझे और तू यहां गर्दन नीची किए किसी राड की तरह बैठा है !

कृष्णा : (**हाथ में गीला कपड़ा लिए दरवाजे से झांकती है**) बयो।

बयो : अभी तक कपडे भी नही धोए ना ? क्या कौडिया खेलती बैठी थी ? है तो अपने बाप की बेटी ना ? एक दिन भी जो मा के काम आ जाए तो रामा शिवा गोविन्दा !

कृष्णा : यह बात नही बयो, कपडे धो लिए, पानी भर के रख दिया, दाल पका ली, चावल ऊपर रक्खे है···पर···(**इशारे से भाई को कुछ जताती हुई**) भैय्या···भैय्या···ऊपर तो देख···।

बयो : (**थैला और डिब्बा रखती हुई**) क्या हुआ रे इसे ? कृष्णा तार वाला आ चुका क्या ?

[कृष्णा अदर चली जाती है। बयो खुद समझ जाती है···कातर स्वर में—]

नही आया ? तार लेकर नही आया ? भाड़ मे जाए मरा। दिवाली की बखशीस मांगने आए अब जरा, तब बताऊंगी। (**पुरुषोत्तम को पास लेकर प्यार जताती है**) अरे मेरे बेटे···अरे मेरे राजे···(**जबरदस्ती उसकी गर्दन ऊपर करती है**) हाय राम कितना सूख गया है। सेहत कितनी खराब हो गई···एकाध साल मरी फेल हो गई—परीक्षा रे तो दिल को कितना लगाएगा ? अरे तेरा बाप इतना बडा विद्वान गणित का प्रोफेस्वर—पर लोग कहते है बोर्ड की परीक्षा में भी तीन तीन बार फेल हुए थे। विद्वत्ता उनकी चाहे पहाड़ जैसी थी लेकिन मौखिकी मे महाराज हमेशा गडबडा जाते थे। मुझ नासमझ को क्या पता था वह तो अपने तातोबा ने बताया कि बये तेरे होने वाले पति की बुद्धि तो बृहस्पति की है, लेकिन बात करने मे बिल्कुल गया

गुजरा है। मुह मे एक शब्द फूटना भी मुश्किल है उसके। सवाल पूछने पर खुलकर उत्तर देने का उसमें जरा भी साहस नहीं। एकदम डर जाता है। बोलू या ना बोलू इतना ही सोचकर अटक जाता है, इसी सब मे तीन परीक्षाएं निकल गईं।—झूठ नही पुरषा, मौखिकी जब खतम हुई और आगे सिर्फ लिखित परीक्षाएं रह गई···तभी यह इतने बड़े प्रोफेसर बने। नही तो कोई ऐसा वैसा काम ही करते।

[पुरुषोत्तम को एकदम हसी आ जाती है और वह ऊपर देखता है। तभी—]

हंसता है रे बदमाश ? बाप की कमिया बताई इसीलिए दांत निकालता है ? (उसका कान पकड़ती हुई) खुद परीक्षा में फेल हो गया है उसका—

पुरुषोत्तम : (कान छुड़वा कर उठता है) वह बात नही···वह बात नही बयो।

कृष्णा : (दौड़ती हुई आती है) खामख्वाह किसी का अंत किसलिए देखना मैय्या। दिखा दे ना वह तार बयो को।

बयो : (विस्मय से) अरे तार आ गया ? पुरषा, मरे···।

पुरुषोत्तम : तू भी ऐसी है ना कृष्णा, तिल तक नही टिकता तेरे मुह मे···

कृष्णा : बयो तार आ गया, मैय्या फर्स्ट क्लास फर्स्ट आया है। सारे प्राइजिज, स्वर्ण-पदक तक मिला है उसे।

बयो : ऐसा है ? मुझे ही बनाता है रे बदमाश ?

पुरुषोत्तम : यू ही मजाक किया था···मैं फेल हो जाऊंगा, यह तूने सोचा ही कैसे ?

बयो : अब कुछ मत बोल। ठहर तू इन्हे आने दे। केशव की तरह तुझे भी महिला शिक्षण मंदिर मे ही काम पर लगाने को कहती हू, फिर देखती हूं तेरी चुहुल।

पुरुषोत्तम : नही नही बयो, यह नही होगा···

कृष्णा : (हंसती हुई) नही कैसे ? नाना ने एक बार तय कर लिया तो—

पुरुषोत्तम : नही नही—ऐसा दिन आया तो मैं सड़क पर कुलीगिरी कर लूगा लेकिन—

[इतने मे कधे पर आधी भरी हुई बोरी उठाए हुए तागेवाला आता है और—]

तागेवाला : हे भगवान···जरा हाथ लगवा कर बोरी उतरवाना, पता चल जाएगा कुलीगिरी कैसे की जाती है—

पुरुषोत्तम : अरे ! तू मुझे सचमुच ही कुलीगिरी का सबक सिखाने चला है ! (बोरी उतरवा कर रखवाता है) इसमे क्या लाई है बयो ?

बयो : राव साहब के खेत से गेहूं की गाड़िया भर कर आई थीं, तभी अन्नपूर्णा से मैंने कहा—पाच-दस सेर मुझे भी दे दे। बहुत दिनो मे बच्चों ने गेहू की रोटी नही खाई—तो—

पुरुषोत्तम : (बोरी उठाते हुए रुकता है, चिढ़कर) बयो फिर तूने मुंह से लार टपकाई ? और वह भी मुफ्त के लिए ?

बयो : (उकताकर) अन्नपूर्णा के छह् जापे निकलवाए है मैंने। उस वक्त मैंने तो किसी से एक दमड़ी भी नही ली। बोरी अंदर ले जाके रख पहले, नखरेबाज मरा !

[पुरुषोत्तम बोरी लेकर अदर जाता है]

तांगेवाला : (बेचैन होकर) मा जी भाडा दे दीजिए मुझे, ताकि मै तो चलू।

बयो : (कमर से पैसे निकालकर गिनती हुई) यह रही बोरी की उठवाई और यह रही भाड़े की चवन्नी।

तागेवाला : सिर्फ चवन्नी ?

बयो : (गुस्से से) तो क्या अठन्नी दू ? तू क्या मुझे पालकी में उठाकर लाया है ?

तांगेवाला : यह बात नही मा जी इतनी धूप में, इतनी दूर—

बयो : इतनी दूर यानी कितनी दूर ? मुश्किल से डेढ़ मील का

रास्ता होगा जो तुझे इतनी दूर लगता है।

तांगेवाला : यह बात नहीं पर—

बयो : मैं औरत जात, बूढे, प्रोफेस्वर भानू के घर से। प्रोफेस्वर भानू को पहचानता है या नही ? सिर्फ गर्दन मत हिला। अरे घर घर की विधवा स्त्रियो को पढाना-लिखाना सिखाया है इन्होंने ताकि वे इज्जत से जी सकें···, इसीलिए तो यह आश्रम शुरू किया है भानू ने ! जवान विधवाओं को सभालने के लिए आश्रम गांव से थोडी दूर नहीं चाहिए क्या ? यह क्या मेरे घर का काम है ? फिर ? तुझे तो मुझसे बोझा उठाने का भी पैसा नही लेना चाहिए था। लिया—चलो ठीक किया। ऊपर से भाडे की चवन्नी दी तो—क्यों रे मारुति ? मारुति ही है न तू ? (तांगेवाला गर्दन हिलाता है।) लालगेट के पास जो मस्जिद है वही का तागा है न तेरा ? (तांगेवाला खुश होकर हां हां मां जी कहता है) अरे तू तो बाबूराव का लड़का लगता है ? बुड्ढा-बुढिया ठीक है ना ? (तांगेवाला : हां हां वैसे ठीक ही हैं पर···) बुढ़िया को इन नौरातों मे देवी के दर्शन कराए कि नही ? (तांगेवाला : बुढ़िया का तो नियम ही है देवी दर्शन···) बुढिया से कभी तागे के पैसे मागे तूने ? (तागेवाला : 'नहीं नहीं बुढ़िया से पैसे कैसे ?···) तो मुझसे मांगता है ? तेरे बाप को बताऊंगी।

तागेवाला : नही मा जी नही, पैसे दे दीजिए, चवन्नी तो चवन्नी ही सही।

बयो : अब कैसे ? ले बाबा···(तांगेवाला चवन्नी हाथ में लेकर सिर को लगाकर जाने लगता है। तभी···) ऐ मारुति इतनी जल्दी जल्दी कहा चला है रे ? (तांगेवाला घबरा कर पीछे पलटता है तभी···) अरे घर घर की विधवाओं को संभालने के लिए इन्होंने यह वनवास मंजूर किया है। तेरा भी इस पुण्य के काम में कुछ हाथ लगे···उस दानपेटी

मे कुछ पैसा-वैसा डालेगा या नही ?

तांगेवाला प···प···पैसा ?

बयो : अरे बेटा, भगवान सरीखी पेटी है वो, रंग तो देख। चवन्नी रख अपनी जेब मे पर एक पैसा तो डाल ही दे !

[तांगेवाला घबराकर दरवाजे के पास रखी हुई लाल पेटी में पैसा डाल देता है और चवन्नी संभालता हुआ वहां से भाग जाता है। बयो उस पेटी के पास जाकर अपनी टांगें ऊंची करके पेटी के छिद्र मे से अंदर के पैसों का अंदाजा लेने लगती है। पुरुषोत्तम उद्विग्न मुद्रा मे और कृष्णा प्यार से बयो को देखती हुई खड़ी है। बयो पीछे मुड़कर बच्चों को देखती हुई मुस्कराती है।]

चलो रुपये भर की रेजगारी तो जमा हो ही गई। (पुरुषोत्तम की विषण्ण मुद्रा देखकर) तूने मेरे मुंह क्यों बना रखा है ? अरे इन लोगों से ऐसे ही बात करनी पड़ती है। मैंने उसे फसाया नहीं पुरुपा, लेकिन पत्थर को भी सिंदूर लगाकर रख दिया जाए तो अच्छे-खासे समझदार लोग उसके सामने पैसा डाल देते है।···पुजारी लोग है कि मुफ्त का माल खा खा के मोटे-ताजे बने रहते हैं, लेकिन मैं उस पेटी का पैसा घर के खर्च के लिए तो इस्तेमाल नही करती ?

पुरुषोत्तम : (कटुता से) ये सब मुझे क्यो बता रही है—घर खर्च के लिए तुझे चालीस रुपये देकर जो कृत-कृत्य हो जाते हैं ये सब उन्हें बता ना ?

बयो : घर के खर्च की जिम्मेदारी तुझ पर तो नही आई ना ? तब फिर भून जा, छोड़। मैं अकेली काफी हूं घर चलाने के लिए। अब आगे तेरा क्या करने का इरादा है ? तू बो बता।

पुरुषोत्तम : (क्रोध से) मेरा कैसा इरादा ? जो मिलेगी वो नौकरी कर लूगा और मरते दम तक पेट का खड्डा भरता रहूंगा।

कृष्णा : (थोड़ा डांटते हुए) मैय्या-मैय्या···यह क्या बोले जा रहा है ? किसे कह रहा है तू यह सब ?

बयो : कृष्णा, औरत जात के लिए इतना खुलना भी ठीक नही। अंग्रेजी की छ. क्लास पढ ली तो किसी राजा की रानी नही बनने वाली तू । (पुरुषोत्तम के पास प्यार से जाकर)···पुरुषा···(पुरुषोत्तम गुस्से से पीठ फेर लेता है। तभी उसे अपने पास लेते हुए) अरे मेरे बेटे—कितना चिढेगा···कितना गुस्सा करेगा ? आखिर है तो तू मेरे पेट का ही ना ? जब मुझ मरी से ही गुस्सा नहीं सभाला जाता तो तू कैसे संभालेगा ? उस पर भी तू भानू का लडका है रे। भूख लगेगी तो बाप की तरह होठ चबाता बैठेगा पर मुह से नही फूटेगा कि भूख लगी है। मीठी रोटी खाएगा ? (डिब्बा उठाती है) तेरे लिए ही लाई हूं। कृष्णा, मरी देख क्या रही है ? पटरा वटरा बिछाएगी कि···(कृष्णा जल्दी से बाहर जाने लगती है।)

पुरुषोत्तम : ठहर कृष्णा, बयो, मुझे वह मीठी रोटी-वोटी नही चाहिए।

बयो : क्यों रे सोन्या ? मैंने नही बनाई इसलिए ?

पुरुषोत्तम : (चिढ़कर) नही बयो तू माग कर लाई है इसलिए। मुझे पता है···सरदार इदूलकर के घर नामकरण का मौका ढूढ़कर तू वहा पहुंची, घर के सभी लोगों का खाना होने तक रुकी रही और बची हुई इन रोटियो को तू··· बयो, बयो···तेरे बच्चे दरिद्र चाहे हों, भूखे भी, लेकिन भिखारी नही है—भीख की मीठी रोटी वो ना खाते हैं, ना कभी खाएँगे। (जल्दी से पीठ घुमा कर दरवाजे के पास जाकर कुर्ते की बांह से आंखें पोंछता है।)

बयो : (पास जाकर प्यार से) अरे मेरे राजे, इंदूलकर की हवेली क्या कोई पराया घर है हमारे लिए ?

पुरुषोत्तम : (मुड़कर क्रोध से) तो जाकर उनके बर्तन माज ना और बची हुई झूठन बाध कर साथ ले आ उधर से।

कृष्णा : मैय्या, मैय्या···तू होश मे तो है ? बयो को तू···

बयो : कृष्णा तू पहले अदर जा और चौके-पानी का देख। यहां खड़ी बेकार के विवाद मे···। उसे नही चाहिए मीठी रोटी तो ये खा लेंगे। वह डिब्बा उठा कर अन्दर जाली मे रख दे। जाली को कुडी लगाना मत भूलियो।

कृष्णा : (डिब्बा उठाकर अन्दर जाती हुई पीछे मुड़कर गुस्से से) वो भी बताना···पड़ेगा मुझे।

बयो : अरे वो बात नही। बिल्ली ना खा जाए इसलिए चौकस कर रही हूं।

[कृष्णा जाती है। एक आध क्षण स्तब्धता। पुरुषोत्तम वैसे ही पीठ मोड़कर गुस्से में बैठा रहता है। बयो जान-बूझकर उसकी तरफ देखती है और···]

बाप रे! धूल है कि आफत ? पूना क्या इस गाव का नाम तो धूल होना चाहिए।

[जल्दी से अन्दर जाकर झाड़ू लेकर कूड़ा इकट्ठा करने लगती है। कूड़ा निकालते निकालते, पुरुषोत्तम को लक्ष्य करके लेकिन उसकी तरफ न देखते हुए···]

पुरषा, तुझे एक बात कह दू। मा होकर जितनी मैं चुपचाप सह लेती हूं, उतनी तेरी बहू भी नही सहेगी, देखना। गुस्सा इन्सान को करना चाहिए, ज़ुबान भी चलानी चाहिए, मौका आए तो थप्पड भी लगा देना चाहिए—लेकिन उससे पहले बात की पूरी जानकारी कर लेनी चाहिए।

पुरुषोत्तम : (मुड़कर विस्मय से) बयो···

बयो : (कूड़ा निकालती निकालती अभी भी उसकी तरफ नहीं

देखती) हा, मैं सरदार इंदूलकर के घर नामकरण का मौका ढूंढकर गई थी। सच है। मीठी रोटियां मैंने माग कर ही ली थी। पर इंदूलकर के घर के लोग जब मुझ से खाना खाने की जिद करने लगे तो मैंने थाली में डाला हुआ सब कुछ वहीं खाने की बजाय डिब्बे में डाल लिया। इनको और बच्चों को घर में भूखा रखकर मैं वहा खाना कैसे निगलती रे!

पुरुषोत्तम : (आवेश से) तब भी बयो···

बयो : (कूड़ा निकालती निकालती रुककर) बीच में मत बोल अब। सिर्फ सुन। मीठी रोटी पर से तूने मुझे जैसे बोल सुनाए वैसे ही तू अब चुपचाप सुन। नामकरण का मौका देखकर इदूलकर की हवेली पर गई थी—सिर्फ मीठी रोटी के लिए नही। इदूलकर से एक अर्ज करने। मैंने उनसे कहा—आज पुरुषोत्तम का परिणाम निकलना है। लड़का सौ फी सदी अव्वल दर्जे मे पास होगा। आगे पढ़ने के लिए जर्मनी जाना चाहता है। आप तीन हजार रुपये कर्ज दे सकते हैं मुझे ?

पुरुषोत्तम : (विचलित होकर दौड़कर बयो की तरफ बढ़ते हुए) बयो···मुझसे गलती हुई।

बयो : (गुस्से से) चल हट···दूर हो मरे। अभी तो मुझे उनके घर के बर्तन मांजने और झूठन समेट कर लाने को कह रहा था, तब शर्म नही आई तुझे ? कौन देगा तुझे तीन हजार। कापी पेंसिल तक के लिए भी कभी जिसने दो कौड़ी नहीं दी वह तेरा बाप तुझे देगा ?

पुरुषोत्तम : (उसके पैर पकड़ते हुए) बयो सचमुच मैं···

बयो : (तपाक से) चल दूर हो चौंघट, नहीं तो झाड़ू से पीट दूगी।

पुरुषोत्तम : (प्यार से बयो से लिपटकर) पीट पीट,···मुझे झाड़ू से पीट···

बयो : (झाड़ू दूर फेंककर उसे पास लेती हुई) आ हा रे! बोला भी तो क्या बोला मेरा लाल, कहता है झाड़ू से पीट। झाड़

से पीट। झाड़ू से पीटने को…अपने बच्चे अभी मुझे इतने फालतू नहीं हुए। तुम्हारे बाप को हुए होंगे। लेकिन पुरुषा, मरे एक मेरी बात याद रखना, इन्सान को अपनी बत्तीसी कुछ सोच समझकर खोलनी चाहिए। अरे औरत जात तो पुरुषों की मारपीट भी खुशी से सह लेती हैं। एक बार जापे का दर्द सह लिया तो दूसरे सब दर्द ठंडे पड़ जाते हैं। पर नहीं रे, एक टेढ़ा बोल भी दिल पर कितनी चोट कर जाता है। **(पुरुषोत्तम की आंखों मे आंसू देखकर)** अरे रे यह कैसा सकट? मरे इतना सा बोली तो तू आखों मे पानी भर लाया? जरा अपने बाप से सीख, आसमान टूट पड़े, जमीन फट जाए तो भी कभी आख मे पानी देखा है उनके? कैसे पहाड की तरह अचल खड़े रहते हैं। **(पल्लू से उसकी आंखें पोछती हुई)** अब बता, जर्मनी जाना है ना तुझे?

पुरुषोत्तम : **(खुद को संभालते हुए)** बयो मुझे जर्मनी जाना है लेकिन उसके लिए लाचार नहीं बनना और तुझे भी…

बयो : यह तू मुझे सिखा रहा है?

पुरुषोत्तम : वह बात नहीं बयो…जाने का मतलब है तीन हजार रुपये। नाना से मागने का कोई फायदा नहीं और इतनी बडी रकम कर्ज पर भी कौन देगा?

बयो : तीन हजार रुपयों की इतनी महत्ता मुझे मत बता। मैं कहूंगी तो अपना दुकानदार धोंडू तेली तक भी देने को तैयार हो जाएगा।

पुरुषोत्तम : उसके पास गिरवी क्या रखेगी।

बयो : कहेगा तो इनका बीमा गिरवी रख दूंगी। इसी साल तो इनके बीमे के रुपये मिलने वाले हैं।

[यह संवाद सुनता हुआ प्रवेश करता है तातोबा काशीकर, बयो का छोटा भाई। एक 'टिपिकल' देहाती। असल मे गाव का एक माना हुआ गुंडा। लेकिन प्रो० गोविंद भानू उर्फ नाना साहब ने

गांव के इस नमूने को पूना लाकर अपनी तरफ से काम पर लगा दिया। तब से इसका चेहरा-मोहरा तो बदल गया कुछ, बदला नही तो सिर्फ बोलचाल। तातोबा उत्साह से प्रवेश करके—]

तातोबा : छी :। छी : छी : तेरी भी हद है बयो, कुछ गिरवी रखकर कर्जा देने वाला साला धोंडू तेली चाहिए किसे ? बयो, एक बात है तेरा पति चाहे साक्षात् बृहस्पति हो लेकिन तेरी बुद्धि चूल्हे से आगे नही बढ़ी।

बयो : (तातोबा को देखकर पुरुषोत्तम से) यह एक और सयाना है···तेरा मामा। ऐन खाने का वक्त देखकर टपक पड़ता है और मुझे कहता है तेरी बुद्धि चूल्हे से आगे नही बढ़ी। क्यों रे तातोबा, उसी चूल्हे का खाना खाकर ही तो इतना हट्टा-कट्टा हुआ है ?

तातोबा : (हड़बड़ा कर) वो बात नही···बयो वो बात नही···

बयो : बिल्ली के पिल्ले की तरह ये तुझे पूना ले आए और जरा इंसान बनाया। नही तो अब तक पड़ा गाव में तंबाकू चबाता और गुडागर्दी करता !

तातोबा : बयो ! बये, तू भी कैसी है ? कहां की बात कहां ले जाती है ? यह तेरा लड़का सामने खड़ा है इसकी कोई···

बयो : (उबलकर) एक शब्द मत बोल मुए···बड़ा आया पुनर्विवाह मंडल का सेक्रेटरी,-पता है, पता है तेरी असलीयत। अरे, चार साफ माथो पर सिंदूर क्या लगवा दिया कि हो गया तू बड़ा कण्व ऋषि ?

तातोबा : (विनीत होकर) बयो···बये···

बयो : उस वक्त का तेरा एक एक किस्सा सुनाऊं तो तेरी बुद्धि···

तातोबा : (झुककर पैर छूता हुआ) तेरे पांव पड़ता हूं बयो, तू मुझे जूते लगा···बच्चा भूल कर बैठे तो···

बयो : (फफकारे से) अरे वा रे बच्चे ! नाती पोतो का वक्त आ गया और अभी भी बच्चा ही है ?

पुरुषोत्तम : बयो, मामा क्या कह रहा है वो तो सुन ले ?

तातोबा : (जल्दी से उठकर) देख बयो, बात का मजमून क्या था और गाव मे मेरा धधा क्या था, इसका उसमे क्या संबंध है ? अरे लडका विलायत जा सके इसके लिए कोई पैसों की तजवीज भी करनी है या नही ? उसी का उपाय तो बता रहा था।

बयो : वो सब पता है मुझे। तेरी बडबड का मतलब होता है, काम कम, ऊपर-नीचे की ज्यादा। असली मुद्दे पर आ।

तातोबा : आता हू। कल नाना साहब ने तीन हजार रुपया लाकर मुझे दिया है या नही ?

बयो : मरे यही तेरा उपाय है ? आश्रम के दानखाते के रुपये···

तातोबा : तू गलत समझी है, गलत, पैसे दानखाते के नही, तेरे हैं।

बयो : मेरे ? तातोबा तू होश मे तो है ?

तातोबा : नही नही। भाग गाजा वगैरह गाव मे ही शिवार्पित कर दिया था। अब सिर्फ चाय पीता हू। गोल्डन टी। हा तो, असल बात यह है बयो, वह तीन हजार रुपये नाना साहेब के बीमे की रकम है।

बयो : (विस्मय से) बीमे की रकम ? इन्होने ले ली ? शादी के समय पडिता रमाबाई ने इनको मेरे नाम से बीमा करवाने के लिए···

तातोबा : बस बस बस ! वही, वही तो है यह रकम !

बयो : उन्होने तो मुझसे कुछ भी नही कहा। मैं ही भोली हूं र।

तातोबा : हू···हू अभी से ज्यादा उत्साह मत दिखा, रकम चाहे तेरे ही हवाले कर दी गई है पर यह मत समझ कि वो तेरे बेटे के विलायत जाने के काम आएगी। नाना साहेब ने कुछ और ही सोच रखा है।

बयो : और क्या सोच रखा है उन्होने ?

तातोबा : तेरा हठ ही है तो बता देता हू बाबा ! लेकिन यह शिकायत मुझ पर न आए कि मैंने शरारत की है ! कल तुम मियां-

बीबी तो एक हो जाओगे और दोषी मुझे ही ठहराओगे।

बयो : (क्रोध से) तातोबा, अब सीधी तरह बताएगा कि—

तातोबा : बताता हूं। भीमा पाटिल से आश्रम की जमीन खरीदने की बातचीत चल रही है।

पुरुषोत्तम : हमारे पैसे से ?

बयो : आश्रम के लिए जमीन खरीदेंगे ?

तातोबा : ऐसा मैंने आबाजी भागवत को केशवराव से कहते हुए सुना, सच झूठ की तो भगवान जाने।

पुरुषोत्तम : (कंधे झटक कर) नाना से और क्या उम्मीद की जा सकती है ? मर्जी उनकी।

बयो : (गुस्से से) अभी तेरी मां जिंदा है रे, तुझे विलायत भेजकर ही शमशान जाएगी वह। आने दे आज उनको घर···

पुरुषोत्तम : खामख्वाह अपना दिमाग खराब मत कर बयो। अभी हमें पूरी बात तो पता नहीं, सिर्फ मामा बता रहा है इसलिए···

बयो : तू अब चुप रह पुरुषा, तेरा मामा एक नंबर का चुगलखोर है लेकिन उसकी बत्तीसी कभी झूठ के लिए नहीं खुलती।

तातोबा : लो, यह इनाम मिला है हमें। अब जीजा जी के सामने हमारी और भी बिन पानी के कर दो।

बयो : तातोबा, पीहर के आदमी की शान कैसे रखी जाती है, यह अगर मैं न समझाती तो तू अब तक गांव में ही रहता और···

तातोबा : पुरानी बात है वो···लेकिन बयो इस लफड़े में मेरा नाम लेगी तो मैं कानों पर हाथ रखकर अलग हो जाऊंगा, हां।

बयो : (तपाक से) गांव में उस पानसे की लड़की के वक्त जैसे किया था, वैसे ही ना ?

तातोबा : (ठंडा पड़ता हुआ) बयो···बयं···बहुत हो गया···

बयो : समझ गई ! अब चल, दो बाल्टी शरीर पे उंडेल ले और कुछ निगल भी ले। वैसे ब्राह्मण कहता है खुद को और दिन भर

गाव भर में बिना नहाये धूल फांकता फिरता है मनहूस···

[अंदर जाती है। पुरुषोत्तम वैसे ही विचारमग्न खड़ा है। तातोबा ज्यों का त्यों भावहीन। क्षणभर में तातोबा खुद को संभालकर पुरुषोत्तम के पास आकर कहता है।]

तातोबा : पुरुषोत्तम तू विलायत जाने की तो कह रहा है, पर वहां तेरे खाने-पीने का क्या होगा? मेरे कहने का मतलब है वहां मास-मछली तो···

पुरुषोत्तम : (तीखे स्वर से) मामा इसके बारे में तू मुझे पूछ रहा है? तू···?

तातोबा : शूऽऽ···पूछ नहीं रहा, सलाह दे रहा हूं। उधर का सब उधर इधर का इधर। चर्चा का विषय मत बनने देना कुछ भी। पुरुषा, असल में पूछ यह रहा था कि सारे प्राइजिज की कुल मिलाकर कितनी रकम हो जाएगी?

पुरुषोत्तम ऐसे हिसाब मैंने कभी किए नहीं और करूंगा भी नहीं।

तातोबा : करने चाहिए राजा, ऐसे कैसे चलेगा? अरे भानू के घराने के लोग हिसाब के सौ फी सदी पक्के होते हैं! तेरे पिता तो यजमान के घर खाना कर जब तक चवन्नी थाली में नहीं रखवा लेते, उठने का नाम नहीं लेते।

पुरुषोत्तम . वो परंपरा मुझे तोड देनी है मामा।

तातोबा : तोडना···तोडना लेकिन वक्त आने पर···जब तेरा वक्त आएगा तब तोडना। अभी तूने जीजा जी को 'ना' कर दी तो विलायत यात्रा अपने बूते पर करनी पड़ेगी तुझे। इसी-लिए तो पूछता हूं···तेरे सारे इनाम वगैरह मिलकर अंदा-जन कितनी रकम हो जाएगी? अब यह देख, एक गोल्ड मेडल को गलाकर गिरवी रखा जाए तो मेरे जाने कम से कम···

पुरुषोत्तम : (बाहर के दरवाजे से देखकर, एकदम मुड़कर) मामा, आबाजी भागवत और केशव आते दिखाई देते हैं।

तातोबा : (आगे आकर) आइए आइए, आबा जी पंत···यह क्या ? आप दोनों ही ? और नाना साहेब ?

केशव : (प्रवेश करते हुए) नरसो पंत से मिलने 'केसरी' के दफ्तर गए हैं आते ही होंगे।

आबाजी : (पीछे पीछे प्रवेश करता है) नरसो पंत के यहां से वे राव साहब के यहा जाने को कह रहे थे। अब जब आएंगे तभी आएंगे।

[आबाजी भागवत साठ के आसपास और केशव मोरेश्वर दातार पच्चीस के लगभग। काला लंबा कोट, लांगदार धोती, पूना की जूती, और सिर पर लाल पगड़ी, यह आबाजी का वेश। गलपट्टी-दार शर्ट, छोटा कोट, लांगदार धोती, सिर पर काली टोपी, केशव की वेशभूषा है।]

केशव : पुरुषोत्तम, पहले तार क्या आया यह बता ? ···फर्स्ट क्लास ?

[पुरुषोत्तम जेब से तार निकालकर देता है। तभी—]

तातोबा : फर्स्ट क्लास ही क्यों ? पहला नंबर, सभी इनाम, गोल्ड मेडल तक मिले है।

आबाजी : वा वा बहुत अच्छे ! बहुत, बहुत अच्छे। आज यह पहली अच्छी बात कान मे पड़ी है।

केशव : (तार देखकर वापस कर देता है। बहुत खुश होकर पुरुषोत्तम की पीठ थपथपाता है) वाह रे पट्ठे ! शाब्बास! पुरुषा, तूने तो मनचाहा सिक्सर मार दिया सचमुच !

आबाजी : आखिर प्रोफेसर गोविंदराव का लड़का है यह केशवराव। जरूरी है बाप से बेटा सवाया निकलेगा। चलो नानासाहेब की एक चिंता तो दूर हुई।

[पुरुषोत्तम आबाजी को झुककर नमस्कार करता है। आबाजी मुंह भरकर 'चिरंजीव रहो' ऐसा आशीर्वाद देते है।]

तातोबा : साला नम्र कितना है। यह सब बयो की शिक्षा है आबाजी। वैसे नाना साहेब भी फुर्सत में हो तो बच्चों को दो-एक सबक जरूर पढ़ा देते हैं। पर आबाजी, मुख्य रूप से इन बच्चों पर हम काशीकरों के कुलदेवता की कृपा है…अखंड कृपा।

[उसी समय कृष्णा पानी का भरा लोटा और गिलास लाकर रखती है। उसे देखकर—]

आबाजी : अब तो पेड़े चाहिए पेडे…

कृष्णा : (एकटक लजा कर) इश्श !

तातोबा : अरे वो पुरुषोत्तम के पास होने के पेड़े माग रहे है, तेरी शादी के लड्डू नही।

[कृष्णा लजाकर अंदर भाग जाती है। तभी बयो दरवाजे से झांककर—]

बयो : कौन ? केशव है क्या ? आबाजी दिखाई देते है। और हमारे ये ? किसी दान देने वाले की चौखट पर धरना देते होंगे, है ना ?

आबाजी : वह बात नही…आते ही होगे। आज जरा देर हो गई उन्हे। लेकिन भाभी, लड़के के पास होने के पेड़े मिलने चाहिए, इस वक्त तो।

बयो : वो अपने प्रोफेश्वर भानू से मांगिए। खाने के लिए रुकते हैं तो मीठी रोटी खिला सकती हू। बैठेंगे ? पान लगाऊं ?

आबाजी : मीठी रोटी ? (उदास होकर पेट पर हाथ फेरते हैं) नही…नही थोडा परहेज ही करना चाहिए।

तातोबा : आबाजी…मीठी रोटी…और वो भी बयो के हाथ की, जानते हैं महाराज ?…(मुंह में पानी भर आता है) व्वा !

बयो : मैं आबाजी को कह रही थी, तातोबा तुझे नहीं (अंदर जाते जाते) पुरुषा, बेटा जरा नारियल तोड देगा ? (पुरुषोत्तम जल्दी से अंदर जाता है।)

तात्तोबा : गीले नारियल की बरफी या फिर गुजिया बनी लगती हैं। पर केशवराव, अभी तक नाना साहेब क्यों नहीं आए? इधर सब लोग भूख में मरे जा रहे हैं और—

आबाजी : तुम हर चीज पर हाथ मार जाओ और नाना साहेब तुम्हारी जूठन संभालें...बताओ वक्त से कैसे आयेंगे वह?

तातोबा : आबाजी यह आपके बोल कुछ सरल नहीं लग रहे और मैं भी कहे देता हूं कि हम देहाती लोगों को उल्टी सीधी बात सुनने की आदत जरा कम ही है।

आबाजी : होगी कैसे? पूरे घर में आग लगी हो तो भी अपना बिछौना बिछाकर तुम चैन में खर्राटे मारते दिखाई दोगे।

तातोबा : आबाजी, मैं आपका मतलब नहीं समझा। केशवराव, आप विधवा शिक्षण मंदिर के लोग, हम पुनर्विवाह मंडल के कार्यकर्त्ताओं से इतना चिढ़ते क्यों हैं? अरे, जिन नानासाहेब ने अनाथ आश्रम और महिला शिक्षण मंदिर खड़ा किया है उन्होंने ही पुनर्विवाह मंडल की स्थापना भी की है।

आबाजी : हां। इसीलिए तो...

केशव : रुकिए आबाजी, मैं बताता हूं इन्हें। तातोबा पुरंदर इनामदार की बालविधवा लड़की आश्रम के शिक्षण मंदिर में पढ़ने आती थी यह तुम्हें मालूम है ना?

तातोबा : (सावधान होकर) हां हां। वो...वत्सलाबाई। जानता हूं। उसका कुछ दिन हुए आपटे वकील से पुनर्विवाह हो गया।

आबाजी : हुआ नहीं...करवा दिया गया। किसी के बीच में पड़े बिना पुनर्विवाह नहीं होते तात्तोबा।

तातोबा : वह तो जाहिर है। उसी के लिए तो आपने पुनर्विवाह मंडल बनाया है और सेक्रेटरी के रूप में मेरा चुनाव किया है।

आबाजी : ठीक है। पर आश्रम में पढ़ने के लिए आने वाली बालविधवाओं को पटा कर उनकी शादी करवा देने की इजाजत

तुम्हे किसने दी ?

तातोबा : (गुस्से से) आबाजी, मंडल पर आप बहुत बडा आरोप लगा रहे है। बीच मे पड कर विवाह करवाने को आप पटाना समझते हैं ? वैसा होता तो…

केशव . तातोबा, बेकार की वहम मत करो। पुरंदर इनामदार सिर्फ पढने के लिए अपनी लड़की आश्रम भेजने को तैयार हुए थे। इससे आगे कुछ नही होगा, यह वचन इनामदार को खुद नाना साहेब ने दिया था। आपको भी इसकी सूचना दी गई थी।

तातोबा : देखिए केशवराव, इनामदार को वचन दिया होगा नाना साहेब ने, मैंने नही। आखिर वत्सलाबाई का विवाह ही तो हुआ है ? और वह भी उसकी मर्जी से।

केशव · लेकिन पुरंदर इनामदार की—

तातोबा : वो बुड्ढा अपनी लडकी को विवाह की सम्मति देता क्या ? नाम मत लो। ऐसी शादियां खुशी-खुशी नही होती केशवराव। कडवी दवा की तरह नाक दबाकर उन्हे मजबूरन गले से नीचे उतारना पडता है।

[उसी समय बाहर से क्षीण स्वर मे कोई आवाज लगता है…'पुरुषोत्तम…' अदर आपस में चल रहे वाद-विवाद के कारण उधर किसी का ध्यान नही जाता।]

आबाजी : तातोबा, तुम तो वत्सलाबाई का ब्याह करके मुक्त हो गए पर अखबारो की टीका-टिप्पणी और वयोवृद्ध लोगों की गालियां जो नाना साहेब को सुननी पड़ती हैं उसका भी कुछ ख्याल है ? आज का अखबार पढ़ो एक बार।

तातोबा : (तुच्छता से) हुं, कौव्वे के श्राप से या राक्षस की गालियों से कौन डरता है। शैतान का बच्चा है ! वह पुरंदर इनामदार। बेटी की शादी की खबर सुनकर उसके नाक में मिर्ची लगेगी पहले से ही जानता था। अच्छा सबक मिला उसे।

नाक ही कट के रह गई। फिर कभी हमारे मडल पर व्यग्य कसने की जुर्रत नही करेगा।

केशव : बुड्ढे को पाठ पढाने के लिए ही आपने यह उद्योग किया था ? (बाहर से क्षीण स्वर में पुनः कोई आवाज लगाता है···'तातोबा, अरे केशवराव !' उस तरफ किसी का भी ध्यान नहीं जाता।)

तातोबा : जैसा आप समझें···पर सनातनियो के किले का एक मजबूत खंभा ही उखाड फेंका या नही ?

केशव : इसी वजह से तो आश्रम के नाम पर कितना बडा धब्बा लगा। रावसाहब जैसे विश्वस्तो ने भी अपना त्यागपत्र भेज दिया, पता है ?

तातोबा : इतना ही क्यो ? दो ही लडकियों के क्रिश्चयन हो जाने पर पडिता रमाबाई का शारदा-सदन वीरान हो गया। अब इस विवाह से जो चर्चा हो रही है उसे सुनकर कोई भी शरीफ आदमी अपनी बहू-बेटियों को आश्रम पढने भेजेगा ?

तातोबा : (गुस्से से) हट सालो ! फिर तो पुनर्विवाह मंडल बंद कर दो और सिर्फ अनाथ अबला आश्रम और शिक्षण मंदिर ही चलाओ। मैं तो कहता हू सनातनियो को खुश करने के लिए सभी विधवाओं को एक एक शिवलीलामृत की प्रति दे दीजिए और उन्हे दाई, दर्जिन या मास्टरनी बनाकर छोड दीजिए। (बाहर से क्षीण स्वर में पुनः एक बार आवाज आती है। ···'अरे कोई है···सावित्री') फिर तो आश्रम गंगा-भागीरथियों से ही भर जाएगा और सनातन धर्म का झंडा आश्रमपर चांद-सूरज तक लहराता रहेगा। आबाजी, मैं साफ साफ कहता हूं—

[अंदर से बयो जल्दी जल्दी आती है।]

बयो : इतना गला फाड़-फाडकर चिल्ला रहा है मरे, बाहर कोई आवाज लगा रहा है, उधर भी ध्यान देगा या नही ? (बाहर ड्योढ़ी में जाती है और···) अरे आप ? ऐसे

क्यो बैठे है ? क्या हुआ ? हाय राम क्या हुआ···तातोबा, केशवा, पुरुषा !

[सब लोग पुरुषोत्तम और कृष्णा सहित जल्दी से 'क्या हुआ क्या हुआ' कहते हुए बाहर की तरफ दौडते हैं । 'कुछ नही···कुछ खास नही··· जरा चक्कर आ गया था इसलिए बैठ गया··· अब ठीक है।··· अरे नही···सहारा देने की जरूरत नही···' इस सारे शोर मे धीमी गति से रुक-रुककर नाना साहेब अंदर आते है। केशव और पुरुषोत्तम बार-बार सहारा देना चाहते है। नाना साहेब संकोच से हाथ छुडवा लेते है। नाना साहेब···उम्र साठ साल, सिर पर रूमाल, रूमाल उतारने पर बरीक कटे हुए पके बाल, हल्के पीले रंग का लंबा कोट, सूती मफलर, और लागदार धोती। घनी मूछें, मुद्रा स्थित-प्रज्ञ, धीमा बोल-चाल। इस वक्त नाना साहेब का वेश कुछ अस्त-व्यस्त है। पुरुषोत्तम मफलर हाथ मे ले लेता है और नाना साहेब सिर पर बधा हुआ रूमाल निकालकर कृष्णा को देते है और नि:श्वास लेकर बैठते है। इतने मे वयो को उनके कान के पीछे रक्त दिखाई देता है। तभी—]

वयो : (जोर से चिल्लाकर) हे भगवान, यह क्या ? खून कैसे ? चोट लग गई क्या ? कृष्णे, रुक मैं तेल हल्दी लाती हूं। (वयो अंदर जाती है। पीछे-पीछे कृष्णा भी दौड़ती हुई अंदर जाती है। नाना साहेब चोट को हाथ से टोहने लगते हैं। पुरुषोत्तम पानी का गिलास आगे करता है···)

पुरुषोत्तम : नाना थोड़ा सा पानी पी लीजिए, जी अच्छा हो जाएगा।

नाना : ऊँ—हां हां, पानी लेता हूं। (दो घूंट पीकर गिलास वापस देते हैं)

आवाजी : चक्कर खाकर कहीं गिर विर गए थे नाना साहेब ?

नाना : ऊं ? हां…हां…वैसे कुछ खास नही लगी। ऐसे ही… थोड़ी सी…

केशव : तागा करके आ जाते…

सातोबा : जंगल मे कही चक्कर खाकर गिर पड़ते तो हमे तो पता भी न चलता।

नाना : नहीं…वैसा कुछ नही…पर—(अस्वस्थता से कुछ ढूंढ़ते हुए) चप्पल रास्ते में ही गिर गई लगती है…

पुरुषोत्तम : गिर जाने दीजिए, आप ठीकठाक आ गए यही बहुत है।

केशव : अंदर बिस्तर लगा दू ? थोडा आराम करने से…

नाना : नही नही ऐसा कुछ नहीं। मैं बिल्कुल ठीक हूं…थोडा… यू ही…(जेब टटोलते हुए) चश्मा भी गायब…हरे राम !

[इतने मे वयो हल्दी का लेप और कृष्णा औषधि बना कर लाती है]

वयो : (चोट पर लेप लगाती हुई) हजार बार कहा है, धूप के वक्त छतरी लेकर जाया करो। थोड़ा कुछ खाकर जाया करो। पर नही…अपनी करेंगे। कब सुबह हो और कब घर से निकलूं…चार आने के चंदे के लिए भी खुद को ही थकाएगे। हूं, वो दवा ले लीजिए।

नाना : (संकोच से) नही…कुछ नही हुआ मुझे…मैं ठीक हूं।

वयो : आपको कुछ नही हुआ…होता तो मुझे ही…लोहे का शरीर है ना आपका ? लो, उतार लो गले से चुपचाप… (उंगली से दवा उनके मुंह में डालती है। नाना साहेब जबरदस्ती निगल जाते हैं। तभी—) अब थोड़ी चाय भेजती हूं, पी लीजिए। चैन से दो ग्रास खा भी लीजिए… आवाजी कही फरार नही होते, …आश्रम भी कही भागा नही जाता। पुरुषा, उनका कोट उतरवा ले। कृष्णा, यह मेरे मुंह की तरफ क्या देख रही है? अंदर भाजी छौंकने जा ना…तेरी सास आकर तो तेल नही दे जाएगी ? (वयो

जाती है। कृष्णा पहले ही दौड़ चुकी होती है)

पुरुषोत्तम : नाना कोट उतार रहे हैं ना ?

नाना . ऊं ? हां···(बटन खोलते हैं। कष्ट से कोट उतारते हैं। पुरुषोत्तम मदद करता है। तभी सबके ध्यान में आता है कि कोट गर्दन से फटा हुआ है—)

आबाजी : नाना साहेब कोट इतना कैसे फट गया ?

तातोबा . और वह भी गर्दन के पास से···?

नाना : (जल्दी से कोट की तह लगाते हुए) ऊ···! होगा···होगा ···पुरुषोत्तम मेरे कपड़ो की पेटी में रख दे···अपनी मां को मत दिखाना···कम से कम अभी तो इस पर उसका लेक्चर नही चाहिए। (पुरुषोत्तम कोट लेकर अंदर जाता है) हू ! तो आबाजी जमीन का क्या हुआ ? भीमा पाटिल से मिले आप ?

आबाजी : जमीन क्या हुआ वो बाद में बताऊंगा। कसम है आपको नाना साहेब, पहले सच-सच बताइए कि हुआ क्या ?

तातोबा · जो हुआ वह तो साफ ही है। मारपीट किए बिना कोट गर्दन से कैसे फटता ? नाना साहेब जरूर आपको किसी ने मारा है—

नाना : (धीरे लेकिन आदेश के स्वर में) धीरे धीरे ! बेकार राई का पर्वत मत बना। तू इस वक्त चुप रहने का क्या लेगा ?

तातोबा : (चिढ़कर) चुप ही हूं। मुह को ताला लगा लेता हूं। पर तब भी कहे देता हूं आबाजी, यह काम उस बुड्ढे पुरंदर इनामदार का—

नाना : फिर वही !

तातोबा : बुड्ढे की हड्डिया नरम किए बिना अब नही मानूंगा मैं !

नाना : तातोबा—

तातोबा : चुप ही तो हूं। रुपये मे से पौन रुपया भी नही बोला।

नाना : (शांत स्वर में) कोई खास चोट नही आई मुझे। वैसे भी

जब भूल हम से हुई है तो प्रायश्चित भी तो हमें ही करना पड़ेगा।

तातोबा : (आंखों में पानी आता है) नही नाना साहेब—

नाना : (आदेश के स्वर में) मैं कहता हूं भूल हम से हुई है। इस पर भी कुछ बोलना है तुझे ?

तातोबा : (आंसू गिरते हैं, गर्दन हिलाकर 'ना' कहता है।)

[क्षणभर चुभन भरी शांति।]

नाना : (सौम्यता से) तातोबा, समाज को न भाने वाले सुधार अगर जल्दी में कर दिए गए तो लोग उसके बदले में जो देंगे उसे भी चुपचाप स्वीकार करना पडेगा। मुझे शिकायत नहीं है···तेरे लिए भी शिकायत का कोई कारण नहीं। जा। (तातोबा गर्दन नीची करके अंदर जाने लगता है तभी—) और एक बात ध्यान में रख तातोबा, यह घटना सिर्फ हम तीनों को पता है। तीनों में ही रहनी चाहिए। (तातोबा गर्दन से ही 'हां' कहकर अंदर चला जाता है। उधर देखते हुए—) मुश्किल है। पर आज का दिन तो यह बड़बड़ नहीं करेगा। आबाजी, केशवराव, इससे इतना ही सबक मिलता है हमें कि एक ही वक्त दो दो सुधार समाज को नही पचते। हमें चाहिए कुछ देर के लिए सिर्फ अनाथ अबला आश्रम और महिला शिक्षण मंदिर को चलाते रहें और इस पुर्नाववाह मंडल को बंद कर दें।

आबाजी : बिलकुल ठीक कहा आपने नाना साहेब। तातोबा को मैं यही कह रहा था कि जो कुछ हुआ वह बहुत ही गलत था। पर उसका स्वभाव ही—

नाना : नही आबाजी। तातोबा ने कुछ गलत किया ऐसा मैं नही कह रहा। उसकी जगह मैं होता तो वही करता। पर मैं उसकी जगह नही हूं और अभी कुछ देर मुझे अपनी जगह छोड़नी भी नही है।

केशव : रावसाहेब का क्या हुआ ?

[पुरुषोत्तम थाली में चाय के दो गिलास रखकर लाता है। नाना साहेब और आबाजी अपनी धोतियों के कोने से गर्म गिलास पकड़ लेते है।]

नाना : रावसाहेब ने अपना त्यागपत्र वापस लेना कबूल कर लिया है। नरसों पत भी हमें अपना समर्थन देते ही रहेंगे। लेकिन उसके लिए हमें दो शर्तें पूरी करनी पड़ेंगी। **(चाय का घूंट लेते हुए)** पुरुषोत्तम, बारह बज चुके हैं, तार आया नहीं, इसका मतलब—

केशव : नही नही नाना साहेब, तार कब का आ चुका। पुरुषा—

[पुरुषोत्तम तार निकालकर नाना साहेब के हाथ में देता है। चाय का घूट लेते हुए तार नजर से जरा दूर रखकर देखते हुए।]

नाना : हू...पुरुषोत्तम, तार आ गया, तू अव्वल दर्जे मे अव्वल नबर से पास हुआ है। सभी प्राइजिज वगैरह लिए हैं। बहुत अच्छा हुआ। तुझे बीसवा साल लगने तक तेरी शिक्षा की जिम्मेदारी मेरी थी, अब आगे अपना तू खुद देख। **(तार वापस देते हैं। पुरुषोत्तम वापस जाने लगता है।)** तो दो शर्तें हमे पूरी करनी पड़ेंगी—

आबाजी : वैसे नही चलेगा नाना साहेब, आज तो सबका मुह मीठा कराना ही पड़ेगा।

केशव : मुझे लगता है पेडे लाए जाएं। **(पुरुषोत्तम दरवाजे के पास रुक जाता है)।**

आबाजी : खाली पेड़ो से काम नही चलेगा, अच्छी-खासी दावत मिलनी चाहिए।

नाना : **(क्षण भर विचार करके)** हू, आपकी माग बिलकुल ठीक है लेकिन उससे भी ज्यादा उचित यह लगता है कि दावत मे पैसे उडाने की बजाय वही पैसे अबला आश्रम के मैंयाडूज फड मे दे दिए जाए। **(केशवराव और आबाजी की मुद्रा देखने लायक। पुरुषोत्तम अंदर चला जाता है)** केशवराव

आज की तारीख में मैंयादूज फंड के लिए पांच रुपये की रसीद काट देना। और शाम को दफ्तर बंद होने से पहले घर से रुपये मांग लेना। और हां याद आया, जमीन की खरीद का क्या हुआ? भीमा पाटिल को मिले थे क्या?

केशव : मिला था। वह तीन हजार से एक पैसा भी कम करने को तैयार नहीं।

आबाजी : तीन हजार मुझे ज्यादा लगते हैं नाना साहेब। देखा जाए तो जमीन तो पथरीली है ही और वह भी शहर से इतनी दूर—

केशव : आबाजी गरज हमें है—भीमा पाटिल को नहीं।

आबाजी : इसलिए वह सोने के भाव लगाएगा? मुगलों की हुकूमत नहीं है, अंग्रेजी सरकार का राज्य है यह। ऐसी-वैसी कोई बात हुई तो हम गवर्नर साहब को अर्जी देंगे और—

नाना : आबाजी, एकदम इतनी दूर की सोचना भी ठीक नहीं। नाले का पानी जरा घुमाकर ही ले जाना चाहिए। (आवाज लगाते हुए) कृष्णाबाई···(कृष्णाबाई आती है) यह गिलास ले जा और आश्रम के पैसों की एक छोटी सी गठरी मैंने तेरी मा को दी थी वह ले आ ताकि इन लोगों को देर न हो। (कृष्णाबाई अंदर जाती है) आप जो कह रहे हैं वह सच है आबाजी, लेकिन अबला आश्रम को जमीन तो यही चाहिए। लोकमान्य का भी यही सुझाव है कि यह जमीन ले लो। दूसरा आज तो हाथ में पैसे है···अब तो थोड़े-ज्यादा पैसे भी देने पड़ें—

आबाजी : मतलब आप तीन हजार देंगे?

नाना : सुनिए तो सही जरा, आप सौदा ठहराइए और मुझे संदेशा भिजवा दीजिए। केशवराव पाटिल को जब तक रकम गिन कर देगा मैं भी वहां पहुंच जाऊंगा। भीमा पाटिल के नाम अगर पांच सौ रुपये की मैंयादूज फंड की रसीद काट दी, तब तो आपको कोई शिकायत नहीं होगी ना? (क्यों

आती है) धरना देकर बैठ जाऊंगा तो अपने आप दे देगा। वह काम आप मुझ पर छोड़िए। (**बयो के सामने हाथ करते हुए**) दीजिए।

बयो : क्या दीजिए ?

नाना : पैसों की गुत्थी जो कल तुम्हें रखने को दी थी।

बयो : नहीं।

नाना : नहीं मतलब ? पैसे आश्रम के हैं और—

बयो : नहीं, अब मैं पहले की तरह फंसने वाली नहीं, पैसे बीमे के हैं।

नाना : (**चौंक जाते हैं। चेहरा फीका पड़ जाता है···क्षण भर आंखें बंद करके विचार करते हैं, फिर आंखें खोलते हैं**) तातोबा ने तुम्हें बताया है शायद।

बयो : तातोबा क्यों बताएगा ? अभी मेरी याददाश्त कायम है। पैसे बीमे के हैं।

नाना : पर मैं आश्रम को देना कबूल कर चुका हूं।

बयो : मेरे पैसे आश्रम को देने का आपको कोई अधिकार नहीं।

नाना : तू कहना क्या चाहती है ?

बयो : सब कुछ जानते हुए भी मुझसे पूछते हैं ? हमारी शादी के वक्त पंडिता रमाबाई को साक्षी करके आपने तीन हजार रुपये का बीमा मेरे नाम किया था। शादी के लिए अपनी स्वीकृति देने से पहले रमाबाई ने ऐसी शर्त रखी थी।

नाना : हां। लेकिन मेरे साथ कुछ बुरा-भला हो जाए तभी इस रुपये पर मैं तेरा हक मानता हूं, पर अभी मैं तो अच्छा-भला हूं और—

बयो : कोई अमृत पीकर तो अवतरित नहीं हुए हो !

नाना : उस पर भी विचार किया है। कोई विपरीत घटना घट गई तो चिंता करने की जरूरत नहीं। यह विधवाश्रम है ही।

बयो : हाय राम, मुझे आश्रम को सौंपते हो ? आश्रम क्या संभालेगा मुझे ? जहां पहले से ही कड़की हो वहां मरण

नहीं होगा तो और क्या ?

नाना : सावित्री, बीमे की रकम मे आश्रम को देने का वचन दे चुका हूं।

बयो : लेकिन मुझ गरीब को लूटने का भी आपको कोई हक नही।

नाना : अब अगर मैं अपने शब्द से फिर गया तो अपने सभी विश्वस्तों मे मेरी थू थू होगी।

बयो : कौन मरा तुम्हारी थू थू करता है, वो मैं देख लेती हूं !

आबाजी : रुको भाभी, मैं बात को थोड़ा खुलासा करता हूं।

नाना : (उनका कोट खींचकर) आबाजी—

आबाजी : नही नाना साहेब, बात खुलासा करनी ही चाहिए। बेकार विश्वस्त लोगों की बदनामी न करो भाभी, बीमे की रकम आश्रम के लिए देने का वचन देते हुए नाना साहेब ने ही कहा था कि अगर बाद में कभी मेरा विचार बदल जाए तो आप सब मुझ पर थू थू करिए। इसलिए लोकलाज की खातिर भी अब रकम तो देनी ही पड़ेगी।

बयो : देखिए, देखिए कितने उस्ताद है, देख लिया ? मेरी जबान बंद करने की कैसी युक्ति बनाई, देख लिया ना ?

नाना : सावित्री, बेकार इतना हठ अच्छा नही। इतनी बड़ी रकम का तू करेगी भी क्या ?

बयो : इस रकम का मुझे करना क्या है ? मैं क्या करूंगी, हां ! (व्याकुलता से) यह सवाल आप मुझसे पूछ रहे है ?

नाना : गुस्सा मत करो। मैंने यू ही पूछ लिया। मैं क्या जानता नहीं ? गहनों-वहनों की तुझे हवस नही, रेशमी कपड़ो, खाने-पीने का तुझे शौक नही। मैं जानता नही क्या तेरा स्वभाव—

बयो : (आंखों में पानी भर आता है, रुंधे हुए स्वर में) हमारे दो बच्चे भी है, इसका आपको जरा भी एहसास है क्या ? (आंखो से पानी बहने लगता है) होगा कैसे ? बच्चों ने जन्म लिया है सिर्फ मेरे पेट से। आपके पेट से तो सिर्फ

अनाथ अबला आश्रम ने जन्म लिया है! मेरे बच्चों पर आपको कैसे दया आए ?

[*साड़ी के पल्लू से आखें पोंछती हुई रोती है। आबाजी अस्वस्थ होकर उठने लगते है। नाना साहेब उनका कोट खींचकर उन्हे बिठाते हैं। बयो का मूक रुदन जब तक चलता रहता है तब तक नाना साहेब कही और देखते हुए अपने घुटनों पर उंगलियों की ताल देते रहते हैं। बयो आंखें पोंछ-कर ऊपर देखती है तभी नाना साहेब कुछ सभल-कर—*]

नाना : माविली, बच्चों को लेकर तेरी यह शिकायत ठीक नही है। रीति अनुसार मैंने बच्चों का सब कुछ कर दिया है।

बयो : (गुस्से में) क्या ? फिर···फिर एक बार कहिए ? बच्चों का आपने सब कुछ कर दिया ? रीति अनुसार ?

नाना . हां, उनकी पढाई-वढाई—

बयो : पढाई ? पढाई आपने करवाई ? क्या, क्या किया, एक बार साफ साफ बता डालिए ? पहली क्लास से लेकर कालेज तक तो बच्चे मुफ्त में पढे। आपको तो फीस तक का कभी एक पैसा नही देना पड़ा।

नाना : मै कालेज मे पढ़ाता था इसीलिए तो···

बयो : बच्चों की फीस नही देनी पड़ी यही ना ? तो आपने अपने पल्ले मे क्या दिया ? मिठाई खिलौनों की बात तो दूर, कभी पेंसिल, कापी या किताब तक नही लेकर दी उन्हें। उनके कपडे फटे हो तो कभी गज भर कपडा तक लाकर नही दिया। बीमार हों तो कभी उनके दवा-दारू का ख्याल किया आपने ? अनाज, पानी, सब्जी-भाजी गांव से इतनी दूर, कौन लाकर रखता है, कभी पूछा आपने ? घर चलाने के लिए पैसा पूरा पड़ता है या नही इसका कभी एक बार भी ध्यान आया आपको ? बेशर्म होकर कभी मैं ही पीछे पड

गई तो कह देते हैं 'जो है सो है, इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं कर सकता।' रीति अनुसार क्या किया आपने, बताइए तो सही जरा ? मैं विधवा थी मुझ से आपने शादी की, बस इतना ही। घर संसार में रीति अनुसार आपने क्या किया ?

[यह सब कुछ असह्य होने पर नाना साहेब गुस्से से दीवार की ओर मुह करके बैठ जाते हैं। और आखें मींच कर घुटनो पर उंगलियों से ताल देते हुए कुछ गुनगुनाते रहते है। यह सब देखकर आबाजी जाने के लिए खड़े हो जाते हैं, तभी बयो गुस्से से कहती है—]

बयो : चल क्यों पड़े आबाजी ? आश्रम की बात हो रही हो तो घंटो बड़े प्यार से आप बातें करते बैठते है। आज जरा मेरी भी तो सुनिए। बैठिए। मैंने सच कहा नही कि ये इसी तरह दीवार की तरफ मुंह करके बैठ जाएंगे, पर मैं किसी बात की परवाह नही करने वाली।

[आबाजी बैठ जाते है]

आबाजी : (धैर्य से) नही, यह आपका पारिवारिक मामला है—

बयो : (गुस्से से) हमारे पारिवारिक जीवन में व्यक्तिगत रहा ही क्या है ? अनाथ अबलाश्रम इन्होंने चाहे अभी शुरू किया हो लेकिन हमारे घर तो वो हमारी शादी के साथ ही खुल गया था।

नाना : (गुस्से से गर्दन घुमाकर) मनहूस, अब कितना बोलेगी ?

बयो : कितना बोलूंगी ? अरे ! बोलने लगी तो महाभारत हो जाएगा। हम यहां इस जंगल में रहते है, एक तरह से अच्छा ही है। अब तो दिन भी पहले की तरह नही रहे, पर शादी जब हुई थी तब कस्बे मे दीक्षित की हवेली में रहते थे हम। पहाट होते ही ये गायब हो जाते और सिर्फ दोपहर को खाने के लिए प्रकट होते। खाना खत्म होते ही जो कदम बाहर पड़ता उसकी वापसी रात को कभी दस तो कभी बारह बजे

होती। घर मे मैं अकेली। साथ मे चार साल का जग्गू। जग्गू यानि मेरी सौत का बेटा। विचार कीजिए आबाजी, एक तो मेरा पुर्नविवाह, उस पर गली की औरतो ने मुझे किस तरह से तग किया होगा ? मै पूरा दिन रोती रहती। मुझ पर दया आती तो उस चार साल के बच्चे को। पर ये कभी पूछते तक नही थे। कुछ कहती तो चिढकर कहते''''ये सब सहन करना पडेगा।' सहन तो कर ही रही थी पर क्या-क्या सहन करती ? आबाजी आप ही बताइए, घर मे मुसीबत की मारी मैं, नवा महीना, पति होने के नाते इन्हे ऐसे वक्त पर मेरी कुछ व्यवस्था करनी चाहिए थी या नही ? ऐसे वक्त पर तीन साल के पुरुषोत्तम के पास छोड दिया मुझे··· जग्गू सात साल का था तब। चार मील कीचड़ मे चलती हुई सरकारी हस्पताल खुद ही पहुंच गई, मैं बच्चा पैदा करने। रीति की बात मुझे बताने चले है···

नाना · लेकिन हो तो गया ना सब कुछ ठीक ठाक ?

बयो : वो भी बताती हूं। कृष्णा के पीछे का बच्चा पैदा होते ही मर गया। आजू बाजू के चार लोगो को बुलाकर सस्कार कराना पड़ा। कहलाकर भेजा तब भी शाम तक नही लौटे थे, पूछिए।

नाना : (गुस्से में खुद को ही थप्पड़ लगाते हैं) भूल हुई बाबा ! अब तो मुह बंद कर।

बयो : (आंखों में आसू भरकर) ऊपर से यह इनाम···पत्नी की यह कदर। बोलेंगे नही···आठ आठ दिन नाक रगड़ो माफी मागो तो भी नही पसीजेंगे। (आंखो को साड़ी का पल्लू लगाते हुए) आबाजी मैं अपने लिए तो पैसे नही माग रही ? लड़का जर्मनी जाना चाहता है, उसे मा बाप मदद नही करेंगे तो और कौन करेगा ?

नाना : मैं इतना अमीर नही हूं। पुरुषोत्तम को जर्मनी भेजने की जिम्मेदारी मेरी नही है। मेरे ख्याल मे तो वह नही जाएगा

तो भी कुछ अड़ेगा नही। फिर भी यह समस्या उसकी है। पैसे आश्रम के है, आश्रम पर ही खर्च होने चाहिए। पैसे लाकर दे, सावित्री।

बयो : नही, पैसे मेरे···

नाना : सावित्री पैसे लाकर दे।

बयो : ज्यादा ही तकलीफ है तो ये पैसे मुझे कर्ज के रूप मे दे दीजिए, लड़का पढ लिखकर ब्याज समेत चुका देगा।

नाना : सावित्री पैसे···।

बयो : (आंखें भर आती हैं) इसी व्यवहार से तग आकर जग्गू घर मे कटकर रह गया। पढाई छोड़कर अफ्रीका चला गया। अब पुरुषोत्तम को भी आप इसी तरह अलग करके रहेगे क्या ?

नाना : सावित्री पैसे !

[इतने मे अदर से पुरुषोत्तम गुस्से में आता है।]

पुरुषोत्तम : बयो तुझे मेरी सौगंध है, वो पैसे नाना साहेब को दे दे। मुझे जर्मनी नही जाना है। जाना भी होगा तो मैं कर्ज ले लूगा, ···भीख माग लूगा···पर यह पैसा मुझे नही चाहिए।

बयो : (गुस्से से) चुप बैठ रे।···हमारे बीच मे बोलेगा तो झाडू से पीट दूगी, बड़ा आया अव्वल दर्जे वाला। (पुरुषोत्तम गुस्से से बाहर ड्योढ़ी में जाकर पीठ किए खड़ा रहता है) देखिए आप कितना भी गरजें, मैं पैसे देने वाली नही हू।

नाना . ठीक है, केशवराव अभी मंडल की मीटिंग बुलाइए। सभी विश्वस्तों से कह दीजिए कि प्रोफेसर गोविंद भानू ने पैसे के मोह मे अपना वचन वापिस ले लिया। प्रस्ताव पास कीजिए और मुझ पर थू थू कीजिए। 'केसरी', 'ज्ञान प्रकाश' वगैरह सभी समाचार पत्रों मे यह खबर मुख्य पृष्ठ पर छपने के लिए भेज दीजिए। चलिए उठिए आबाजी। अब यहां एक क्षण भी नही रुकिए।

[आबाजी उठते हैं। केशव राव भी जाने लगता

है तभी…]

बयो : (तरल आंखों से) खबरदार, केशव पीछे लौट। उन्होंने पढ़ाया है तुझे तो क्या हुआ इस घर में तेरी देखभाल तो मैंने ही की है। इतना कृतघ्न मत बन। **(केशव रुकता है)** आबाजी जब मैं बोल रही थी तभी मुझे लगा था, मेरे सारे उपाय हार जाएंगे। आप लोग यही रामबाण मुझ पर छोड़ेंगे। **(जल्दी जल्दी अंदर जाती है। पैसों की गुत्थी लाकर नाना साहेब की तरफ फेंकती हुई)** लीजिए ये पैसे। बीवी बच्चों को लूटकर आश्रम के लिए इमारत खड़ी कर लीजिए। बयो ने आपसे पैसों की आशा कभी की ही नही थी। लेकिन इतना याद रखिए आपने चाहे पीठ ही क्यो न दिखा दी हो पर मेरे बच्चे तब भी नंगे नही हो जाएगें। पुरुषोत्तम विलायत जाएगा, जरूर जाएगा।

[रोती हुई व्याकुल सी बयो अंदर चली जाती है। नाना साहेब धीरे से पैसों की गुत्थी उठाकर केशव के हाथ में दे देते हैं…]

नाना : चलिए, अब और देर न कीजिए। आज का व्यवहार आज ही पूरा कर लिया जाए। आप चलिए, मैं भी आता हूं। **(केशव और आबाजी जाते हैं। पुरुषोत्तम ड्योढ़ी में ही पीठ करके खड़ा है। नाना मन ही मन कुछ सोचते हुए—)** कृष्णा…बेटी कृष्णा… **(कृष्णाबाई दरवाजे तक आती है)** अंदर से मेरा रूमाल, कोट और मफलर ले आ।

कृष्णा : **(घबराकर)** फिर बाहर जा रहे हैं ? खाना तैयार है नाना।

नाना : **(विचारमग्न)** ऊं…? हां, तुम सब खाना खा लो। मैं और केशव बाद में खाएंगे… **(क्षण भर में ही कृष्णा नाना साहेब का रूमाल, मफलर और कोट लेकर आती है। तभी—)**

कृष्णा : कोट गर्दन से फटा हुआ है नाना…

नाना : फटा रहने दे **(कोट डालते हैं)** तभी फुर्सत मे पैबंद लगवाना

पड़ेगा इसे। सुन जरा तातोबा को बाहर भेज दे। और—(कोट के बटन लगाते हैं) एक बटन भी टूटा हुआ है। रहने दे—और देख बेटी, आज तेरी मां का जी जरा खराब है। उसे खाना खिला देना। 'ना ना' कहे तब भी। जबरदस्ती खिला देना।

[कृष्णा भरी हुई आंखो से अंदर चली जाती है। नानासाहेब बिल्कुल शांत। सिर पर रूमाल बांधने लगते है। तभी बाहर ड्योडी मे पुरुषोत्तम—'जगूदादा तुम ? कब आए ?' जगन्नाथ गुंडो गोविंद का बड़ा बेटा है। नख से शिख तक साहबी वेश मे। प्रेम से 'पुरुषा' कहकर ड्योडी में खडे पुरुषोत्तम को गले मिलता है। यह भरत मिलाप नाना साहेब गर्दन घुमाकर बडे निरपेक्ष भाव से देखते रहते हैं और पुन. उसी शात मुद्रा मे रूमाल बाधने लगते हैं। कुछ देर पुरुषोत्तम और जगन्नाथ आपस मे बुदबुदाते दिखाए जाते हैं फिर, अंदर जाते हैं। जगन्नाथ पांव के जूते मौजे उतारने के लिए दरवाजे मे ही रुकता है। तभी—]

पुरुषोत्तम : नाना जगूदादा आए हैं।

नाना : (जरा खांस कर) हूं ! (इतने में जगन्नाथ अंदर आता है और झुककर नाना को नमस्कार करता है। तभी—) जगन्नाथ आया है ?…ठीक है।

[कुछ देर शांति। रूमाल बाधकर नाना साहेब अपना मफलर लेने लगते हैं]।

पुरुषोत्तम : बाहर कहां जा रहे हैं नाना ?

नाना : ऊं…हां…

पुरुषोत्तम : (क्षणभर रुककर) जाना जरूरी है ?

नाना : ऊं…हां।

जगन्नाथ : दोपहर की गाड़ी से मैं वापस जा रहा हूं नाना।

नाना · दोपहर को वापस जा रहा है ? ठीक है।

पुरुषोत्तम . (भीतर ही भीतर गुस्से से जलकर) चलिए जग्गू दादा, अपने सभी लोग तो अंदर है।

[पुरुषोत्तम जगन्नाथ को भीतर लेकर जाता है। नाना साहेब पर कोई असर नही। अपनी जेबें टटोलते हुए वह बुदबुदाते है···ऐनक नही'··· फिर दरवाजे के पास जाकर अपनी चप्पल खोजने लगते है 'चप्पल भी नही···ठीक है।' इतने में तातोबा अदर से स्नान करके जरा तरोताजा हुआ आता है। नाना उसे देखकर अनदेखा करते हुए अपने मफलर की सिलवटें साफ करते रहते है—]

नाना : तातोबा, सब सोचने के बाद यह फैसला किया गया है कि अभी कुछ वर्ष अनाथ अबला आश्रम और पुनर्विवाह संस्था का सम्बन्ध तोड़ दिया जाए। मतलब पुनर्विवाह मंडल को आश्रम के आहाते से दूर, गांव मे ले जाया जाए। कस्बे मे दीक्षित के मकान में जो हमारी जगह है उसमें एक तरफ दफ्तर बनाया जा सकता है और दूसरी तरफ तेरे रहने का प्रबन्ध···

तातोबा · (घबराकर) मतलब···मतलब···मैं···मैं इस घर में अब रह भी नही सकता।

नाना : (उसकी तरफ न देखकर, जरा ठंडेपन से) नही। इस घर से तेरा संपर्क तक नही रहना चाहिए। लोगों के मन में जरा सी आशंका को भी गुंजाइश नही मिलनी चाहिए।

तातोबा · तब तो पुनर्विवाह मंडल का काम मैं छोड़ता हू नाना साहेब।

नाना : नहीं। ऐसे करने से काम नही चलेगा। पुनर्विवाह मंडल का काम तुझे ही देखना होगा। यह काम इतनी ईमानदारी से करने वाला इन्सान दूसरा कोई और मेरे पास नही है।

तातोबा : (कातर स्वर में) सिर्फ इसी बात की इतनी बडी सजा ?

नाना : यह सजा नही तातोबा, हालात को देखते हुए ऐसा जरूरी है।

तातोबा : यह मुझ से नही होगा नाना साहेब । आपको, बयो को और बच्चों को छोड कर एक दिन भी दूर रहना—

नाना : शुरू शुरू मे मुश्किल लगेगा, बाद में आदत से सब ठीक हो जाएगा।

तातोबा : इससे तो अच्छा है नाना साहेब मैं—

नाना : (रोब से लेकिन धीमे स्वर में) तातोबा, काफी विचार करने के बाद यही तै किया गया है। (पहली बार उसकी तरफ देखते हुए) इस पर भी कुछ कहना है तुझे ? ··· (तातोबा सजल आंखो मे गर्दन हिलाकर 'नहीं' कहता है।) तब यही फैसला है। इसके इलावा यह फैसला भी किया गया है कि आज से साविती आश्रम की इमारत मे पैर नही रखेगी और न ही आश्रम की औरतो से बात करेगी। आश्रम की औरतों को भी अपने घर आने के लिए मैंने मना कर दिया है।

तातोबा : (चकित होकर) यो किसलिए ?

नाना : साविती पुनर्विवाहित है। आश्रम की बाल विधवाओं के सामने ऐसा आदर्श रखना ठीक नही।

तातोबा : (गुस्से से) लेकिन नाना साहेब इसी बयो ने दो साल पहले आश्रम की लडकियों को अपने घर में रखा था। इसी ने घर घर जाकर मुट्ठी मुट्ठी अन्न इकट्ठा करके साल भर इन लडकियों को खाना खिलाया था। आज उसी बयो को आप—

नाना : (ठंडे स्वर में) मैं जानता हूं, पर आश्रम की वह जरूरत अब खत्म हो चुकी है।

तातोबा : साला चमत्कार ही है। जरुरत खतम हो जाए तो इन्सान को इस तरह उठा के फेंक दो।

नाना : सस्था के लिए इन्सान है तातोबा, इन्सानों के लिए संस्था नही ।

तातोबा . लेकिन नाना साहेब, बयो को कैसा लगेगा—

नाना : (**शान्त लेकिन रोबीले स्वर में**) वह सब तै हो चुका है, तातोबा। उसमें अब कोई परिवर्तन नही हो सकता। तू सिर्फ सावित्री से ताकीद करते रहना (**जाते जाते दरवाजे के पास रुक कर, घूम कर**) और हा पुरंदर इनामदार का बाल भी बाका न हो, यह अच्छी तरह ध्यान मे रखना।

[नाना साहेब जाते है। तातोबा भीतर ही भीतर गुस्सा पीकर, सजल आखों से सिर्फ देखता रह जाता है। तभी दरवाजे के पास खड़ी सारी बात सुनने वाली बयो जल्दी से आती है। उसके पीछे पीछे जगन्नाथ, पुरुषोत्तम और कृष्णा भी आते है। तातोबा को अपने पास लेती हुई बयो—]

बयो : मेरा राजा भैय्या ! पहले आखें पोछ···पोछ ना ! ···सब सुन लिया है मैंने ।

पुरुषोत्तम : (**गुस्से से**) बयो, तुझे आश्रम मे पैर रखने की भी मनाही है, हद हो गई। यह भी कैसी इन्सानियत है ?

जगन्नाथ : इसीलिए मुझे यहा आना अच्छा नही लगता पुरुषा, लेकिन सिर्फ बयो के लिए—

बयो : चुप रहो रे सब ! ···सहने वाली तो मैं हूं ना ? मुझे तो इसमें कुछ भी नया नही लगा। तातोबा तुझे यहां रहने के लिए मना करते हैं न ये ? ना रह। कस्बे के उस घर में तेरा खाना लेकर मैं रोज आऊंगी। ये बच्चे भी तुझ से मिलने आते रहेंगे। कोई तुझ से दूर नही होगा।

तातोबा : (**रुद्ध स्वर से**) बयो तू तो आ जाएगी ये बच्चे भी आएंगे···पर नाना साहेब···?

बयो : (**गुस्से से**) कैसा चांडाल है रे तू भी···जन्म से लेकर आज

· तक मैंने तुझे खिलाया, बड़ा किया, तब भी तू जान उन्ही पर उंडेलता है ? वो कौन हैं तेरे ? कौन हैं रे ?

तातोबा : (कुर्ते की बांह से आंखें पोंछते हुए) कैसे बताऊं बयो··· कैसे बताऊं ?

बयो : मेरे राजे ! इतना ध्यान मे रख, वक्त आने पर वे आश्रम के सिवा किसी के नही है। मा, बाप, बीबी, बच्चे, भाई बहन, उनके कोई···कोई नही। उनका तो सिर्फ आश्रम है···आश्रम···आश्रम !

तातोबा : (रुद्ध स्वर में) देखूगा—देख लूगा,···मैं भूलूगा कैसे बयो ?···कैसे भूलूगा ?

[उसी समय परदा]

दूसरा अंक

[चार-पाच वर्ष का समय बीत चुका है। अक्तूबर महीने की एक संध्या। एक साहबी ठाठ-बाट का हाल। सजावट बीसवी शताब्दी के पहले दशक के अनुरूप। इस हाल के रंगरूप को देखकर लगता है कि पूना कैंट के किसी गोरे साहब का बंगला है यह। आजकल इस बंगले में करसनदास मोरार जी मिल्स के केमिकल कन्सलटेन्ट डा० पुरुषोत्तम गुडो भानू और उनकी सुविज्ञ पत्नी डा० अरुंधती रहती हैं।

परदा ऊपर जाता है। इस समय हाल खाली है। क्षणभर मे अन्दर से कुछ बोलती हुई बयो दरवाजे के पास आती है। पीछे पीछे तातोबा।]

बयो : **(दरवाजे के भीतर से ही एक तरफ होकर बोलती है)** यह रसोई है, वह उधर गुसलखाना, इधर यह खाने का कमरा है, वह मेहमानो का कमरा···हमारा बिस्तर बोरी आजकल उसी कमरे में है··· **(प्रवेश करती है)** यह उठने बैठने के लिए दीवानखाना। यहा केन्ट मे इसे 'हाल' कहते है।

तातोबा : **(आश्चर्य से चकराते हुए)** अबबब···यह सारी जगह पुरुषोत्तम की है? साला! हर महीने किराया कितना

भरता है इस जगह का ?

बयो : यह बच्चू कहा भरता है ? किराया तो भरता है इसकी मिल का मालिक—करसनदास सेठ।

तातोबा : कुछ भी कह बयो, जर्मनी से लौटकर पुरुषोत्तम ने खूब तरक्की की है। इतनी बडी नौकरी, यह बड़ा सा बगला, इतने नौकर-चाकर।

बयो . वो मुझे नही—उसके बाप को जाकर बता। अब तक जो उसका कर्जा उतार रहा हूँ।

तातोबा : इतनी बडी जगह में साले रहेगे भी तो कितने लोग ?

बयो : इनके पेट का आपरेशन होना था इसलिए हम दोनों और कृष्णा यहां हैं। पन्द्रह दिन से जगन्नाथ भी इन्हे देखने यहा आया हुआ है पर वैसे यहा एक और एक दो ही जने तो है। बाकी तो सारी नौकर-चाकरो की कतार है। दिन भर पुरुषा घर से बाहर रहता है और यह महामाया भी—

तातोबा : महामाया—

बयो · बहूरानी, बाबा ! अस्पताल में डाक्टरनी है ना ? वो क्या हमारी तरह सिर्फ 'चूल्हा चौका' करने वाली औरत थोडे है !

तातोबा : सुना है बहूरानी बहुत होशियार है।

बयो : हा। ऐसा चटपटा बोलती है कि आदमी सुनता ही रह जाए। देखता क्या है !

तातोबा : वो सब तो ठीक है पर व्यवहार तो मर्यादाशील है ना ? या वो भी कालीमा जैसा है ?

बयो : क्यो रे ? तेरे कान मे क्या खबर पड़ी है ?

तातोबा : यही कि बहूरानी पति को 'अरे' 'जारे' कहती है···नाम लेकर पुकारती है।

बयो : हा, लेकिन इसमे कौन बडी अमर्यादा है ? पति पत्नी बराबर के हों तो नाम से पुकारना अच्छा ही लगता है। इनका नाम भी जरा कोई ढग का होता तो मुझे इन्हें नाम से

पुकारना क्या बुरा लगता ?

तातोबा : (विस्फारित आंखों से) आं ?

बयो : 'आ' क्या ? अच्छा सा ना भी होता, पर भगवान के नाम से तो मिलता जुलता होता ? अब मैं क्या इन्हें 'गुडो' 'गुडो' कह कर आवाज लगाऊं ?

तातोबा : बये···बयो !

बयो : चल हट ! अब कुछ बोल मत। तू मरा ब्रह्मचारी तुझे रे ये सब जानकारी क्या करनी है ? वैसे तो बहुत मर्यादाशील है बहू इतनी बडी डाक्टरनी, विलायत पास, लेकिन अभी भी झुक कर नमस्कार करती है। आने जाने वालो को क्या चाहिए क्या नही, बडे प्रेम से पूछती है। मुझ मरी को गुस्सा आ जाता है तो मैं कडवा बोल लेती हू कभी कभी पर इस मिशरी की डली ने ? आदमी को तो मुट्ठी मे रखा ही हुआ है, ससुर को भी कमर में खोंस के रखा है।

तातोबा : आ···अरे सच ?

बयो : बहुत मीठा बोलती है, रावबहादुर गोडबोले की लड़की है ये। अरे अस्पताल से आते ही ससुरजी को साथ लेकर पहले घुमाने जाएगी। बाजार से कुछ न कुछ हमेशा उनके लिए लाएगी, पुरुषो की तरह उनके साथ बैठी गप्पें मारती रहेगी—पुरुषों की पंगत में अपनी थाली ले जाकर खाना खाने बैठेगी···अब बोल ?

तातोबा : (कौतुक से) अरे वा !

बयो : 'अरे वा' क्या ? बहू का सब कुछ बड़े लाड से लेते है ये। नही तो मुझे कभी आजतक भी घुमाने ले गए ये ? या प्यार की दो बातें भी की ? पूरा जनम निकल गया इनकी झूठी थाली मे खाना खाते खाते।

तातोबा : वो तो है। पुरुषोत्तम और नाना साहेब की तो आजकल ठीक चल रही है ना ? बाप बेटा एक दूसरे से बोलते हैं ना ?

बयो : बोलते क्या है ? कभी खर्चे या हिसाब की बात हो तो बोलते है। भानू घराने के लोग एक दूसरे से और किसलिए बोलेंगे ?

तातोबा : मतलब यहां भी नाना साहेब अपने खाने के पैसे—

बयो : देते हैं, हां।

तातोबा : और यह साला ले लेता है ?

बयो : लेगा नही तो क्या बाप को व्रत रखवाएगा ? लेकर कृष्णा के नाम से बैंक मे रखवा देता है।

तातोबा : अरे याद आया। कृष्णा दिखाई नही दे रही ?

[उसी समय कृष्णा जीने से नीचे आती दिखाई देती है। काफी बड़ी हो गई है । वेशभूषा आधुनिक। हाथ मे एक पुस्तक। उसे देखकर—]

बयो : यह आ गई देख तेरी विदुषी सरस्वती कृष्णाबाई। जब देखो तब हाथ में कापी, नही तो किताब। कसम है जो कभी परात को या सिल-बट्टे को हाथ लगा जाए। केशव का घर कैसे चलाएगी यह लडकी सचमुच, मुझे तो इसी बात की चिन्ता है।

कृष्णा : अरे पन्द्रह दिन बाद मेरी परीक्षा है बयो—

तातोबा : कृष्णाबाई तेरी परीक्षा के पेढे खा खाकर मुह थक गया अब। साले एक बार अपनी शादी के लड्डू खिला दे।

कृष्णा : हो गई छुट्टी ! मामा तुम आए हो कि बस ? अब शुरू हो जाएगी बयो····'इसके बराबर की लड़कियों को चार चार बच्चे हो गए पर इसे ? भगवान जाने कब हल्दी लगेगी ?—'

बयो : मरी, झूठ क्या है इसमें ? तू इधर परीक्षा का सेहरा पहने है, और वो उधर आश्रम की पालकी उठाए फिरता है। बाप को चिता नही, भाइयों को फिक्र नही। मेरे ही जी को मरी घुन लगी है—

कृष्णा : अरे लेकिन इतना जी को घुन लगाने को भी कौन सा

आकाश फट गया है ?

बयो : केशव को मैंने शादी के लिए तैय्यार कर लिया है ना तभी तू ऐसा कह रही है। नहीं तो चिड़िया रानी तेरे साथ शादी करने कौन आगे आता ? मेरी शादी इस तरह की, पास कानी कौडी नहीं, ऊपर से यह तेरा नखरा ।—या फिर रूप अप्सरा का लेकर आती। वो तो—बाप पर ही है—

कृष्णा : होने दे। जिसने मुझे स्वीकार किया है उसे तो कोई शिकायत नहीं ना ?

बयो . शिकायत करने की उस मरे की क्या मजाल है ? घुटनों के बल चलता था जब उसे लाकर, खिला-पिला कर, बड़ा किया मैंने।

कृष्णा : *तभी मेरा गोग्रास बनाकर उसके सामने डालने चली है ?* तेरा यह बोलना तुझे ही शोभा देता है बयो।

बयो : अरे मेरी रानी, एक बार शादी तो पक्की हो जाए। इस रिश्ते को अब और लंबा खीचना ठीक नही। पुरुषो की बुद्धि कब फिर जाए, क्या पता ?

कृष्णा : उनकी बुद्धि फिर गई तो माथे का कुमकुम पोंछकर बाल-विधवा आश्रम मे जाकर रहने लगूगी। तब तो तेरे को घुन नही लगेगा ना ?

बयो : देख लिया, सब मुझ मरी के ही जी का जंजाल है।

तातोबा : नही, लेकिन मैं कहता हूं—

बयो : अब मुझ से कुछ मत कह। मुंह है तो इनसे, या फिर बच्चों को कह, जो कहना है। ऊपर की मंजिल देखनी बाकी है, चलेगा तो चल ऊपर। एक बार अरुंधती घर वापस आ गई तो ऊपर की मजिल मेहमानो के लिए बंद।

[जल्दी जल्दी ऊपर जाने लगते हैं। पीछे पीछे तातोबा ऊपर जाते जाते कहता है—'नही लेकिन साले एक बार तो पुरुषोत्तम और जगन्नाथ की खबर लेनी ही चाहिए—।' क्षणभर मे जगन्नाथ

और पुरुषोत्तम आपस में बात करते हुए प्रवेश करते है। दोनो ही नख से शिख तक साहबी पोशाक मे है। जगन्नाथ के हाथ मे एक बडा-सा पैकेट है। अंदर आकर पुरुषोत्तम आवाज लगाता है—'अरू, अरुंधती !']

जगन्नाथ : हास्पिटल मे अभी आई नही लगती है ?

[तभी घर का नौकर पाडू दौडकर आता है, जगन्नाथ के हाथ का पैकेट लेकर टेबल पर रखता है और अदब मे जवाब देता है—'बडे साहेब को लेकर घूमने गई है मेमसाहब । अभी आती होगी ।']

पुरुषोत्तम : देख जगूदादा मैंने कहा था ना तुझ से ? उसका टाइमटेबल कभी चूक नही सकता। राव साहेब के बाद कोई चाहे तो अरुंधती के टाइमटेबल से अपनी घड़ी मिला सकता है।

जगन्नाथ : **(कोट उतारकर नौकर के हाथ में देता है)** ऐसा घडी देख कर चलने वाला मसार तेरा तुझे ही मुबारक हो। हमारे अफ्रीका मे तो घडी का कोई काम ही नही। धूप या बारिश से टाइम का अदाजा लगाकर सारा काम चलता है **(बैठ कर बूट स्टाकिंग्ज उतारने लगता है।)**

पुरुषोत्तम : चचच चच ! तू कैसे रहता है रे, अफ्रीका के उन जंगलों मे ?

जगन्नाथ : क्या करें बाबा, यह पेट है ना पेट—

पुरुषोत्तम : पेट ? **(एकदम कुछ याद आने पर खिलखिला कर हंसता है। तभी—)**

जगन्नाथ : **(आश्चर्य से)** हसने की क्या बात है इसमे ?

पुरुषोत्तम : **(हंसी रोककर)** एक बडी मजेदार बात बताता हू। **(नौकर को कोट और टाई उतारकर देता है)** पाडू यह कोट हैंगर लगाकर टाग दे और गरम गरम चाय लेकर आ। और देख, परसों जो ट्रे, कप, सासर्स अरुधती लाई थी उसमें—

पांडू : वो सब मेमसाहब ने सिखा दिया है मुझे।

पुरुषोत्तम : फिर कभी गिलास मे चाय लाया तो याद रखना। (पांडू जाता है, उसकी तरफ देखकर हंसते हुए) किया क्या जाए? परसों सेठ करसनदास जी नाना का हाल पता करने यहां आए तो यह गधा गिलासो में ही चाय ले आया और—

जगन्नाथ : और उसके बाद अरुंधती ने कैसे सभी नौकरो की बुद्धि ठिकाने लगाई, अच्छी तरह सुन चुका हूं। तू पहले वह मजेदार बात बता जिसे बताने जा रहा था।

पुरुषोत्तम : बताता हूं। पर पहले वचन दे। यू मस्ट नॉट टेक इट इल।

जगन्नाथ . बता तो सही बाबा···बुरा क्यो मनाऊंगा ?

पुरुषोत्तम : तूने पेट की बात की उसी से याद आया। जिस दिन नाना का आपरेशन हुआ ना ? उसी दिन हस्पिटल जाने से पहले अपनी 'विल' उन्होंने मुझे पढ़ने के लिए दी। पता है उसमे क्या लिखा था ?

जगन्नाथ : होगा क्या ? सारा रुपया पैसा, मालमत्ता आश्रम के नाम कर दिया होगा।

पुरुषोत्तम : गलत पर···ज्यादा गलत भी नही। इस महादान के अलावा उसमे एक अपवाद भी था। जस्ट टेक इट ऐज अ जोक हू ?

जगन्नाथ : हा हां भई ! बता तो सही ?

पुरुषोत्तम : 'विल' में एक मांग यह भी थी कि—मेरा बड़ा लडका जगन्नाथ कम पढा लिखा है और अफ्रीका मे अपना व्यापार करता है। इस वक्त तो उसका गुजारा ठीक चल रहा है लेकिन मुझे इस बात का पूरा भरोसा नही। कल को अगर उसका व्यापार डूब जाए तो आश्रम कोई ऐसी व्यवस्था अवश्य करे कि उसे और उसके कुटुम्ब को कम से कम दो वक्त खाने के लाले न पड़ें···' (खिलखिला कर हंसता है) अब बता हंसने की बात है कि नही ? अरे यही बात जब मैंने अरू को बताई—(रुकता है) जगूदादा ? यह क्या? तेरी आंखों मे आंसू ?

जगन्नाथ : (डबडबाई आंखों से) पुरुपा, इसी मजेदार बात को याद करके तू हंसता है रे ? मुझे तो हंसी नहीं आई। मेरी सगी मां नहीं और नाना ? उन्हें मैं कभी समझ ही नहीं सका। मानता हूं वर्षों ने मेरे लिए कुछ कम नहीं किया···तब भी···तब भी···

[भावावेग में। पुरुषोत्तम धीरे से पास जाकर उसके कंधे पर हाथ रखकर—]

पुरुषोत्तम : नो, नो आय एम सारी जगूदादा···मुझे माफ कर दे···

जगन्नाथ : (जल्दी से आंखें पोंछकर) चलो छोड़ो, अच्छा, हां,(टेबिल पर से पैकेट उठाकर खोलते हुए) यह ओव्हर कोट नाना को पसंद आएगा या नहीं ?

पुरुषोत्तम : दुकान पर भी मैंने तुम्हें कहा था—नाना को सभी अच्छी चीजें पसंद हैं पर इसकी कीमत जानकर उन्हें यह···साठ रुपये का कोट···

जगन्नाथ : लेकिन सस्ते महंगे का तो सवाल ही नहीं ! यह कोट मैं उन्हें दे रहा हूं।

पुरुषोत्तम : यही तो उन्हें मंजूर नहीं होगा।

जगन्नाथ : तुम लोग तो राई का पहाड़ बना लेते हो। मुझे नहीं लगता कि···

पुरुषोत्तम : ठीक है, आजमा कर देख ले, विश्वास हो जाएगा।

जगन्नाथ : (कोट पुनः लिफाफे में डालते हुए) बस इतना ही ? अरे दुनिया देखी है मैंने। काफी तजुरबा है मुझे भी इसका।

[तभी पांडू चाय की ट्रे लेकर सामने रख कर चला जाता है]

तू चाय तैयार कर तब तक—(जेब से डायरी निकालकर) अपने एक बार सारा हिसाब खत्म कर डालें।

पुरुषोत्तम : (केतली उठाकर आश्चर्य से) हिसाब ?

जगन्नाथ : डोंट बी सिली। मेरे वापस जाने के दिन अब पास आ रहे

हैं इसलिए नाना के आपरेशन पर जो खर्च हुआ है उसका आधा—

पुरुषोत्तम : (**चाय तैयार करता है**) वह डायरी बंद करके पहले जेब में रख ले और फिर कभी ऐसा बोलने की जुर्रत मत करना। अरुंधती के सामने ऐसा करेगा तो पूरे भानू घराने का उद्धार कर देगी।

जगन्नाथ : अरे पर हिसाब तो करना ही चाहिए। मैं कोई खाने के पैसे तो नहीं दे रहा। नाना के आपरेशन का खर्च—

पुरुषोत्तम : सर्जन ने आपरेशन की फीस ही नहीं ली बाबा।

जगन्नाथ : पर हास्पिटल के चार्जेज तो दिए होंगे?

पुरुषोत्तम : पहले चाय तो ले।

जगन्नाथ : नो, नो, हिसाब से जितने पैसे बनते हैं वो तुझे लेने ही पड़ेंगे।

[यह संवाद सुनती हुई बयो और उसके पीछे पीछे तातोबा जीने से उतरते हैं। तभी—]

बयो : देख देख, सुन तातोबा, मैंने जो कहा था वह झूठ था क्या? दो भानू इकट्ठे हुए नहीं कि हिसाब के सिवा दूसरी बात ही नहीं करेंगे। अब तो हो गई न तसल्ली?

पुरुषोत्तम : ओ हो मामा? आज कैसे याद आ गई हमारी?

जगन्नाथ : हमारी याद नहीं। याद तो आई होगी बयो की या फिर नाना की। आपरेशन के टाइम हास्पिटल में देखा था, उसके बाद आज देख रहा हूं मैं इसे। बैठ बैठ…

तातोबा : (**कुर्सी पर तनकर बैठता है और ट्रे की तरफ साभिप्राय देखता है**) गोल्डन टी खूब अच्छी तैयार हुई लगती है। मुझे देनी है तो चांदी के गिलास में दो बाबा। तुम्हारे यह सफेद मिट्टी के कसोरे नहीं चलेंगे।

बयो : (**पुरुषोत्तम उठने लगता है तभी—**) बैठ, मैं लाती हूं। बड़ा पवित्र ब्राह्मण जो घर में आया है! गांजा पीता है मरा मिट्टी की चिलम से, लेकिन चाय पीने के लिए…

तातोबा : अरे रे! वह तो अब त्रेता युग की बात हो गई है (**बयो**

अब तक जा चुकी है) अब क्या कहा जाए इसे ?

पुरुषोत्तम : यह बताओ आज तुम आए किस काम से हो इधर ?

तातोबा : काम वैसे कोई खास नहीं पर—

जगन्नाथ : काम के बिना तो तुम आने वाले नहीं हो।

तातोबा : बताता हू। लगता है गिलास मिला नहीं क्यों को (**कप उठाकर देखते हुए**) चीनी के बर्तनों से भी मुझे वैसे कोई परहेज नहीं है। (**कप में चाय तैयार करता है। जल्दी जल्दी पीकर धोती से मुंह पोंछता है**) क्या है, तुम दोनों भाई वैसे तो इतने समझदार हो, पढे लिखे हो, पर कृष्णाबाई इतनी बड़ी हो गई, उनके ब्याह की तुम्हे जरा भी चिंता नहीं। एक तो वैसे ही तुम्हारे नाना साहेब का स्वभाव ऐसा है, वयो भी ऐसी, ऊपर से तुम भी इतने लापरवाह ! लड़की को ब्याहना भी है या जन्म भर बिठाए रखना है ?

पुरुषोत्तम : मामा तुझे सब पता है तब भी—

तातोबा : (**आवेश से**) 'तब भी' यानी क्या ? एक बार खुलकर बात कर लो केशव से। साला 'ना' करे तो मैं बैठा ही हू। चार महीने के अंदर खूब ठाठ से शादी करवा दूगा। उसमे है क्या ?

पुरुषोत्तम : तू शादी कराएगा तब तो जरूर कृष्णा को किसी दूसरे के साथ बाध देगा। है ना ? वैसे देखा जाए तो पुर्नविवाहित मा की लड़की के साथ कुंवारा, लड़का खुशी से शादी करने के लिए तैयार भी कौन होगा ? केशवराव ने मना नहीं किया सिर्फ जरा कृष्णा की यह आखिरी परीक्षा निकल जाए—

तातोबा : मेरे जाने तो इस बात मे कोई दम नहीं है। केशवराव तुझे जुबान का पक्का लगता है क्या ? मुझे तो साली कुछ और ही बातें सुनाई पड रही है, इसीलिए पूछा है तुझसे।

पुरुषोत्तम : 'और ही बातें' ?

तातोबा : मुफ्त में किसी की शिकायत मैं क्यों करू ? पर असलीयत

क्या है अच्छी तरह पूछताछ करके एक बार पता लगा लो। और उसमें यह भी पूछ लेना कि कर्मयोगी मठ नाम से नाना साहेब ने एक नई योजना बनाई है या नहीं ?

पुरुषोत्तम : (विस्मय से) कर्मयोगी मठ ?

[तभी यमी गुस्से में बोलती हुई आती है'''नौकर क्या हैं मरे, एक से एक बढ़कर जागीरदार हुए जा रहे हैं। चादी का गिलास आंखों के सामने है फिर भी''']

यमो : (प्रवेश करती हुई) हूं, यह ले बाबा गिलास। (तातोबा को देखकर) यह क्या है रे ? मुझे तूने इतना भगाया और आप मट्टी के प्याले में ही चाय सटक गया ?

तातोबा सिर्फ स्वाद लेने के लिए एक घूट पीकर देखा है। ला वह गिलास (गिलास लेते हुए) फिर एक बार सटक लूंगा, माला है क्या इसमें, सिर्फ गरम मीठा पानी ही तो है (चाय उंडेल कर जल्दी से पीने लगता है तभी—)

जगन्नाथ : (एकदम उठते हुए) नाना आ गए लगते हैं।

[नाना साहेब के बोलने की आवाज आती है। धीमी गति से छड़ी ठोकते हुए, कुछ बोलते हुए आते हैं। पोशाक पहले जैसी; सिर्फ सिर पर रूमाल की जगह टोपी है और दाढ़ी बढ़ी हुई है। आते आते नाना साहेब कह रहे हैं—'धर्म प्रचार के लिए बुद्ध भिक्षुओं ने उस वक्त जैसे मठों का निर्माण किया था वैसे ही समाज कार्य के लिए खुशी से संन्यास लेने वाले कर्मयोगी कार्यकर्त्ताओं के मठ स्थापित होने चाहिए। ऐसे सेवक सेविकाओं का कर्मयोगी मठ स्थापित करना हो तो—']

यमो : (दरवाजे के पास जाकर इधर उधर देखती हुई) अजी, अजी प्रोफेसर साब बातें किससे करते जा रहे हैं ?

नाना : (याद आते ही घूमकर देखते हुए) वह शायद पीछे रह गई लगती है।

बयो : पीछे कैसे नहीं रहेगी ? आप चलते थोड़े हैं आप तो दौडते हैं। साथ चलने वाले का आपको ध्यान कहां रहता है ?

नाना : (कोट, टोपी, मफलर, उतारते हुए) कोई बात नही वह फूलों-वूलों को देखती हुई पीछे रह गई होगी। मैं जरा कुछ सोचता हुआ आ रहा था इसीलिए पहले पहुच गया। हां, तो तातोबा एक नए संकल्प के बारे मे तुझ से बातचीत करनी है।

तातोबा : (नाना साहेब की दाढ़ी की तरफ कौतूहल से देखते हुए) अं ?

नाना : (निर्विकार भाव से) हास्पिटल मे था इसलिए दाढ़ी जरा बढ़ गई और अब तो यह सोचा है कि बार बार दाढ़ी बनाने मे जो वक्त जाया होता है उतना ही काम करने मे लगाया जा सकता है।

बयो : (नाना साहेब के कपड़े लेती हुई) वैसे एक बार भगवे कपड़े भी डाल लो तो दाढ़ी पर और सजेंगे।

नाना : वेशभूषा मे सादगी किस तरह लाई जाए इस पर भी विचार चल रहा है। फिलहाल तो रूमाल छोडकर यह टोपी पहननी शुरू की है। हा तो तातोबा एक नए संकल्प के बारे मे तुझ से बातचीत करनी है।

तातोबा : (खुश होकर) जब कहे तभी आश्रम मे हाजिर हो जाता हूं।

नाना : नही, अभी नही, आश्रम मे अभी तेरा आना ठीक नही है।

बयो : (गुस्से से) तातोबा, तुझ मे जरा भी स्वाभिमान नही है ? एक बार हड़क देने से कुत्ता भी खड़ा नही रहता, और तू ? बेशर्म की तरह—

नाना : वो बात नही सावित्री, जमाना बदल गया है। जमाना बदल रहा है। और जमाना पूरा बदलने तक हमें धीरज रखना चाहिए।

बयो : (उबलकर) वह उसे बताइए मुझे नहीं। अब चाहे प्रलय हो जाए तब भी मैं आपके आश्रम में पांव रखने वाली नहीं।

नाना : (शांत स्वर से) ठीक है। पर तुझे आश्रम में आने की मनाही मैंने की है। इसलिए गुस्सा भी मुझ पर ही करना ठीक है।…छोड़ो। अब तो एक नई योजना में तेरी मदद मुझे चाहिए।

बयो : बस बहुत हो गया। जब सुनो तब कोई नई योजना नहीं तो नया संकल्प! अपनी उम्र का भी कुछ ख्याल है कि नहीं? यमराज से कोई पट्टा लिखाकर लाए हो क्या?

नाना : (ठंडे स्वर में) आज तक स्वास्थ्य तो ठीक ही रहा है।

बयो वो तो देख ही रही हू। दिन-रात सेवा करती मर जाती हूं मैं, इसीलिए जरा तन्दुरुस्त खड़े है आप। वरना कल जब मैं श्मशान को अर्पित हो गई तो आपका मुश्किल हो जाएगा, बहुत मुश्किल!

तातोबा : बयो, बये कितना बोलेगी तू?

बयो : (उबलकर) तू चुप रह। तुझे कुछ समझ नहीं आएगा। पूरे दांत जब गिर जाएंगे तेरे, कमर झुक जाएगी तब पता चलेगा—बीवी किसलिए चाहिए होती है। (नाना साहेब को) मैं दवाई और दूध लेकर आती हू, इतने कहीं चले मत जाइए। **(बयो अंदर जाती है। क्षणार्ध स्तब्धता।)**

जगन्नाथ : **(पॅकेट से कोट निकालता है)** नाना आपके लिए यह कोट लाया हूं।

नाना : **(कोट हाथ में लेकर निरीक्षण करते हुए)** हू।

जगन्नाथ : डालकर देखिए ना?

नाना : देखना क्या है? कोटों जैसा कोट है—पर जरा भारी है।

जगन्नाथ : भारी तो है पर एक बार ले लिया तो—

नाना : जरूरत क्या थी?

जगन्नाथ : बहुत ज्यादा कीमत नहीं है और—

पुरुषोत्तम : साठ रुपये।

नाना : (विस्फारित आंखों से) सा—ठ? साठ रुपये? हरे राम —

जगन्नाथ : लेकिन कपडा कितना अच्छा है ये तो देखिए—

नाना : तो भी साठ रुपये बहुत ज्यादा हैं। जरा हल्के कपड़े का कोट होता तो भी चलता। मुझ जैसे सत्तर रुपये पेंशन लेने वाले आदमी को यह पुसेगा नहीं जगन्नाथ।

जगन्नाथ : लेकिन नाना, पैसे तो मैंने दिए हैं और—

नाना : तब भी इतनी महंगी चीज खरीदने की क्या जरूरत थी ? (कोट दूर रखते हैं) हां तो, तात्या थोड़ा ठीक होकर मैं ही तुझे मिलने आऊंगा। पुरुषोत्तम, आबाजी भागवत का कोई संदेशा नहीं आया? केशव भी कल से नहीं लौटा। करनदास जी ने दान में जो रकम देने के लिए कहा था—

पुरुषोत्तम : उसी के लिए तो केशवराव बंबई गया था। आज वापस आ जाएगा। अब तक आ जाना चाहिए था उसे, नहीं जगूदादा ?

जगन्नाथ : हां, गाड़ी का वक्त तो हो गया है।

नाना : (उचक कर—लेकिन शांत स्वर में) केशवराव बंबई गया है ? सेठजी से मिलने ? और मुझे यह—पता ही नहीं। मुझसे किसी ने पूछा भी नहीं। पूछना जरूरी ही था, ऐसी बात नहीं। लेकिन अगर बताकर जाता तो अपनी तरफ से दो जरूरी बातें वहां करने के लिए मैं उसे बताता। ठीक है। (पुनः कोट उठाते हुए) साठ रुपये···कुछ ज्यादा ही खर्च हो गया।

जगन्नाथ . (दुख से) लेकिन नाना—

नाना : चलो हो गया तो हो गया अब अफसोस करने से क्या फायदा ? पर···केशवराव ऐसे कैसे चला गया ? थोडा सलाह-मशवरा कर लेता तो···

पुरुषोत्तम : आप आपरेशन से अभी अभी तो उठे हैं, सबने सोचा कि आपको तकलीफ न हो।

नाना : तकलीफ की क्या बात ? अब अगर केशवराव सेठ जी से

कोई जुबान लेकर ना आया तो क्या होगा ?

पुरुषोत्तम : नहीं वैसे नहीं होगा नाना, केशवराव काउंसिल के सभी सदस्यों ने मिलकर, उनसे अच्छी तरह सलाह-मशवरा करके गया है।

जगन्नाथ : सच नाना, आपको यह सभी झंझट छोड़कर अब आराम करना चाहिए। संस्था के लिए आपने कितने दु:ख, कितनी मुसीबतें उठाई है। अब इस बुढ़ापे में—

नाना : जगन्नाथ, सार्वजनिक संस्था का कार्यभार किसी बिजनेस कंपनी का काम नहीं है। सार्वजनिक काम से कभी निवृत्ति नहीं मिलती। मैं तो आजकल एक नए कर्मयोगी मठ की स्थापना के बारे में सोच रहा हूं—

[तभी बाहर से डा० अरुंधती हाथ में गुलाब के फूल लिए जल्दी से आती है। देखने में ज्यादा सुंदर नहीं है तब भी चुस्त है, बातचीत में तेज है। आते-आते दिखावटी गुस्सा करती हुई—]

अरुंधती : यह क्या नाना ? आपने तो कमाल ही कर दिया। डा० भरूचा का बाग आपको दिखाने मैं उनके फाटक की तरफ मुड़ी और आप—

नाना : यूं ही बस बात करता-करता मैं आगे बढ़ आया। माफ करना।

अरुंधती : छी: माफी किस बात की ? मैं आपसे जिन फूलों का जिक्र कर रही थी वो यही हैं। लीजिए।

[नानासाहेब कुछ फूल हाथ में लेकर उनकी सुगन्ध लेते है। तभी—]

इनमें खुशबू नहीं है। इनका रंग देखिए। जगन्नाथ भैय्या यह आपके लिए और पुरुष यह खास तुम्हारे लिए। अरे रे (तातोबा की तरफ देखकर) और ये···?

पुरुषोत्तम : यह हमारे मामा हैं तातोबा काशीकर।

अरुंधती : एक बार हास्पिटल भी आए थे ना ये ?

(तातोबा फूल लेता है। अरुंधती झुककर नमस्कार करती है। तातोबा आशीर्वाद देता है) चाय नही दी क्या इन्हे ?

तातोबा : सब कुछ मिल गया। ऊपर से यह फूल भी। बहुत अच्छा लगा। गाव मे तो ऐसे फूल दिखाई भी नही देते ?

अरुंधती : तब तो यहा आते रहिए और जितने चाहिए फूल ले जाते रहिए। पाडू, ए पांडू—

[पाडू भागकर आता है]

फ्लावर पाट ?

[पांडू पास से ही कही से फूलदान उठाकर देता है तभी—]

चीज जगह पर नही रखोगे चाहे कितना सिखाओ, कितना गुस्सा करो।

[पांडू जाता है। फूलदान मे फूल सजाती हुई अरुंधती को देखकर—]

पुरुषोत्तम : अरुंधती, ये खास मेरे लिए है, इसका मतलब ?

अरुंधती : ध्यान मे नही आया ना ? (हंसते हुए) मामासाहेब यह आपका भानजा मिल मे काम करते-करते खाली रंगों का कैमिकल कंसल्टेंट होकर रह गया है। इसे थोड़ा रसिक भी बनाइए।

तातोबा : भानू के घराने में ऐसी सम्भावना जरा मुश्किल ही है बहूरानी।

अरुंधती : (फूलदान में अभी भी फूल सजा रही है) पुरुष···अरे वो··· वही···शाम याद करो जरा···

पुरुषोत्तम : हां हां बर्लिन की। याद आ गया···सब कुछ याद आ गया। लेकिन वो यहा तो नही ?

अरुंधती : तू भी ऐसा है कि बस ! ···अरे अब तो अपनी शादी हो चुकी है।

पुरुषोत्तम : तब भी···

[आंखों से संकेत करता है। अरुंधती शैतानी में

हंसती है]

नाना : (हाथ के फूलों को देखकर) वा वा! कितने अच्छे! कितने सुन्दर हैं।

[यह सुनती हुई बयो अन्दर से आती है। हाथ में दूध का गिलास और दवा की गोलियां हैं। नाना साहेब के हाथ में फूल देखकर चकित होकर रुक जाती है। गिलास और गोलियां नीचे रखती है—]

बयो : वा जी वा! आप? और फूल? पुरुषा मुझे चिऊटी काट रे! वह जरा नमक और सरसों तो ला। नज़र उतारे लू इनकी।

नाना : (ठंडेपन से फूल आगे करते हुए) लो। मेरे हाथ मे शोभा नही देते तो तुम्ही लो।

बयो . (साड़ी के पल्लू से हाथ पोंछकर फूल हाथ में लेती है) कैसे कैसे फूल उगने लगे है अब तो। हमारे जमाने मे तो गुलाब का मतलब था सिर्फ जिससे गुलकंद बन सके। फूल उस पारसी डाक्टर के बाग के है ना वह?

अरुंधती : (अभी भी फूलदान के पास खड़ी है) हा उन्ही के बाग के हैं। आप भी तो आज दोपहर गई थी ना उनके घर?

बयो : (आश्चर्य से) हा हा गई थी। क्यों?

अरुंधती : (बयो की तरफ न देखते हुए फूल सजाने में व्यस्त।) मिसिज शिरीन कह रही थी कि आपने उन्हे केक भिजवाने को कहा है।

बयो : हा कहा था। इतने से कुछ बिगडता तो नही ना? पुरुषोत्तम और जगन्नाथ ने बचपन मे कभी केक खाया ही नहीं। शिरीनबाई केक तैय्यार कर रही थी, मैंने कह दिया कि—

अरुंधती : पर क्यो कहा! आपके बच्चे अब छोटे तो नही हैं?

बयो . (उदास होकर) ठीक कहती है तू···यह बात मेरे ध्यान में नही आई।

अरुंधती : किसी के पास जाओ, कुछ मांगो मुझे अच्छा नही लगता। नाना की प्रतिष्ठा का भी कुछ ध्यान होना चाहिए। कितना बुरा लगता है यह सब। आपको तो मैंने कितनी बार मना किया है, लोगों के घर जाकर आप क्यों कुछ मांगती हैं? घर में आपको किसी चीज की कमी है क्या? आप मुझे कहिए मैं दोराब जी से जितने चाहिए बेक ला देती हूं, पर—

पुरुषोत्तम : ड्राप दैट सब्जैक्ट अरू···मैं तुझे इस बारे में पहले भी बता चुका हू।

अरुंधती : नहीं-नहीं पुरुष, यह यहां नहीं चलेगा। मेरे घर में हरगिज नहीं चलेगा। हम अपने घर में नमक से रोटी खाएं, भूखे रहना पड़े भूखे रहें, लेकिन——

पुरुषोत्तम : अब छोड़ भी दे अरुधती···मेरी बात सुन···

अरुंधती : छोड़ कैसे दू? परसों से यह चौथी बार है। हम चाहे छोटे ही लोग हों पुरुष, पर नाना के लिए लोग क्या सोचेंगे, इसका भी तो कुछ ख्याल होना चाहिए?

बयो : (डबडबाई आखों से) बहुत बोल ली अब बस कर दे बहू··· देख तू है रावसाहब बहादुर की लाडली बेटी और मैं गाव के एक गरीब ब्राह्मण की लडकी। हाथ पसारे बिना कभी कुछ मिला ही नही हमें। कहीं भी जाकर कुछ मांगने मे इसीलिए मुझे हिचक नहीं होती। हा, मुझ जैसी सास से तुझे अगर लाज आती है तो अपने पति से मुझे अभी मेरे घर पहुंचाने को कह दे। मेरी गठरी तैयार है। (आंखें पोंछती हुई अन्दर चली जाती है)

अरुंधती : (आवेग से) मैं कौन होती हूं कुछ कहने वाली? घर आपका···लोग आपके···उनको अगर बुरा नही लगता तो मैं रोकने वाली कौन होती हूं? पाडू···(ऊपर जाने लगती है)

पुरुषोत्तम : अरू···अरुंधती···जरा समझ से काम ले···मैं क्या कहू

रहा हूं जरा सुन तो सही…

[तभी अन्दर से पांडू आता है।]

अरुंधती : (पांडू को) ऊपर चल, जो चद्दरें और गिलाफ मैं देती हूं उन्हें ले आ और दूसरी साफ चद्दरें बदल कर सभी बिस्तर तैय्यार कर दे। (पांडू जल्दी से ऊपर भागता है, पीछे पीछे अरुंधती जाती है, उसके पीछे पुरुषोत्तम जाता है। क्षणार्ध स्तब्धता—)

नाना : (इसी बीच गोली दूध से लेकर दूध पीते-पीते निःश्वास छोड़कर ठंडे स्वर में—) हा! तो तातोबा ऐसा है… कार्यकर्त्ताओं के पैरों में गृहस्थी की बेड़ियां नहीं होनी चाहिए।…जगन्नाथ इस केक का स्वाद कैसा होता है रे। चलो ठीक है! इसमें पूछने लायक क्या है? कोई एक मीठा पकवान ही होता होगा और क्या? (इधर-उधर देखते हुए) तातोबा एक काम करेगा?

तातोबा : इसमें भी कोई पूछने की बात है? आप बताइए तो सही!

नाना : अन्दर, वो…उस कमरे में दान भेजने वालों के लिए एक कार्डों का गट्ठा रखा है, वो जरा लेकर आ। हस्ताक्षर करने के लिए कलम-दवात भी लेते आना, हूं? (तातोबा जल्दी से अन्दर आता है)। इतने में काम के लिए भी दूसरे आदमी की जरूरत पड़ने लगी, यह ठीक नहीं। (पुनः नया कोट हाथ में लेते हुए) तो जगन्नाथ कोट अच्छा है। (कोट पर हाथ फेरते हुए) बहुत मुलायम है। बिल्कुल फर की तरह पर इसनी कीमत…मेरे बूते के बाहर है।

जगन्नाथ : (गुस्से से उठते हुए) आपको नहीं चाहिए तो मैं वापस कर दूंगा। या फिर—

नाना : (जल्दी से) नहीं-नहीं ऐसी बात नहीं, तू जब लाया है तो लेना ही पड़ेगा पर थोड़ा सस्ता लाता तो खर्च की दृष्टि से—

जगन्नाथ : आपको मैं बार-बार कह रहा हूं कि पैसे मैंने दिए हैं।

मैंने···आपके बेटे ने।

नाना : (**शांत स्वर में**) हा-हा मैं जानता हू। पर जगन्नाथ मेरे साथ यह सब नही चलता। अपनो से इस तरह लेते रहने का व्यवहार नहीं रखता मैं।

जगन्नाथ : (**उबलकर**) ठीक है। आप सिर्फ और लोगों के सत्कार मे दिए हुए शाल स्वीकार करते है। लखपतियों की दी हुई भेंट-वस्तुएं स्वीकारते है। राजा-महाराजाओं द्वारा दिए अनुदान भी ले लेते है और उन्ही के जोर पर बेटो के सामने रोज के खाने के पैसे तक गिनकर रख देते है।

नाना : (**शांत स्वर में**) जगन्नाथ तू गुस्से मे है। जवानी मे यह सब चलता है। पर अब तू तो तीस पार कर चुका है। इस उम्र में इतना गुस्सा ठीक नही। गुस्से से रक्तचाप बढता है। जरा समझ से काम लेना चाहिए। अभी-अभी तूने जो कहा उसे मैं कबूल करता हूं लेकिन मैं जो दूसरो से लेता हूं उसे उन्ही हाथों आश्रम के भंडार में पहुंचा देता हू। एक भी शाल, भेंट वस्तु या दान मे से घर कुछ नही लाता। तेरे दिए हुए कोट की भी यही दशा करूं क्या ?

जगन्नाथ : आपको ठीक लगता है तो डाल दीजिए आश्रम के भंडार मे यह भी।

नाना . जगन्नाथ, यह सब गुस्से की बातें हैं व्यवहार की नही।

जगन्नाथ : हम साधारण इंसान हैं आपके ऊचे विचार हमारी समझ से बाहर है। आपके जैसे जी मे आए वैसे ही करें इस कोट का।

[जगन्नाथ जल्दी जल्दी ऊपर चला जाता है। नाना साहेब गुस्सा निगल कर घुटनो पर उंगलियों से ताल देते हुए··· 'मिले भी तो जान तजना उनको'—गुनगुनाने लगते है। तभी बयो आती है। हाथ में गरम पानी की चिलमची और तेल की कटोरी।]

बयो : (क्षणभर रुककर, देखकर फिर चिलमची और कटोरी नाना साहेब के पास रखकर सहज भाव से) झगड़ा हो गया किसी से शायद ?

नाना : (होश में आते हुए) छे: छे: मुझसे कौन झगड़ा करेगा ?

बयो : (पैरों के पास बैठती हुई) वैसे ही, कुछ गुनगुना रहे थे ना इसलिए पूछा। (नाना साहेब मुस्कुराते हैं। तभी—) पैर आगे कीजिए। मैंने जो कहा वो सही है ना ? (नाना साहेब पैर आगे करते हैं और खुंकारते हैं) बेकार बात को टालिए मत (कटोरी का तेल हाथ में लेकर उनके पैर को मलती हुई) महारानी की सीख में आकर उस गधे ने कुछ कह दिया होगा।

नाना : नही नही, वैसा कुछ नही।

बयो : (रुककर) तो फिर झगडा ? जग्गू ? बताइए तो सही··· मरे का अभी कान पकडती हूं और—

नाना : नही, कोई नही···बच्चे सीधे है, सरल है, नेक है सावित्री !

बयो : तब तो बुरी मरी मैं ही हूं···हूं ना ?···भगवान···तेरी तो आंखें हैं···

नाना : मेरे एक शब्द से भी कभी ऐसा लगा है तुझे ?

बयो : ठीक है···ठीक है···यह पैर चिलमची मे रखिए। फिजूल की बातें मत सोचिए—पानी गुनगुना है। दूसरा पाव—

[नाना साहेब एक पाव चिलमची मे रखते है और दूसरा चुपचाप बयो के आगे कर देते है। बयो उस पाव को तेल मलती है]

नहीं जगू को एक बार अच्छी तरह खबर लेनी ही पडेगी।

नाना : क्यों ?

बयो : (पांव मलती है) परसों आपने कहा था—एक गरम कोट बाजार से ला दे, ठंड काफी हो गई है। अब ले आता तो अफ्रीका मे क्या उसका दिवाला निकल जाता ?

नाना : पागलों की तरह बोलती चली जाती है। अरे यह कोट तो

जगन्नाथ ही लाया है।

बयो : (झट से उठकर कोट को झड़पती हुई) अरे रे ! ···पहले क्यों नही बताया ? बड़ा होनहार बेटा है मेरा। देखो ना ···कपड़ा कैसा खरगोश जैसा मुलायम है···और आप है कि बस ! बच्चों पर गुस्सा करते रहते है। नही लेकिन··· पुरुषोत्तम पर गुस्सा करना जायज है। वह समझता है, तीनो लोको मे औरत जैसे सिर्फ उसी को मिली है। पर मेरा जगू ऐसा नहीं है। मुह से चीज निकालो पीछे, पहले हाजिर। बड़ो की इज्जत करना तो कोई जगू से सीखें।

नाना : हू, पता है इस कोट की कीमत कितनी है ?

बयो : (कोट अच्छी तरह देखती हुई) होगी मरी पाच दस रुपये···

नाना : पाच दस रुपये नही···साठ रुपये···सा ठ !

बयो : (विस्मय और खुशी से) सा ठ ? क्या कहा, साठ रुपये ? राम, राम, राम···(जल्दी से कोट रखकर, तेल के हाथ साड़ी से पोंछकर, फिर से कोट उठाते हुए) बच्चे की नजर उतारनी पड़ेगी—

नाना : वो तो उतारो पर इतने पैसे मैं कहा से दू ?

बयो : (कोट रखकर शंका से) क्यों ? कोट के पैसे मांग लिए उसने आप से ?

नाना : बेकार जो जी मे आए बोल देती हो ? वो कैसे मागेगा ? उल्टे पैसो की बात जब मैंने की तो वो नाराज हो गया।

बयो : आपका यही तो कमाल है। पैसों की बात की ही क्यों उससे ?

नाना : तू अच्छी तरह जानती है सावित्री, मैं मुफ्त किसी से कुछ नही लेता।

बयो : (गुस्से से कोट पटक देती है) वही···यही सब उल्टा सीधा आप जगू के सामने बोले होगे। गुस्सा कैसे नही आएगा उसे ? बच्चे जब छोटे थे, आपने उन्हे कभी प्यार से कुछ·

लाकर नहीं दिया, अब वो बड़े हो गए हैं, प्यार से कुछ ला कर देते हैं तो लेते नहीं हो। मारा प्यार आश्रम की उन अनाथ अबलाओं के लिए, नहीं तो फिर उस चौघट तातोबा के लिए…

नाना · सावित्री जरा समझ में काम ले…

बयो . (चौकड़ी मारकर) समझती हूं…सब समझती हूं। यह पैर पानी में रखिए और दूसरा निकालिए।

[नाना साहेब चिलमची में पांव बाहर निकालते हैं और दूसरा रखते हैं। बयो पास का अगोछा निकालकर पाव जल्दी जल्दी पोंछने लगती है। तभी कार्डों का गट्ठा लेकर तातोबा प्रवेश करता है—]

तातोबा . यह क्या नाना साहेब ? आपने भी कमाल कर दिया।

नाना · क्या हुआ ?

तातोबा : अरे सभी कार्डों पर एक पैसे की टिकिट लगाने को बजाय अपने दो दो पैसे की टिकिट लगा दी।

नाना · देखूं देखूं…(कार्डों का गट्ठा लेकर देखते हुए) सच ? हरे

बयो : वक्त बुरा हो तो नुकसान ही नुकसान। तभी कहती हूं, आपको ठीक से नहीं सूझता तो किसी की मदद ले लिया करो। पर इतना धीरज किसमें है ?

नाना : अब यह फालतू खर्च और चुकाना पड़ेगा।

बयो : मतलब दान मिलता रहे आश्रम को और नुकसान भुगतते रहें हम।

तातोबा : साला उसमें है क्या ? सभी कार्ड हस्ताक्षर करके मुझे दे दीजिए। अभी भाप लगाकर सब टिकटें उतार लेता हूं, उनकी जगह एक पैसे की टिकिट लगाकर सुबह होने से पहले जनरल पोस्ट आफिस में डाल देता हूं।

नाना · इतने से ही काम नहीं चलेगा तातोबा, परसों जो तीन-चार सौ कार्ड इसी तरह पोस्ट कर दिए उनका क्या होगा ?

बयो : होगा क्या ? खोलो गांठ और भरो पैसे। पूरा जनम इसी तरह के नुकसान भरते भरते निकल गया। वो दूसरा पांव बाहर निकालिए।

[नाना साहेब पाव बाहर निकालते है। बयो अगौछे से उनका पाव पोछने लगती है तभी बाहर से आबाजी भागवत छडी टेकते हुए आते है—]

नाना : आइए आबाजी। आज आपने आने मे देर कर दी और कोई सदेशा भी नही भेजा। तातोबा जरा दवात लाना।

[तातोबा अदर जाता है]

आबाजी : श्रीमंत राजमाचीकर से मिलने चला गया था इसीलिए जरा देर हो गई।

नाना : क्यो ? कोई खास बात ?

बयो : (तामझाम समेटते हुए) कृष्णा···कृष्णे।

आबाजी : उनका विचार है कि आश्रम की किसी होशियार और पढी लिखी लडकी को उच्च शिक्षा के लिए विलायत भिजवाया जाए।

[कृष्णाबाई आकर दरवाजे के पास खडी रहती है।]

नाना : अच्छा ? तब तो मेरा सुझाव यह है कि यमुनाबाई मेंहदले के नाम पर गौर किया जाए।

आबाजी : मैंने अपनी कृष्णाबाई का नाम सुझाया है। श्रीमंत को भी मेरा यह सुझाव पसंद आया है। अब तो उसकी आखिरी परीक्षा भी खत्म होने वाली है उसके बाद—

[तातोबा दवात लेकर आता है। नाना साहेब के आगे रखता है। नानासाहेब एक एक कार्ड पर हस्ताक्षर करने लगते हैं। इस सुझाव से वह बिल्कुल सहमत नही हैं।]

बयो : (कृष्णा से) कमर पे हाथ रख के खड़ी मत रह, यह चिल-

मची और कटोरी अंदर ले जाकर रख।

[कृष्णा चिलमची और तेल की कटोरी अंदर ले जाने लगती है। तभी—]

नाना : आबाजी ऐसा सुझाव रखने से पहले मुझसे पूछ तो लिया होता? कृष्णाबाई के विलायत जाने से आश्रम को तो कोई फायदा नहीं होगा। यमुनाबाई का नाम ज्यादा उचित था। वह बाल विधवा है, पढ़कर लौटेगी तो आश्रम में नौकरी भी कर सकेगी।

[कृष्णा अंदर जाती है]

बयो : *क्या कह रहे थे? कृष्णाबाई नौकरी नहीं कर सकती?*

नाना : कल को उसकी शादी हो जाएगी, वह ससुराल चली जाएगी तब हमारी मर्जी तो नहीं चलेगी ना?

बयो : पर शादी होकर कृष्णा किसी पराए घर थोड़े जाएगी?

नाना : मतलब? (ऊपर देखते हुए) तुम्हारा मतलब मैं समझा नहीं।

बयो : न समझने लायक इसमें क्या है? कृष्णा को मैंने केशव से बाँधने का निश्चय किया है।

नाना : (*हड़बड़ा जाते हैं···कलम गिर जाती है···*) *क्या कहा?* कृष्णाबाई···केशव···फिजूल मत बोलो···और न ही कोई ऐसी-वैसी आशा रक्खो।

बयो : इसमें ऐसी-वैसी आशा रखने की क्या बात है?

नाना : यह सम्भव नहीं है सावित्री। केशव ने आजन्म अविवाहित रहकर खुद को आश्रम को समर्पित करने का निश्चय किया है। मेरे पैरों पर हाथ रखकर उसने शपथ ली है।

बयो : आपने जबरदस्ती उसे शपथ दिलाई होगी। सुनिए—उस शपथ-वपथ का कोई अर्थ नहीं है। कृष्णा की यह परीक्षा खत्म हो जाए तो—

नाना : केशव को बेकार किसी फन्दे में मत डालो। सावित्री उस जैसे होनहार लड़के को मैंने किसी खास उद्देश्य से अपने घर

में रखा है।

बयो : रखते नहीं तो क्या करते ? और मैं क्या उसे आपके आश्रम पर से न्यौछावर करने के लिए इतने वर्ष खाना खिलाती रही ?

नाना . सावित्री, तुझे समझना चाहिए। जब कोई अपना सर्वस्व किसी संस्था को अर्पित कर देता है तो उसके लिए बच्चों-बीवी की जिम्मेदारी निभानी बहुत मुश्किल होती है। मैं अपने अनुभव से बता रहा हूं। ऐसे इन्सान का मन सिर्फ तंग पड़कर रह जाता है।

बयो : (उबल कर) हाय राम जिसे चिल्लाना चाहिए वह तो चुप बैठी है और जिसे चुप बैठे रहना चाहिए वह चिल्लाए जा रहा है। आपके मन तंग पडने का कारण क्या है ? क्या झेलना पड़ता है आपको ?

नाना : सावित्री, मैं अपने लिए नहीं कह रहा। पर मेरी भूल से तेरा मन तो तंग पड़ता रहा।

बयो : मैं कुछ तग वंग नहीं पड़ी। सभी कुछ ठीक से हो गया। एक बार जयमाला पड़ जाने के बाद सभी पति सूत की तरह सीधे हो जाते है। केशव आपकी तरह हठी नहीं है और अगर हो भी तो कृष्णा भी कोई गरीब गाय नहीं है।

नाना : लेकिन सावित्री—

बयो : आप सिर्फ चुप रहेगे ? इस शादी मे आपने अगर कोई रुकावट डाली तो मैं बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करूंगी। पहले बता रही हूं।

[इतना बताकर बयो जल्दी जल्दी अन्दर चली जाती है। तातोबा बेचैन होकर खड़ा रहता है तभी—]

नाना : (ठंडेपन से) तातोबा खड़ा क्यों है ? बैठ-बैठ।

तातोबा : नहीं, देखता हूं बयो को थोड़ा समझा सकता हूं या नहीं।

नाना : ठीक है, समझा सकता है तो अच्छी बात है, पर समझाने का

मतलब समझा जरूर देना, बेकार आग में घी मत डालना। (तातोबा जाता है। उसी समय जीने पर से जगन्नाथ बाहर जाने की पोशाक में आता है और सीधा जाने लगता है। उसकी तरफ देखते हुए—) जगन्नाथ, तुम और कितने दिन हो यहां ?

जगन्नाथ : (ठहरकर, घूमकर विस्मय से) कल सुबह मुह अंधेरे जाने की सोच रहा हूं, क्यों ?

नाना : इसका मतलब है, जब तू जाएगा मैं जगा नहीं हूंगा। तातोबा, अरे तातोबा—(तातोबा जल्दी से दरवाजे से झांकता है तभी) सावित्री से पैसों की थैली ले आ। (तातोबा अन्दर जाता है) जरा रुकना जगन्नाथ। तो आबाजी श्रीमंत राजमाचीकर को पत्र लिखकर कृष्णाबाई की जगह आश्रम की विद्यार्थी यमुनाबाई मेहदले को विलायत भेजने की विनती करें।

आबाजी : जैसी आपकी मर्जी। लेकिन—(इतने में तातोबा पैसों की थैली लाकर नाना साहेब को देता है। नाना साहेब थैली खोलते हैं उसमें से दस दस के छः नोट निकालकर जगन्नाथ के सामने करते हुए—)

नाना : जगन्नाथ यह कुछ पैसे है तेरी बहू की साड़ी, चोली और बच्चों की मिठाई के लिए।

जगन्नाथ : साठ रुपये की साड़ी, चोली और मिठाई ? नहीं नाना, पैसे रख दीजिए।

नाना : ले ले जगन्नाथ, मैं तेरे दिए हुए कोट की वापसी नहीं कर रहा। बहुत दिनों से बहू और बच्चों के लिए कुछ भेजने का मन था।

जगन्नाथ : आपकी भावना के लिए आभारी हूं पर मैं पैसे नहीं लूंगा।

नाना : (उठकर पैसे उसकी जेब में डालते हुए) अब ले भी ले।

जगन्नाथ : (जेब से पैसे निकालकर वापस करते हुए) ठीक है। तो यह मेरी तरफ से आश्रम को दान समझ लीजिए।

[नाना साहेब के सामने पैसे रखकर गुस्से से निकल जाता है। नाना साहेब सहज भाव से पैसे उठाते है और तातोबा को दे देते हैं।]

नाना : तातोबा, यह पैसे केशवराव को दे देना और कहना, मैंय्या-दूज फंड में जगन्नाथ के नाम से इनकी रसीद काट दे। रसीद जगन्नाथ के पते पर अफ्रीका पहुंच जानी चाहिए।

[तातोबा अन्दर जाता है]

आवाजी, केशवराव अगर बम्बई करसनदास जी से मिलने, मुझे कह कर चला जाता तो क्या हर्ज था ?

आबाजी : अभी तक तो उनमें सारी बातचीत जुबानी ही थी इसलिए सोचा—

नाना : दान देने की बाबत करसनदास जी ने शर्तें कौनसी रखी हैं ?

आबाजी : शर्तें···याने ?

[यह बातचीत सुनते हुए ही पुरुषोत्तम और अरुंधती नीचे आते है]

पुरुषोत्तम : मैं बताता हू। अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो!

अरुंधती : मेरी मानो पुरुष, तो तुम इस विवाद मे मत पडो। कुछ भी हो तुम हो तो आखिर करसनदास जी की नौकरी मे ही। तुम्हारे विचार एकदम—

पुरुषोत्तम : नाना को कोई आपत्ति न हो तो मैं बताऊं ? यही तो कहा है मैंने अरू ?

नाना : सेठ जी की तरफ से ही बोलने चला है तो सिर्फ इतना बता कि उनकी शर्तें क्या हैं ?

अरुंधती : पाडू! (पांडू आता है) महाराजिन आ गई हो, तो उसे कहो, माजी से पूछकर सब्जी काटनी शुरू करे। और यह क्या रे ? यह चाय की ट्रे कौन उठाएगा ? (पांडू चाय की ट्रे लेकर जाता है।)

पुरुषोत्तम : (कुर्सी खींचकर बैठता है) नाना, सेठ जी का विचार है कि

आश्रम का ध्येय सिर्फ विधवा शिक्षण तक ही सीमित ना रहे बल्कि पूरे स्त्री शिक्षण पर ही नये सिरे से विचार होना चाहिए। पैसे का सवाल नही है। सेठ जी ने लाखो रुपये दान के लिए अलग निकाल कर रक्खे है। सेठ जी का यह भी विचार है कि स्त्रियों की अलग यूनिवर्सिटी बने।

अरुंधती –(पत्र-पत्रिकाएं समेटती हुई रुककर) पुरुष, तुम यह क्या बेमतलब की बातें लेकर बैठ गए। नाना ने सिर्फ तुमसे सेठ जी की शर्ते पूछी है, उनके विचार क्या है यह नही पूछा।

नाना ठीक कहा है बहू ने।

पुरुषोत्तम : (सर्द होकर, कुछ नाराजगी से) ठीक है, शर्ते बताता हूं। आश्रम पूना से उठाकर बम्बई ले जाना होगा।

नाना · हूं।

पुरुषोत्तम : और आश्रम की काउन्सिल पर आधे प्रतिनिधि सेठ जी द्वारा मनोनीत होने चाहिए।

नाना · है ?···(विचारमग्न होकर)

अरुंधती : *नाना, आपका इन्जेक्शन का वक्त हो गया।*

नाना : हा, बातों बातो मे भूल ही गया। तुझे कोई आपत्ति ना हो तो यही लाकर लगा दे। (अरुंधती जाती है) आबाजी, सेठ जी की शर्तो के बारे मे आप लोगो ने क्या सोचा है।

आबाजी : सोचा याने···लो यह केशव ही आ गए। आइए, आप ही की बाट देख रहे थे। आपको देर हो गई···(केशव कंधे पर एक झोला लटकाए आता है)

केशव : (झोला रखते हुए) रास्ते मे गाडी का इंजन कुछ बिगड गया इसीलिए देर हो गई।

पुरुषोत्तम : लेकिन सेठ जी तो मिल गए थे ना ?

केशव : वा ! मिले याने क्यो ? दिन भर उन्ही के साथ तो था।

नाना : केशवराव यह ठंड के दिन हैं कही जाओ तो ओढना-बिछौना लेकर जाया करो।

केशव : नहीं नाना साहेब, बम्बई मे वैसे कोई खास ठंड थी ही नही

और—

पुरुषोत्तम : खाना खाकर ही जाएगा ना अब ?

केशव : नही नही आश्रम मे लोग बाट देखते होंगे मेरी। नाना भी नही है वहां। खाने के वक्त तो मुझे वहा पहुच जाना चाहिए।

नाना : सेठ जी की कौन सी शर्तें तू मन्जूर करके आया है ?

केशव : अरे रे ! मन्जूर करने वाला मैं कौन होता हूं। मैंने उन्हे बता दिया कि आपकी शर्तें मै काउन्सिल के सामने रख दूगा और जो फैसला होगा वह आपको बता दिया जाएगा।

नाना : बहुत अच्छे। अब दो-चार दिन में काउन्सिल की सभा बुलाइए और निर्णय ले लीजिए।

केशव : वह तो करना ही है पर एक बार आपकी राय पता चल जाए तो—

नाना : (क्षणभर सोचते हुए) विचार करने के बाद यही उचित लगता है कि वातावरण, सस्ताई, और हवा पानी की दृष्टि से आश्रम पूना में ही रखना चाहिए। बम्बई व्यापारिक नगरी है, और एक शिक्षण-संस्था का स्थान उस बाजार मे नही होना चाहिए।

केशव : लेकिन नाना साहेब, करसनदास जी ने तो जमीन तक खरीद ली है।

पुरुषोत्तम : इतना ही नही, बडी बड़ी इमारतों के प्लैन्स तक तैयार हो गए हैं। हर तरह की सुख-सुविधा ध्यान में रखकर—

नाना : बडी-बडी इमारतों का मतलब ही शिक्षा संस्थान नही होता। आश्रम का फैलाव जंगल मे ही अच्छा लगता, किसी रज-वाडे मे नही। सेठ जी की दूसरी शर्तें क्या हैं ? मेरे विचार मे तो शिक्षण सस्था के कार्यकारी मंडल पर अमीरों का एक भी प्रतिनिधि नही होना चाहिए। इस पर भी अगर सेठजी बिना किसी शर्त के दान देने को तैयार हों तो लेना चाहिए, वरना हरगिज नही !

पुरुषोत्तम : यह फैसला बहुत जल्दबाजी मे किया गया है। (**केशव और आबाजी को**) आप लोगों को सभी बातों पर अच्छी तरह से विचार करना चाहिए। नाना, आप जैसे कह रहे है, वैसे बिना शर्त का दान, कौन महामान्य देगा इन दिनों ?

नाना : (**कार्डों का गट्ठा उठाकर दिखाते हुए**) इतने महामान्य देते हैं हर महीने। उनकी रकम कम हो सकती है पर उनका त्याग कम मूल्यवान नही है। ऐसे ही दाताओ के आधार आश्रम आज तक टिका रहा है।

पुरुषोत्तम : पर नाना···

नाना : पुरुषोत्तम तू सेठ जी की नौकरी मे है, इसलिए यह बात तेरी समझ मे नही आएगी। आश्रम का दृष्टिकोण इसमे अलग है।

पुरुषोत्तम : (**गुस्से से उठते हुए**) अब कुछ कहने को बचा ही नहीं। गरीबी में ही रहने का शौक हो जब तो साक्षात कुबेर के भी प्रसन्न हो जाने से आप लोगो को क्या फर्क पड़ता है ?

[पुरुषोत्तम गुस्से मे बरामदे मे जाकर पीठ किए खडा रहता है]

अरुंधती : पुरुष, मैंने तुझे पहले ही कहा था, इस विवाद मे मत पड।

नाना : बहू, चाहे वो गुस्सा हो गया हो पर उसके बोलने का मुझे कोई गुस्सा नही। (**इन्जेक्शन के लिए कुरते की बांह ऊपर करते हुए**) हां तो, काउन्सिल की मीटिंग मे जैसा मैंने कहा, वैसा निर्णय लेना और···

आबाजी : आप अपना मत स्वयं काउंसिल के सामने रखिए। जो ठीक होगा काउन्सिल वो निर्णय ले ही लेगी।

नाना : 'अपना मत' याने ? आप मुझ से सहमत नही ?

[दोनों ही चुप बैठे रहते हैं। इसी बीच अरुंधती इन्जेक्शन देती है। फिर बाहर जाकर पुरुषोत्तम से धीरे-धीरे कुछ कहने लगती है। इसी बीच—]

ठीक है, समझ गया। केशवराव तूने कृष्णाबाई से विवाह करने का फैसला किया है ? क्या यह सच है ?

केशव : (कुछ चौंक जाता है) ऊं ? न···नही···हां···हा-हां··· म···मैं आपको बताने ही वाला था···मेरा मतलब है···

नाना : (नीचे देखते हुए) हूं, तो बात सच ही है ?तूने यह उचित नही किया केशवराव···

केशव : वो बात नही, नाना साहेब—

अरुंधती : (पीछे से आती है। इन्जेक्शन के सामान को समेटते हुए) केशवराव, आपने तो अविवाहित रहकर संस्था का कार्य-भार संभालने के लिए नाना के पावों की शपथ ली थी ?

केशवराव : हां ली थी पर—

अरुंधती : आपने भूल की है। आपका विचार जब बदल गया था तो नाना को इसकी जानकारी देना आपका कर्त्तव्य था।

पुरुषोत्तम : (आगे आते हुए) लेकिन अरुंधती तुम यह कैसे भूलती हो—

अरुंधती : पुरुष, मैं इनकी शादी का विरोध नही कर रही। वक्त से अगर यही बात ये नाना को बता देते तो आगे पैदा होने वाली उलझन से बचा जा सकता था। (सामान उठाकर अन्दर जाती है।)

नाना : ठीक है। केशवराव तुझे तो पता है, सिर्फ तेरे सहारे मैंने कर्मयोगी मठ की योजना बनाई थी। तू मुझे साफ-साफ बता देता तो मैं किसी भ्रम में तो न रहता ?

केशव : (नीची गर्दन किए) क्षमा कीजिए नाना साहेब, मुझसे भूल हो गई।

नाना : मेरी मानो तो अब भी किसी के कहने-सुनने मे न आओ। शादी के लिए तुम्हारा इरादा नही है तो अभी भी मेरी बात पर गौर कर सकते हो। तुम 'ना' कह दोगे तो कृष्णा-बाई पर कोई आकाश नही टूट पडेगा। सावित्री को भी मैं समझा लूगा। लगता है तुम्हारे लिए—

केशव : नही'''नही । नाना साहेब, वो अब सम्भव नही है । मुझे पीछे नही हटना ।

नाना : (व्याकुल होकर किंचित विनत स्वर में) अच्छी तरह सोच लो केशव । तुम्हारी कार्यक्षमता और सेवा भावना गृहस्थी की क्षुद्र सीमाओं मे ही दम न तोड़ दे । आश्रम को तुम्हारी बहुत जरूरतहै। मेरे पाव थक गए हैं। आश्रम की बाट-चाल अब तुम्हारी उंगली पकड़ कर चलेगी। मेरा बुढापा देखा है ना ? एक तुम्हें छोड़ दूसरा कोई ऐसा नही जिस पर आश्रम का बोझ डाल मैं बेफिक्री से मौत का सामना कर सकू ।

केशव : नाना साहेब, आप इतने व्याकुल क्यो होते है ? मैंने विवाह कर भी लिया तब भी आश्रम का काम नही छोड़ूगा ।

नाना : यह सब कहना व्यर्थ है। जीवन मे इन्सान या तो बीवी-बच्चो का साथ दे सकता है या समाज कार्य के साथ न्याय। दोनों को मुट्ठी मे बांध कर चलने वाले मुझ जैसे लोग सिर्फ पराभूत होकर रह जाते है ।

केशव : मैं कसम खाकर कहता हूं नाना साहेब मैंने अगर विवाह किया भी तो—

नाना : वैसा सभव नही। वो कभी होता नही । स्त्री-मोह मे पड़कर जो एक शपथ तोड सकता है वो सासारिक सुखो के लिए दूसरी तोडने मे भी देर नही लगाएगा। (रुककर) केशव, अपने इस फैसले मे परिवर्तन करने का आश्वासन क्या तू मुझे देगा ?

केशव : (क्षणमात्र स्तब्ध रहता है फिर धीरे से) उससे कुछ लाभ नही होगा ? मेरा फैसला कैसे बदल सकता है ? लेकिन मैं आपको वचन देता हूं कि—

नाना : (कुछ ऊब कर) नही, उसकी कोई जरूरत नही । (आंखों से आंसू बहने लगते हैं) आदमी आते है, चले जाते है, संस्था का काम किसी के लिए अटका नही रहता। (रुककर ठंडी

सांस भरते हुए) हां, एक काम तुझे करना होगा। विवाह के बाद तू हमारा एक करीबी रिश्तेदार हो जाएगा और संस्था के नियम के अनुसार सेवक के इस पद से इस्तीफा देकर तुझे आश्रम सदा के लिए छोड देना होगा।

केशव : काउन्सिल अगर यही फैसला करेगी तो मैं—

नाना : (आवेश से) 'यही फैसला करेगी' याने क्या? मेरे कहने पर काउन्सिल को यह फैसला करना ही पडेगा। और काउन्सिल के फैसले का भी इन्तजार किसलिए? तुम में खुद अगर कुछ शर्म है तो तुम—

आबाजी : नाना साहेब यह विवाद यहा किसलिए? काउन्सिल की आगामी बैठक मे यह मुद्दा हम सामने रख ही देंगे।

नाना : (गुस्सा पीकर) ठीक है, जरूर सामने रखिए, लेकिन सभा जल्दी बुलाने की कृपा कीजिए। काउन्सिल के सभी सदस्य किसकी तरफ हैं यह आपको भी एक बार पता चल ही जाना चाहिए।

पुरुषोत्तम : (बरामदे से गुस्से से आते हुए) केशव, काउन्सिल ने तुझे उचित न्याय दिया तो ठीक! लेकिन अगर किसी ने तुझ से जबरदस्ती त्यागपत्र दिलवाया तो नौकरी की चिन्ता मत करना। मै तेरे साथ हूं।

[इसी बीच अन्दर से बयो आती है। पीछे-पीछे तातोबा भी आता है और उसके पीछे फलों की डिश हाथ मे लिए अरुंधती आती है। नाना साहेब, जमीन की तरफ एकटक देखते हुए स्थितप्रज्ञ से बैठे हुए है तभी—]

बयो : तू मरे! मुझे क्यों आश्वासन देने चला है? मैं क्या मर गई हूं! आश्रम का क्या होगा, सोचकर, दिल इतना टूट गया, पर अन्दर रो-रोकर कहर ढाती हुई उस लडकी का क्या हाल हुआ जा रहा है, इसका भी कुछ ख्याल है! कौन माई का लाल केशव को आश्रम से निकाल सकता है, मैं

देख लूंगी। सभी बुद्धिमानों के घर-घर जाकर पूछूंगी—मेरी ऐसा क्या पाप किया है केशव ने। मेरी लड़की से शादी करके उसने कोई जुल्म तो नहीं किया ना ? देखती हूं, लोग मेरी सुनते है या आपकी मानते है ? तातोबा, कल सुबह तैय्यार रहना, कल मैं सभी मेम्बरों से घर-घर जाकर मिलने वाली हूं।

आवाजो : भाभी शान्त हो जाइए···यह सब करने की क्या जरूरत है ?

बयो : (उबल कर) यह समझदारी, आवाजी, आप मुझे मत सिखाइए। अपनी लड़की की शादी तो ऐन ठीक उमर में आपने बड़े बाजे-गाजों के साथ कर दी और करके मुक्त भी हो गए।···मेरी बेटी का क्या होगा,···यह आप क्यों सोचेंगे ? कब से ये केशव को पटाने की कोशिश कर रहे हैं, पर आपने कभी एक शब्द से भी अपना विरोध जाहिर किया ?

केशव : उसकी जरूरत ही नहीं बयो, मैं अभी अपने वचन से फिरा नहीं हूं !

बयो : तू कुछ मत कह। मैं अन्दर थी तब तो तेरी कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई। वैसे भी इन तीसमारखा के सामने तेरी जबान बन्द ही रहती है। (तभी रोकर सूजी हुई आंखों से कृष्णा दरवाजे पर आती है।)

कृष्णा : (हिचकी रोकती हुई) बयो, तुझे मेरी कसम है···मेरी शादी को लेकर होने वाला तमाशा अब काफी हो चुका। (दौड़ कर जाकर मां के गले लग जाती है)

बयो : (उसे पास लेते हुए) चुप मेरी बच्ची···देखो, एक बार गर्दन ऊपर करके देखो तो सही, लड़की की क्या दशा हो गई है ! इनके अन्दर तो सचमुच कोई शैतान बैठ गया है जो इनकी बुद्धि को घर का नाश कराने पर उतारू है। घबरा मत कृष्णा, अब मैं कमर कस के तैय्यार हो गई हूं। केशव

इन आठ दिनों में शादी हो जानी चाहिए। मुहूर्त निकला तो ठीक नहीं तो तीर्थ जाकर···अब मैं रुकने वाली नहीं। और पुष्पा तुझे भी बताए देती हूं, ये तो अब आठ-दस दिन चुप होके बैठ जाएंगे, इनकी तरफ से तिनके की भी मदद नहीं होगी। सारा काम तुझे और जगू को ही अपने सिर पे लेना है। ये शादी में आ गए तो ठीक, नहीं तो बिन मां-बाप की समझ कर कन्यादान कर देना।

अरुंधती : (आवेश से) छी. छीः यह क्या कह रही हैं मां जी ? तीस-मारखां क्या···क्या शतान क्या···मर गए क्या, ऐसे देवता-स्वरूप इंसान के लिए ऐसी अभद्र भाषा ? यही समझा है आपने नाना को ? उनका बड़प्पन क्या कभी भी माप सकी हैं आप ? सात जन्मों के पुण्य उजलते हैं जब तब किसी घर में ऐसा हिमालय जैसा महापुरुष अवतार लेता है और आप—

माँ : (कृष्णा को लेकर अंदर जाते हुए, रुककर, मुड़कर) सच कहती है बहू, तू सच कहती है मेरे पति का बड़प्पन तू मुझे बताने चली है ? इस देवतास्वरूप इंसान की छाया सिर्फ तुम्हारे हिस्से आई है और इसके बड़प्पन की आग मेरे हिस्से। तू बड़ी भाग्यवान है बेटी, जो इस देवतास्वरूप की बहू बनी है। सचमुच तू बड़ी भाग्यशाली है जो इस महा-पुरुष की पत्नी नहीं बनी—

[आवेग से अंदर जाती है। क्षण भर सभी हैरान नाना साहेब स्थितप्रज्ञ होकर नीची नजर किए बैठे हैं। तभी परदा गिरता है।]

तीसरा अंक

पहला प्रवेश

[पन्द्रह दिन बीत चुके हैं। वही हॉल। शाम का समय। परदा ऊपर जाता है। इस समय जगन्नाथ एक आरामकुर्सी पर बैठा 'टाइम्स' का अंक हाथ में लेकर उलट-पलट रहा है। बयो बरामदे में किसी की बाट जोहती हुई पीठ मोड़ कर खड़ी है। एक-दो बार बेचैन सी वह अंदर-बाहर जाती है। उसी समय जगन्नाथ को सुनाई पड़ने वाले ढंग से बयो बुदबुदाती है··· 'अब तक कोई मेरा वापस नहीं आया। अंधेरा होने को आया अभी तक क्या इनकी सभा ही चल रही है। केशव को तो जरा भी ध्यान नहीं रहता···यह भी अच्छा हुआ जो इन्हें बहू ने आज जाने नहीं दिया···नहीं ये तो सुबह तक ना लौटते···कृष्णा को तो कुछ समझ होनी चाहिए। शादी के बाद उसे कुछ ज्यादा ही मान हो गया है। हां···'। जगन्नाथ एक बार भी गर्दन ऊंची करके उसे नहीं देखता। तभी बोर होकर बयो उसके पास जाती है और कहती है—]

बयो : जगू!

जगन्नाथ : (गर्दन ऊंची किए बिना) क्या?

बयो : बैठक मे क्या हुआ होगा रे ?

जगन्नाथ : (गर्दन नीची किए, पेपर पर ही दृष्टि है) कौन सी बैठक मे?

बयो : (उबलकर उसके हाथ का पेपर छीन कर टेबल पर पटकते हुए) तेरा ध्यान कहां है रे ? कहता है कौन सी बैठक ! है एक गाने-नाचने की बैठक, जाएगा क्या ?

जगन्नाथ : (हंसकर) वो बात नही, मुझे ध्यान नही रहा। काउंसिल की बैठक ? हा हा।

बयो : कैसे हो तुम लोग, चिंता से मेरा जी डूबा जा रहा है इधर और तुम हो कि एकदम बेफिकर। उधर उन्हे देखो तो तातोबा से गप्पें मारते बैठे हैं।

जगन्नाथ : मेरी मान बयो, इस सारे ससार की चिंता करना छोड़ दे अब।

बयो : (उबलकर) तुझे बोलने की क्या पड़ी है रे ? तू तो वहां अफ्रीका बैठा है ढेरो माल बनाकर। कृष्णा की गृहस्थी तो अभी शुरू हुई है, केशव की नौकरी चली गई तो—

जगन्नाथ : पुरुषोत्तम ने कहा था वह जरूर उसे कहीं न कहीं लगवा देगा।

बयो : (आवेश से) पर मैं कहती हूं क्यो ? केशव आश्रम क्यों छोड़े ? इसलिए कि ये कहते है ? सुबह से रात तक इतनी जान खपाने वाला आदमी कोई दूसरा मिलेगा मरो तुम्हें कोई ? मैं कहती हूं ये लाख कहते रहे तो भी बाकी के लोग क्या सिर्फ बैल की तरह गर्दन हिलाने के लिए हैं ? वह साफ-साफ इन्हे पूछते क्यों नही कि—किसलिए ?

जगन्नाथ : (हंसकर) हां हा पर, तू मुझे किसलिए साफ साफ पूछ रही है ?

बयो : वैसा नही रे जगू, पर सभी मेम्बर मिलकर इन्हें कहें तो—

जगन्नाथ : बयो, नाना आज की बैठक मे गए ही नही। उनकी तबीयत देखते हुए अरुंधती ने उन्हें जाने नही दिया, तुझे नही पता क्या ?

बयो : वो सब तू मुझे मत बता। खुद नहीं गए तो क्या ? वहां पढने के लिए एक लंबा सा पत्र लिखकर जो भिजवा दिया। मुझे नहीं दिखाया पर।

जगन्नाथ : तुझे दिखा भी देते तो तू क्या कर लेती ?

बयो : मैं मरी क्या करती ? मन मसोस कर बैठ जाती। पर तुम''', तुम दोनों लड़के जो इतने बड़े हो गए हो, जंवाई के लिए जरा कोशिश करते हुए तुम्हारा कुछ बिगड जाता ?

जगन्नाथ : बेकार गुस्सा मत कर बयो। पुरुषोत्तम या मेरा इस सब मे पडना नाना को अच्छा नहीं लगता। काउंसिल के मेंबरों से जब तू मिलने निकली थी तब क्या हुआ था ? नाना ने उपवास करने की धमकी दी और तू लौट आई ना पीछे ?

बयो : तो इसलिए अब राम राम कहते हुए तालियां बजाते बैठ जाएं ?

जगन्नाथ : काउंसिल की सभा में क्या निश्चित होता है पहले वो तो पता चल जाने दे।

[तभी पुरुषोत्तम फैक्टरी से वापस आता है और—]

पुरुषोत्तम : जगू दादा ये तुम्हारा टिकट (जेबसे निकालकर देते हुए) बोट अगले शुक्रवार को छूटेगी। बयो, अरुंधती को वापस आने मे आज जरा देर हो जाएगी। हास्पिटल में एक एमरजेन्सी आपरेशन है। (ऊपर जाने लगता है तभी—)

बयो : सभा में केशव के लिए क्या फैसला लिया गया, कुछ पता चला क्या ?

पुरुषोत्तम : (रुककर) सब कुछ पता नहीं चला, तो भी थोड़ा कुछ कानों में पड़ा है। केशव को त्यागपत्र नहीं देना पडेगा पर—

बयो : (आनंदित होकर) शुकर है, भगवान तेरा लाख-लाख शुकर है। बाकी जो कुछ होगा देख लिया जाएगा।

पुरुषोत्तम : इतने से ही खुश मत हो जाओ। और भी जो कुछ होगा उसे

पचाने की तैयारी मन मे किए रहो।

बयो : (विस्मय से) मतलब ?

पुरुषोत्तम : (ऊपर जाते-जाते) मतलब कुछ नही।

[पुरुषोत्तम जाता है। बयो कुछ बोलने को है तभी नाना साहेब तातोबा से बात करते हुए बाहर आते दिखाई देते हैं। उन्हे देखकर जगन्नाथ उठ कर ऊपर चला जाता है।]

नाना : (प्रवेश करके) राम से मैंने कहा है, तेरी धर्म जिज्ञासा प्रबल होगी तो जरूरी नही कि तू हमारे ही कर्मयोगी मठ मे आए। रामकृष्ण मिशन मे गया तो भी चलेगा।

तातोबा : उसकी धर्म जिज्ञासा की बात रहने दीजिए। वह कितना धर्म जिज्ञासु है यह मुझ से छिपा नही।

बयो : मैं क्या कह रही हू, सुनिए तो जरा···

नाना : राम ने सब कुछ बताया है मुझे। कह रहा था—अविवाहित रहकर जैसूइट मिशनरी मंडल की तरह इस शरीर को समाज कार्य मे लगाने का निश्चय किया है मैंने।

तातोबा : घर में भी सबको सभी कुछ साफ साफ बताकर आजाद हो गया है वह।

बयो : पुरुषा क्या खबर लाया है, पता है कुछ ?

नाना : वो लड़का मुझे बिल्कुल केशव की तरह तेजस्वी और शालीन लगा। शांत और संयमी भी दिखाई दिया। अभी तक तो ऐसा ही लगा है, आगे कैसा अनुभव होता है···भगवान जाने।

तातोबा : राम के लिए कह रहे है? चाहे तो खनखनाकर देख लीजिए, एकदम खरा चांदी का रुपया है। आप निश्चित रहिए। मैंने तो उसे बचपन से देखा-जाना है।

नाना : मैं निश्चित ही हूं तातोबा, लेकिन अपने पुराने अनुभवों से जरा सावधान हो जाता हू। तो राम को—

बयो : (इस बीच बरामदे में दो-तीन बार, कोई आया है या नहीं,

यह देखकर आती है।) अपनी रामायण अब जरा बंद कीजिए और मैं क्या कह रही हूं, वो सुनिए। पुरुषोत्तम कह रहा था कि केशव को अब त्यागपत्र नहीं देना पड़ेगा, सभा ने यह फैसला किया है।

नाना : पागलो की तरह मत बोले जाओ। ऐसा हो ही नही सकता। उसे सुनने में गलती लगी होगी।

बयो : अरे, पर—

नाना : सावित्री तेरी चिंता मैं समझता हूं। केशव की नौकरी के लिए मैंने खुद श्रीमंत राजमाचीकर को बोल दिया है।

बयो : (उबल कर) आपको अपने बोल खर्च करने की क्या पड़ी है ? केशव ने चूड़ियां तो नही पहन रक्खी ?

नाना : तो तातोबा राम को—

बयो : मैं जो कह रही हूं, वो अगर सच निकला तो बेकार चिढ़चिढ़ मत करना।

[बाहर बरामदे मे जाकर खड़ी हो जाती है]

नाना : (ठंडेपन से) तो तातोबा राम को कर्मयोगी मठ में लाकर, उसे कुछ काम सौंपने की सोची है मैंने। मेरी तरफ से तू फिर उसे बता दे कि अभी वह आराम से एक बार नही… अनेक बार सोच ले। जल्दी में कोई निर्णय मत ले। किसी फांसी में न खुद फंसे और न आगे चलकर मुझे फंसाए। बुढ़ापे मे ऐसी धोखे-धांधली का दुख बहुत-बहुत ज्यादा होता है।

तातोबा : बता दूगा, बिल्कुल इन्ही शब्दों मे बता दूगा। अपनी बात खुल कर कह दूगा।

नाना : (कागजों का एक गट्ठा उठाते हुए) ये कागज राम को दे देना, कहना कि आराम से पढ़ कर इन्हे देखे। कर्मयोगी मठ की रूपरेखा और सभी कामों की भूमिका जैसी मुझे सूझी है वैसी लिख दी है मैंने।

तातोबा : (कागज ऊपर ऊपर से देखकर चकित होते हुए) इतना

सब आपने लिखा कब ?

नाना : इसमें खास कुछ नही। आपरेशन होने के दूसरे दिन से लिख रहा हूं। खाली वक्त में विचारशक्ति जरा ठिकाने थी और हाथ भी खाली थे इसलिए इतना लिख सका, तब भी यह कच्चा मसौदा है। राम से कहना कि उसे इसके बारे में कुछ सुझाव देने हों तो जरूर दे।

बयो : **(बरामदे में से ही चिल्लाती है)** केशवराव और कृष्णा आ गए लगते है। मरी मेरी नजर···ठीक से दिखाई तक नही देता···

नाना · **(अपनी ही धुन में)** आने वाले दशहरे तक कर्मयोगी मठ की स्थापना करनी है। टीले के पास एक पुराना बाड़ा है, थोड़ी सी मरम्मत करके रहने लायक बनाया जा सकता है।

तातोबा . **(विस्फारित आंखों से)** टीले के पास ? वो···वो भूतो का बाड़ा ?

नाना : तातोबा, देवता और भूत सब इन्सान की कल्पना है। तुझे अंग्रेजी नही आती तभी तू कभी मिलर या स्पैन्सर नही पढ सका। गोपालराव का 'सुधारक' कभी पढा है **(तातोबा की शर्माई मुद्रा देखकर)** हूं ! कोई हर्ज नहीं, अपना काम तो तू बहुत अच्छी तरह से चला लेता है।

तातोबा : पर उस भूत बंगले मे जाकर कौन रहेगा ?

नाना : कौन मतलब ? मैं और सावित्री···और राम भी तो···फिर धीरे धीरे एक एक करके मठवासी कार्यकर्ताओं की संख्या बढती जाएगी। मैं मठ की व्यवस्था देखूंगा और सावित्री—

बयो : **(वापस आती हुई)** हा हा वही है, साथ आवाजी भी दिखाई दे रहे है।

नाना : तो सावित्री आने वाले दशहरे को कर्मयोगी मठ की स्थापना करेंगे। मै दान वगैरह इकट्ठा करूंगा और तू मठवासियो के खाने पीने और दूसरी व्यवस्था—

बयो : **(अधीरता से)** अभी दशहरे को काफी देर है। मैं क्या कह

रही हूं ? जो कुछ हो गया उसे भूलकर—(जल्दी में फिर बरामदे में जाकर देखती है।)

नाना : थोडी तकलीफ तो होगी क्योंकि शुरू में तो अकेला राम होगा और—

बयो : (दौड़कर वापस आती है) सुनिए, खूब मुह भर कर बच्चों को आशीर्वाद दीजिए।

नाना (अपनी ही धुन में) हा हां आशीर्वाद तो है। (बयो पुनः बाहर जाती है) तो भी मैंने उसे कहलवाया है कि पूरी तरह सोचकर ही कोई निर्णय ले। बाद में पछताने की नौबत न आए।

[बोलते-बोलते पैर झटक कर कुछ तकलीफ से बैठते है। तभी—]

तातोबा नाना साहेब आपकी तबियत ठीक नही लगती !

नाना तबीयत ठीक न होने को क्या हुआ है ? सिर्फ कभी कभी पैर सो जाते हैं'''सिर में चक्कर भी आते हैं। आजकल बहू को काम बहुत होता है इसलिए सैर नियम से नही हो पाती।

[बाहर कुछ शोर सुनाई देता है तभी—]

तातोबा : नाना साहेब सब लोग आ गए लगते हैं।

नाना : तातोबा, तू सावित्री को संभाल। वह एकदम किसी से कुछ पूछ बैठेगी और कुछ निराशाजनक सुनेगी तो खामख्वाह गुस्सा करती बैठेगी।

[तातोबा, बरामदे में जाता है तब तक कृष्णा भागकर बयो के गले से लिपट जाती है। उसे सिर से पांव तक देखकर बयो हर्ष विभोर हो उठती है—'कृष्णे तू तो चार फेरे क्या ले बैठी बहुत ही बदल गई रे ! इतने दिन तक मां की एक बार भी याद नहीं आई ?' 'वैसा नही बयो, पहले दो दिन तो घर-बर ठीक करने मे लग गए, बाद मे बाजार से कुछ न कुछ खरीद करती रही

और इनका तुझे पता ही है, बिल्कुल नाना की तरह। खाना खाने घर आ जाएं तो भी बहुत समझो।' कृष्णा नववधू की तरह खूब सज-धज कर आई है। पीछे पीछे केशवराव और आबाजी आते है। नाना साहेब बडी तटस्थता से बरामदे में चल रहे इस कौटुम्बिक प्रसंग पर एक बार नजर डालते हैं और घुटने पर उंगलियों से ताल देते हुए कुछ गुनगुनाने लगते है। केशव और आबाजी दोनो ही प्रक्षोभित से है। नाना साहेब के सामने जाने में दोनो को ही घबराहट महसूस हो रही है। तभी बयो कृष्णाबाई का हाथ पकडकर अन्दर लाती हुई—]

बयो : चलो अरे, शादी के वक्त ना सही पर अब तो दोनो नमस्कार करके आशीर्वाद ले लो। देखो, मेरी गुड़िया कैसी लक्ष्मी जैसी लग रही है। केशव तू पीछे क्यो है रे ? और हां देख, जवाई हो गया है तो भी मुझ मरी के मुह से 'जी वी' नही निकलेगा। तुझ अब 'मरे' या 'मेसे' ना कहू तो समझो बहुत हो गया। चलो, आगे आकर दोनों नमस्कार करो।

[केशव और कृष्णा झुककर नाना को नमस्कार करते हैं। नाना साहेब उनकी तरफ देखते ही नही तभी बयो—]

अरे यह क्या ? मुह मे आशीर्वाद देने मे भी मेम्बरों के फैसले का इन्तजार करना पडेगा ?

नाना : (उसकी तरफ ध्यान न देते हुए, ठंडे स्वर में) आ केशव बैठ, आइए आबाजी बैठिए, कृष्णा सब ठीक है ना ?

[केशव और आबाजी बैठते हैं।]

कृष्णा : हां नाना, अब एक बार आप दोनों—

नाना : करसनदास जी को भिजवाने के लिए आश्रम सम्बन्धी

प्रस्ताव पास कर दिया ?

केशव : (**गर्दन नीची किए**) हा नाना साहेब।

नाना . अब इतना और करना है कि करसनदास जी को इस प्रस्ताव का पता न चले। उन्हे बुरा लगेगा। जरा ठीक हो जाने पर मै ही उनसे मिलूगा—

आबाजी · उसकी कोई जरूरत नही नाना साहेब काउन्सिल ने ऐसा कुछ किया ही नही जिससे करसनदास जी को बुरा लगे।

नाना : (**चकित होकर**) यानी ? आश्रम—

आबाजी : सेठजी की इच्छानुसार वम्बई ले जाने का तै हुआ है। ज्यादा हुआ तो यहां उसकी एक शाखा बना दी जाएगी, ऐसा विचार किया गया है। फैसला करीब-करीब हो चुका है।

नाना : मेरे पत्र सभा के सामने रक्खे गए या नही ?

आबाजी : हा। उन्हे केशवराव ने ही पढकर वताया।

नाना : और तब···तब भी काउन्सिल ने ऐसा प्रस्ताव पास कर दिया ? आप···आपने सेठ जी की सभी शर्ते मान ली ? (**दोनों को चुप देखकर**) मतदान के वक्त कितने लोगों ने प्रस्ताव का विरोध किया ? एक ने भी नही ? ऐसा कैसे हो सकता है ?

केशव : प्रस्ताव एक मत से पास हो गया नाना साहेब।

नाना : मेरा मत क्या है यह जानते हुए भी ? (**दोनों चुप हैं। तभी**—) तब तो सावित्री ने जो कहा था वह सच ही होना चाहिए। केशव को त्यागपत्र देने की जरूरत नही है, क्या यही निश्चित हुआ है ? घटना के लिए नियम वदल दिया गया या नियम के लिए अपवाद घड़ लिया गया ? कुछ तो बोलिए···मुझे अंधेरे मे मत रखिए।

आबाजी : नही नाना साहेब नियम भी नही वदला और अपवाद भी नही घड़ा गया।

नाना : तब फिर केशव और मैं एक ही साथ काउन्सिल पर कैसे रह सकते है ?

[दोनों ही चुप है; पर तभी नाना साहेब को सब कुछ सहज समझ मे आ जाता है और—]

केशव को रखने के लिए अपनी काउन्सिल पर मुझे··· (रुकते हैं) ऐसा ? ···यह तीसरा पर्याय मुझे कभी भी ध्यान में नही आया। आपने मुझे ही काउन्सिल से हटा कर···

बयो : मतलब केशव को आश्रम मे रखने के लिए आपने इन्हे आश्रम से निकाल दिया ?

आबाजी : छे छे ! उस तरह नही निकाला भाभी। सिर्फ काउन्सिल से निवृत्त करके इन्हे संस्था का अध्यक्ष बना दिया है। अब संस्था का कार्यभार इनसे संभलेगा भी कैसे ?

नाना : (मुस्काते हुए) यानी कि संस्था के कार्यभार में मेरा दखल अब आपको नही चाहिए···यही ना ? अधिकार ले लेने का आप लोगों ने खूब अच्छा तरीका खोज निकाला है ! ठीक है।

केशव : वो बात नही नाना साहेब, आपके लिए बनाए गए घर मे आप ही रहेंगे। संस्था के लिए दान वगैरह एकत्र करने का काम भी आपके पास ही रहेगा। आपकी तो हमे हमेशा जरूरत रहेगी।

बयो : मतलब तुम्हे सिर्फ इनका नाम चाहिए और इनकी कोशिशों से मिलने वाला दान,—है ना ? किसको मिलेगा रे इतना दान, इनके सिवा ? तुम मे से किसी एक की भी है इतनी औकात ? और मरो, ऊपर से हमे ही घर का लालच दिखाते हो ? इन्हें क्या तुमने भिक्षुक समझ लिया ?

केशव : (घबरा कर) नही···मेरे कहने का वो अर्थ नही था बयो···

बयो : अरे, जिनकी कृपा से तुझे आज तक दो वक्त खाने को मिलता रहा उन्हे कम से कम याद तो रखता ? दिन-रात इन्होंने तुझे पढाया, लिखाया, काम सिखाया अपने बच्चो से भी ज्यादा प्यार किया, आश्रम में तुझे काम दिलाया, जिसका तूने अच्छा

बदला चुकाया !

केशव : (व्याकुल होकर) गुस्सा मत करो, यह निर्णय सभी का था। सब ने मिलकर तै किया कि—

बयो : (उबलकर) वो सब गए भाड़ में ! उन सब पर पड़े राख ! तूने क्यों उठकर विरोध नही किया ? इन्हें निकाल रहे हो तो मैं त्यागपत्र देता हूं—ऐसा तूने क्यो नही ठनकाया ? आश्रम के लिए क्या क्या कष्ट नहीं उठाए इन्होंने, तुझ से क्या कुछ छिपा था ?

आबाजी : जरा रुको भाभी, सब साफ साफ बताता हूं। केशव के त्याग-पत्र देने से ही इस प्रश्न का समाधान नहीं हो सकता था। सच तो यह है कि नाना के विचार किसी एक भी सभासद को पसन्द नहीं थे। लोग आखिर कितने दिन चुप रह सकते हैं ? एक दिन, दो दिन, ज्यादा से ज्यादा तीन दिन। काउन्सिल के सदस्य कोई नाना के 'जी हजूर' तो है नही। हां, आश्रम पर नाना साहेब के बहुत उपकार हैं, यह देखते हुए उन्हें संस्था का अध्यक्ष बना दिया गया। वो जो चाहे करें, यह मान लेने के लिए दूसरे लोग तैयार नही थे क्योंकि आश्रम उनकी कोई निजी जागीर नही है। काउन्सिल के प्रत्येक सभासद का अपना स्वतन्त्र मत है, स्वतन्त्र विचार शक्ति है।

बयो : (क्रोध से) कौन है ये सभासद ? इन्होंने ही जिन्हें तिलक लगाकर आसन दिया वही सब गोबर गणेश ना ? कभी एक कौडी भी उन्होने आश्रम पर खर्च की है ? आश्रम इन्ही की कोशिशो से बना है। जो कुछ भी पास था या नही उसे आश्रम पर फूंक दिया। घर घर भीख मांग कर आश्रम का काम चलाते रहे। जंगल मे जब कोई काम करने वाला नहीं मिला तो आश्रम की लडकियों को खाना खिलाने के लिए इन्होंने अपनी पत्नी से खाना बनाने वाली का काम लिया। काम पड़ने पर कपड़े धोने वाली, बर्तन मांजने वाली नौक-

रानी तक बना दिया। उस वक्त क्या कर रहे थे तुम्हारे यह बिन सूड के गणपति ? एक भी मेम्बर ने मेरी मदद के लिए अपनी पत्नी को भेजा था क्या उस वक्त ?

नाना : सावित्री ज्यादा बोल मत···मुह से जताकर अपने किए पर पानी मत फेर।

बयो : (उबलकर) क्यों नही बोलू ? आश्रम आपकी निजी जागीर नही है ऐसा जब यह मुझे लम्बी जबान से बता रहे है तो मैंने कुछ साफ साफ कह दिया तो क्या हुआ ? मेरी बात आप रहने दीजिए। पहला पति जब मरा था, तभी से कष्ट उठाने का व्रत ले लिया था मैंने। लेकिन किसी वक्त की एक याद मिटी नही अभी तक। दिनभर कड़ी मेहनत करके आप रोज रात आश्रम की लडकियो को देखने के लिए जब छः छः मील बारिश और कीचड़ में आते-जाते थे तब एक दिन भी किसी सभासद ने 'मैं आता हूं आपके साथ' कहा था कभी ? आपके कष्ट मुझसे देखे नही गए इसलिए मैं ही बच्चो को लेकर उस जंगल में आकर रहने लगी आखिर किस लिए आबाजी ? आश्रम उस वक्त भी हमारी निजी जागीर तो नही थी ? और कहा का कौन, कल का लड़का केशव, जिसके लिए आप इन्हें इतना बेझिझक जाने के लिए कहते हैं ? प्रस्ताव पास करते वक्त आप लोगों ने शराब पी रखी थी या गांजा ?

नाना : सावित्री व्यर्थ है यह तेरा सारा संताप। तूने जो कहा वो सच है पर उसमें नया तो कुछ नही ? प्रत्येक संस्थाचालक और उसके परिवार को इन्ही मुश्किलों से गुजरना पड़ता है। इतना शोर किसलिए ? काउन्सिल के सभी सभासद मेरे ही चुने हुए लोग हैं। उन्हें दोष देना ठीक नही है। आखिर संस्था के लिए ही आदमी होते है, आदमियो के लिए तो संस्था नही ? संस्था को अगर मुझसे कोई लाभ नही पहुंच रहा तो मौका देखकर मुझे हटा देना इन लोगों का

कर्तव्य है।

[उसी समय अरुंधती बाहर से आती है और बरामदे में ही रुक जाती है।]

बयो : (उबल कर) आप भी एक अजीब हैं। यह लोग आपको आश्रम से निकाल बाहर करने वाले हैं, जिसके लिए मुझे इतना क्लेश हुआ है और आप हैं कि उन्हीं की तरफदारी कर रहे हैं ? अब क्या कहूं आपको ?

नाना : सावित्री यह तू नहीं समझेगी। अच्छा, इस वक्त अन्दर जा।

कृष्णा : (बयो का हाथ पकड़ कर उसे ले जाने की कोशिश करती है।) बयो, तू अन्दर चल।

बयो : (गुस्से से) देखिए, मैं अनपढ जरूर हूं पर पागल नहीं। इन सब के तौर तरीके मुझे अच्छी तरह समझ में आते हैं। आप से इन सबको नुकसान क्यों हो रहा है, बताऊ ? इन सबों पर उन सेठ जी के पैसे की मोहिनी छाई हुई है और—

नाना : (प्रक्षोभ से कांपते हुए) सावित्री, तेरे हाथ जोडता हूं ! ऐसा वैसा कुछ मत बोल, ये सब मेरे अपने ही हैं।

अरुंधती : (आगे आती हुई) मां जी आपको कितनी बार कहना पड़ेगा कि नाना की तबीयत ठीक नहीं उनके सामने ऐसे विवाद मत चलाया करें। चलिए, अन्दर चलिए।

बयो : तो क्या अपने पति का इतना बड़ा अपमान मैं चुपचाप सह लू ? आश्रम बम्बई ले जाकर इन सबको सेठजी के गले में—

तातोबा : बयो···बयो, बहुत हो गया, तू पहले अन्दर चल।

[तातोबा की मदद से अरुंधती और कृष्णा बयो को जबरदस्ती अन्दर ले जाती है। क्षणार्ध स्तब्धता फिर—]

नाना : (शांत स्वर में) केशव राव, आबाजी, आप सबका लिया हुआ निर्णय मुझे मान्य है। मेरे नाम का अब भी अगर कुछ उपयोग हो सकें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। लेकिन आश्रम

के अहाते मे अब मैं रह नही सकूगा।

केशव : (सजल आंखों से) नाना माहेब मुझे क्षमा कर दीजिए।

नाना : क्षमा ? किसलिए रे ? मैं कोई गुस्सा थोड़े हूं। संस्था के काम मे लोगों का इस तरह आना जाना तो लगा ही रहता है। आज मेरी बारी है तो कुछ वर्षों बाद तुझे भी इन्ही हालात का सामना करना पडेगा तब, उस वक्त यह दिन याद रखना और इससे पहले कि संस्था कुछ कहे खुद ही अलग हो जाना। ऐसा करना मुश्किल है, पर जरूरी है।

आवाजी : (भावावेश में) नाना साहेब, आपका आश्रम छोडना किसी को भी अच्छा नही लगेगा। आप आश्रम के अहाते में ही रहिए और सस्था के अध्यक्ष होकर—

नाना : वो होगा नही आवाजी⋯उसकी कोई जरूरत भी नहीं। मैंने सचमुच इसे कोई मान-अपमान का प्रश्न नही बनाया। अब कर्मयोगी मठ का जो काम मैंने हाथ में लिया है वह टीले के पास के उस बाड़े मे रहकर ही पूरा किया जा सकता है। कभी फुर्सत में आप उधर आएं तो उसके बारे मे भी काफी कुछ कहना है आपसे। अभी—अभी तो इतना ही कहना है। (भाव-विह्वल होकर) आश्रम संभालिए।

आबाजी : लेकिन नाना साहेब—

[तभी अरुंधती दरवाजे के पास आकर—]

अरुंधती : नाना, इंजेक्शन का वक्त हो गया।

नाना : (मुस्काते हुए) अच्छा हा, आता हूँ। देखा ? बहू की आज्ञा का मतलब है प्रिव्ही काउन्सिल का हुक्म, जिस पर कोई अपील ही नही। चलू। उठूं। आइए कभी।

[अरुंधती अन्दर जाती है। केशव भी अन्दर जाता है। बोलूं या नही, सोचते हुए आवाजी क्षण-मात्र दुविधा में पडे सोचते रहते हैं। तभी—]

आपको कुछ कहना है ? संकोच मत कीजिए। कुछ चाहिए हो तो जी खोलकर बताइए।

आबाजी : बताना…वैसे कुछ खास नहीं। लेकिन…लेकिन वो बड़े लाट साहेब का पर्सनल असिस्टेन्ट परसों से दो बार आश्रम आ चुका है। कल तो खुद कलेक्टर साहेब भी उसके साथ आए थे।

नाना : (पहचान करके) हूं !

आबाजी : वैसे मैंने तो उन्हें साफ-साफ बता दिया कि नाना साहेब को मान-सम्मान, रुतबे या किसी पदवी से जरा भी लगाव नहीं पर उनका कहना है कि नाइटहुड का यह 'सर' का खिताब कोई मामूली चीज नहीं। किन्हीं महान लोगों को ही मिलता है यह। आपने अगर यह स्वीकार कर लिया तो—

नाना : (मुस्कुरा कर) सरकार के घर प्रतिष्ठा बढ़ जाएगी—

आबाजी : सिर्फ इतना ही नहीं नाना साहेब। आश्रम का कोई छोटा-मोटा काम भी रुका होगा तो सरकार से चटपट करवा लेंगे।

नाना : आबाजी, आपकी नेकदिली पर मुझे पूरा भरोसा है पर अपना सही उद्देश्य समझने में यहां आपसे भूल हुई है। हम सिर्फ सुधार के इच्छुक है; सरकारी मान-रुतबा मिलने की बात सुनकर लोगों का हम पर से बिलकुल विश्वास उठ जाएगा।

आबाजी : पर नाना साहेब—

नाना : नहीं आबाजी, समाज का रोष अपने ऊपर लेने से मैं डरता नहीं हूं, बल्कि वह तो हमारा संकल्प है, पर तभी जब समाज के गले से कोई सुधार जबरदस्ती उतारना हो। अपने लिए सरकारी रुतबा या उपाधि लेने के लिए तो ऐसा किसी भी कीमत पर नहीं किया जा सकता।

आबाजी : तब भी नाना साहेब—

नाना : आबाजी, पराई सरकार से पदवी लेने की अपेक्षा अपनों की दी हुई मार मेरे लिए ज्यादा शिरोधार्य है। मेरा सब कुछ इसी में है, बस ! आप कभी आ सकें तो आइए।

[आबाजी जाते है। रह जाते है नाना साहेब और तातोबा।]

नाना : (कष्ट से पैर को झटक कर उठते हैं और इधर से उधर चक्कर लगाने की कोशिश करते हैं) तो तातोबा, एक बार टीले वाले उस बाडे मे जाकर उसकी मरम्मत का कुछ अदाज लेकर आ। जरा सा ठीक होते ही यहां से सीधा वहा जाना चाहता हू।

[ऐसा कहते-कहते बीच मे ही तिपाई पकड़ कर बैठ जाते है। तातोबा पास जाता है; घबरा कर—]

तातोबा : नाना साहेब आपकी तबीयत ठीक नही है क्या ?

नाना : (अपना क्षोभ अन्दर ही अन्दर पीकर) ज़रा सिर मे चक्कर ···तातोबा, कितना मुश्किल लग रहा है! किसी इन्सान में भी कभी मेरे प्राण ऐसे नही जकड़े,···लेकिन आश्रम के पाश तोड़ने से भी नही टूटेंगे। (पांव जमीन पर झटकते हुए) बहुत-बहुत दु:ख हो रहा है।

तातोबा : (घबरा कर) नाना साहेब, आप जरा अन्दर चलकर लेट जाइए।

नाना : बात यह है कि··· (उठने की कोशिश करते हैं) बात यह है कि··· (मुद्रा कुछ टेढ़ी मेढ़ी हो जाती है) बात यह है··· (तातोबा को पकड़ कर उठने की कोशिश करते हैं, लेकिन जमीन पर गिर पड़ते हैं।) बात यह है···

तातोबा : (घबराकर) नाना साहेब··· (चिल्लाता है) बयो, पुरुषा, जगन्नाथ! अरे जल्दी आओ···देखो नाना को क्या हो गया···

[नाना साहेब टेढी-मेढ़ी मुद्रा से 'बात यह है' यही एक वाक्य मुश्किल से कह पाते हैं और उठने का निष्फल प्रयत्न करते है 'क्या हुआ ?' चिल्लाती हुई अन्दर से बयो, अरुंधती, कृष्णाबाई, केशव और पीछे-पीछे जगन्नाथ और पुरुषोत्तम भागते

हुए आते हैं। सब लोग नाना साहेब को घेर लेते हैं। सिर्फ उस शोर मे अरुंधती पुरुषोत्तम को एक ओर ले जाकर कहती है—]

अरुंधती : पुरुषोत्तम, डा० भरूचा को बुलाना चाहिए। लगता है नाना को पैरालिसिस का अटैक हुआ है।

[जगन्नाथ सब से 'घबराओ नही'''जरा दूर होना'''नाना को अन्दर बिस्तर पर ले चलते है' आदि कहते-कहते अंधेरा हो जाता है।]

दूसरा प्रवेश

[लगभग डेढ महीना बीत चुका है। वही हॉल। सुबह का वक्त। परदा ऊपर जाता है। इस वक्त हॉल खाली है। क्षणभर मे बाहर से बयो की आवाज सुनाई देती है।''''धीरे धीरे'''आराम से'''इसे पकड़ लीजिए '''गिरेंगे नहीं'''मैं हू ना पीछे'''बहुत अच्छे'''पाव उठाकर रखिए''' ऐसे''' इत्यादि। फिर छड़ी का आधार लिए हुए नाना साहेब और उनके पीछे बयो दिखाई देती है। नाना साहेब का एक हाथ और एक पैर पक्षाघात से बेकार हो गया है। बोलना भी लगभग बंद हो गया है। सिर्फ एक ही उद्गार—'बात यह है'''बात यह है''' भारी जीभ से लेकिन अलग-अलग तरह से कहकर वह अपना आशय स्पष्ट करना चाहते है। उनकी बात बयो को छोडकर और किसी की समझ में नही आती। नाना साहेब किसी का भी आधार न लेकर कुर्सी तक आते हैं और बैठ जाते हैं। तभी—]

बयो : (प्रसन्नता से) देखिए! एक बार भी मैंने सहारा दिया आपको? पूरे का पूरा अपने आप ही चले ना? डेढ महीने के लिहाज मे काफी सुधार है। (नीचे बैठकर उनकी

चप्पल उतारकर, पैर दबाने लगती है।) पाव दुखने लगे है ना ?

नाना : (गर्दन हिलाते हुए) बात यह है—

बयो : नही, शुरु शुरु मे थोडे होंगे, डाक्टर ने कहा है, अब चलने की आदत डालने से ही धीरे धीरे सुधार होगा। (नाना साहेब एकदम उठकर चलने लगते हैं, तभी—) अरे यह क्या ? चलने की आदत डालने का मतलब हर वक्त चलना थोड़े है ? और एक बात ध्यान मे रखिए, तबीयत को अब जरा संभालकर रखना पड़ेगा। पहले की तरह हर वक्त की मेहनत अब आप से बर्दाश्त नही होगी।

नाना : बात यह है ? (अर्थात् आने वाले का क्या हुआ ?)

बयो : कौन ? राम ? (नाना गर्दन से ही 'नहीं' कहते हैं। तभी—) तातोबा ? (गर्दन से 'हां' कहते हैं) बताया ना···कल रात आया था। लेकिन देर हो गई थी। आप सो गए थे इसलिए उठाया नहीं। आज आएगा।

नाना : बात यह है ? (उसका क्या हुआ ?)

बयो : किसका ? टीले वाले बाडे का ? (नाना गर्दन से 'हां' कहते हैं।) तातोबा ने कहा है, मरम्मत पूरी हो चुकी है। राम ने पूरे बाड़े की सफाई-अफाई भी करवा ली है। दो एक दिन मे वो वहा जाकर रहने लगेगा।

नाना : बात यह है ? (फिर हम कब जाएंगे ?)

बयो : हम ? हम भी जाने ही वाले है। पर आप पहले थोड़ा ठीक तो हो जाएं ?

नाना : बात यह है···बात यह है (छि छि ! मैं अब बिल्कुल ठीक हूं···)

बयो : हा हा जानती हूं आप बिल्कुल ठीक हो गए हैं। किसी रेस में नाम दे दिया जाए आपका तो पहला नंबर आ जाएगा आपका···लेकिन जाने से पहले एक बार डाक्टरों की सलाह तो लेनी पड़ेगी। पुरुषोत्तम, बहू, जगन्नाथ से भी तो पूछना पड़ेगा।

नाना : वात यह है ! (आज ही जाएंगे)

बयो : आज ही जाना है ? अच्छा, देखेंगे, जायेंगे। मालिश वाले काका आए हैं, मालिश तो कराएंगे ना ? (नाना गर्दन से 'हां' कहते हैं, इतने वाहर से तातोबा आता है) आ बाबा, सुबह से तेरे ही नाम की रट लगाए है।

तातोवा : नाना साहेव की पेन्शन लेने कालज गया था इसलिए थोडी देर हो गई। काम था साला एक मिनट का लेकिन कालेज का वो क्लर्क···जैसे पेन्शन नही, श्राद्ध की दक्षिणा दे रहा हो। घंटाभर विठाए रक्खा चांडाल ने। आखिर मैंने जब नाना साहेव का नाम लेकर प्रिंसिपल के पास जानेकी धमकी दी तव सीधे रास्ते पे आया साला। (जेब से डायरी निकालकर उसमें रक्खे हुए नोट आगे करते हुए।) नाना साहेव यह पैसे, दस दस के सात नोट। (नाना साहेब दाएं हाथ से पैसे ले लेते हैं। उनमें से एक नोट निकालकर तातोबा को देते हुए—)

नाना : वात यह है···बात यह है।

[तातोवा समझ नही सकता। बयो की तरफ देखता है।]

बयो : कह रहे हैं, आश्रम के मैंय्यादूज फंड में जमा कर देना। ले वावा, ले ले। मरों ने हमारी नाक काट दी फिर भी इनका प्रेम कम नही हुआ।

तातोवा : वाकी सब ठीक है बयो, लेकिन जो भी हो तुझे एक बार कृष्णा के घर जरूर हो आना चाहिए।

बयो : उसे तो वता ही दिया था, तुझे भी कह रही हूं। कृष्णा पर मुझे कोई गुस्सा नही और न ही जवाई के लिए मन में किसी तरह का क्लेश है। पर जब तक वे दोनों आश्रम के अहाते में रहेंगे उनके घर पैर नहीं रखूगी मैं, समझ गया ना ?

नाना : (नाना हाथ में पकड़े हुए नोटों में से तीन नोट निकालकर

बयो को देते हुए) बात यह है…

बयो : हां हां, पुरुषोत्तम को दे देती हूं, महीने के खर्चे के ही ना ?

[नाना साहेब गर्दन हिलाकर 'हां' कहते हैं। फिर हाथ के सभी नोट उसके हाथ में दे देते हैं। तभी—]

यह किसके सिर पर ? मेरे ? चलूं उठूं…भीतर मालिश वाले काका तंग पड रहे होंगे।

नाना : बात यह है… (अर्थात् मुझे तातोबा से बात करनी है।)

बयो : तातोबा कहीं भागा नहीं जाता, पहले मालिश करवा लीजिए फिर जितनी देर जी में आए बातें कीजिए उससे। चलू।

तातोबा : बयो, तेरी सूझ-बूझ का भी जवाब नहीं। नाना साहेब क्या कहना चाहते, यह हर बार तुझे कैसे समझ में आता है ?

बयो : (हंसकर) इसमें कौन सा चमत्कार है रे ? बचपन में ये बच्चे जब तुतलाकर बोलते थे तो इनके मन की बात मुझे कैसे पता चलती थी ? अपने लोगों की बात किसे नहीं समझ में आती ?

[बीच मे ही नाना साहेब छड़ी का आधार लेकर उठते है और अंदर जाने लगते हैं। बयो भी जाने लगती है। अंदर जाते जाते बयो जरा रुक-कर—]

अब काफी सुधार नजर आता है। है ना ?

तातोबा : (कौतुक से देखते हुए) हां, रुपये में करीब बारह आने !

बयो : (विषाद से) अब बस थोड़ा ठीक से बोलने और लग जाएं…

तातोबा : जरूर बोलने लग जाएगे…एक बार नहीं…सौ बार बोलने लगेंगे। मगज तो अभी भी वैसा ही तेज है…।

बयो : रुक जरा, आती हूं।

[नाना साहेब के पीछे पीछे जाती है। कुछ ही देर.

में वापस आ जाती है । इस बीच तातोबा डायरी से एक रसीद और हिसाब लिखा हुआ कागज निकाल कर ठीक करता है। वयो जब आती है तो उसके हाथ में देता है। तभी—]

वयो : (विस्मय से) यह क्या ?

तातोबा : टीले वाले बाडे की मरम्मत पर जो खर्च आया उसका हिसाब और यह रसीद। ठीक से रख दे इसे और राम जब मिले उसके हवाले कर देना। लापरवाही मत करना। कल जब मठ का कार्यालय बनेगा तो इन सभी कागजों की जरूरत पडेगी। नाना साहेब का कायदा है यह। साली एक पाई का घोटाला भी सपता नहीं उन्हें।

वयो : (रसीद और हिसाब का कागज लेती हुई) तातोबा एक मुसीबत खडी हो गई है रे सामने !

तातोबा : क्या ?

वयो : जब से ये कुछ ठीक हुए है, टीले के वाड़े मे जाने का हठ कर रहे है। कल से सामान की गाठ तक बाधे बैठे हैं ! —कहते हैं कुछ भी हो, आज तो जाना ही है।

तातोबा : नही बाबा नही, तू ऐसा पागलपन मत करना। बाडा साला यहा से चार मील दूर है। इतना जबर हूं मैं, तब भी दो बार आने जाने से ही मेरी कमर का काटा ढीला हो जाता है और तू ? तू···अकेली वहा रहेगी कैसे ? वक्त-बेवक्त डाक्टर की जरूरत पडी तो साला भागदौड कौन करेगा ?

वयो : यह भी है तातोबा, और अब मुझ मरी से भी तो उतनी धाव-धाव नही हो सकती। मठ बनेगा तो रोज कम से कम चार लोगों को तो परोसना ही पडेगा ? मैं तो फिर उसी चूल्हे के पास !

तातोबा : मैं कहता हूं, तुम्हारे यहा रहने मे क्या बुराई है ?

वयो : वही तो मैं सोचती हूं। यहां, घर बड़ा है। चार नौकर-चाकर भी हैं। बच्चे पूछताछ करते हैं। डाक्टर घर मे ही

लोगों ने। मा जी नाना को लेकर टीले वाले बाड़े मे जाकर रहने के लिए कह रही हैं।

पुरुषोत्तम : आज ? नान्सेंस। आखिर तूने क्या सोचा है, बयो? नाना के कहने, न कहने के कोई माने नहीं है पर तुझे तो समझना चाहिए! दूर-दराज के उस जंगल में अकेले रहने की आखिर यह क्या सूझी है आप लोगों को ? तुझसे भी अब इतनी मेहनत कैसे हो सकेगी ? जनम भर क्या कष्ट सहते रहने का ही व्रत ले लिया है तूने ? कुछ दूसरों की भावना का भी ख्याल होना चाहिए !

बयो : पुरुषा, मैं सब जानती हूं रे। फिर से बनवासिन होकर रहने का कोई शौक नहीं जागा मुझ में। पर इन्होने उस मठ का काम जो हाथ मे ले लिया है ?

पुरुषोत्तम : नाना को भी एक से एक नया पागलपन सवार होता है और तू—

अरुंधती : ऐसे मत कहो पुरुषोत्तम। नाना का विचार बुरा नहीं है पर अब इस अवस्था में उनसे इसका निर्वाह होना मुश्किल है।

बयो : वो मैं समझती हूं पर इनका मन किसी तरह लगा रहे, ऐसी एक जगह भी तो होनी चाहिए।

जगन्नाथ : लेकिन वहां रहकर तेरा क्या हाल होगा, कभी सोचा है ? बुढ़ापे मे आराम से राम नाम लेते हुए घर क्यों नहीं बैठते ? अपने बच्चो के साथ रहकर दो ग्रास सुख से क्यों नहीं खाते ? घर बैठकर जितनी समाज सेवा हो सके करो, मना कौन करता है ?

पुरुषोत्तम : वो नाना को नहीं पटता। न खुद सुख लेंगे, न दूसरों को लेने देंगे। तू उन्हें साफ-साफ बता दे—जाना है तो आप अकेले जाइए। मुझे कहीं नहीं जाना है।

बयो : उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। 'हूं' कहेंगे और चले जाएंगे !

पुरुषोत्तम : इतनी अकड़ दिखाएंगे तो बेशक जाने देना खुशी से।

अरुंधती : क्या बोलते जा रहे हो पुरुष ? नाना को अकेले भेजकर मा जी का मन यहां लग जाएगा ?

पुरुषोत्तम : नही तो क्या उनका हठ पूरा करने के लिए हम सभी टीले के उस वाडे में जाकर रहें ? बचपन में वैसे दुःख दिया, अब इस तरह दु:खी कर रहे हैं। आय एम कम्प्लीटली डिस्गस्टिड···फैंड अप विद हिम।

अरुंधती : ऐसा कहकर हम अपनी जिम्मेवारी नही टाल सकते पुरुष !

बयो : मुझे एक बात सूझी है। बताऊं ! तुम दोनो अगर उन्हें यहां रहने पर मजबूर करो तो शायद वह मना नहीं करेंगे।

पुरुषोत्तम : और कोई होता तो मैं कभी मजबूर नही करता लेकिन सिर्फ तेरे लिए ऐसा कर सकता हू। पर उनके उस कर्मयोगी मठ का क्या होगा ? उसका विचार क्या नाना छोड़ देंगे ?

बयो : सुन, मैं क्या कह रही हूं। अपने बगले के पिछले दो कमरे खाली करवा कर—

पुरुषोत्तम : वहां उन्हें कर्मयोगी मठ चलाने के लिए कहूं ? बहुत अच्छा ! बहुत नेक ख्याल है !

बयो : अरे बेटा ! मठ का कोई ज्यादा पसारा नही होगा, न ही घर के लोगों को उससे कोई दिक्कत होगी।

पुरुषोत्तम : दिक्कत हो या न हो, बयो, अपने घर में मुझे फिर से 'आश्रम-मठ' यह सब झंझट नही चाहिए।

अरुंधती : झंझट क्यों कहते हो, अपनी एनेक्सी मे नाना—

पुरुषोत्तम : अरुंधती तू बीच मे मत बोल। एक आश्रम के पीछे नाना ने घर को कैसे धर्मशाला बना कर रख दिया था इसका तजुरबा बचपन से हमें है। और अब फिर से मुझे इस घर को धर्मशाला नही बनने देना।

बयो : अरे पर पिता के नाते तो···

पुरुषोत्तम : पिता के नाते वह यहां रहें, सुख शांति मे रहें, पर उनके मठ वठ की मुसीबत अब मुझसे सहन नही होगी। आजतक

वहुत, वहुत मुसीबतें उठाई है हमने। उतनी काफी हैं।

बयो : मुसीबतें क्या सिर्फ तुम वच्चो ने ही उठाई ? तुम्हारे पिता क्या मजे उडा रहे थे ? उन्होने भी तो जनम भर कष्ट ही और मुसीबतें ही उठाई !

पुरुषोत्तम : हा-हां, उन्होने भी जन्म-भर मुसीवतें और कष्ट ही उठाए पर किसके लिए ? वता ना, किसके लिए ? वीवी-बच्चो के लिए तो नाना ने सारी जिन्दगी···कुछ नही किया।

बयो : अरे मेरे राजे ! कौए-चिड़िया की गृहस्थी तो हर घर में होती है। अपने वीवी-बच्चो के लिए कौन पुरुप मेहनत नही करता ? पर तेरे पिता तो जन्म-भर किसी एक महान काम के लिए अपना खून सुखाते रहे, तुझे ऐसा नही लगता क्या ?

पुरुषोत्तम : बयो, उस महान् काम के लिए खून सुखाकर नाना बड़े आदमी भी तो वने। उनके वड़प्पन के फूल सदा आश्रम के काम आते रहे, लेकिन हम बच्चो के हिस्से मे तो उस वड़प्पन के कांटे ही आए है।

बयो : (दु:खी होकर) काटे ! उनकी महानता तुम्हारे लिए कांटा है ? ऐसा मत कह वेटा। आश्रम के लोगो ने, यहां तक कि आवाजी और केशव ने भी उनकी महानता नही जानी। उसका मुझे कोई दु.ख नही, उनकी पहुंच उतनी ही है, पर पुरुषा, तू तो उनका वेटा है ! इतना क्षुद्र मन उनके वेटे को शोभा नहीं देता रे ! तेरा बाप हिमालय जैसा ऊंचा है, वेटा !

पुरुषोत्तम : बयो, तू चाहे मुझे क्षुद्र मन का ही समझे···मुझे उसका दु:ख नही। पर तुझ जैसा वड़ा मन इस दुनिया मे मैंने किसी का नही देखा। तुझ से ही महान है नाना। जन्म-भर तू घिसती रही तभी नाना हिमालय जितने वडे बन सके।··· नही तो आज वह हमारी तरह ही सामान्य होते।

बयो : (गुस्से से) पुरुषा, मुह सभालकर वात कर !

पुरुषोत्तम : वयो, तुझे बुरा लगा हो तो आज भी बचपन की तरह झाडू से मार। मैं एक शब्द भी मुह से नहीं निकालूंगा। पर नाना का बेटा हूं, ना! जैसे उन्हें ढोंग अच्छा नहीं लगता वैसे मैं भी झूठ नही बोल सकता। नाना ने पत्नी बनाकर तुझसे कैसा व्यवहार किया इससे हम बच्चों को सरोकार नही है, मैं इस मामले पर कुछ कहने भी नहीं जा रहा। नाना ने हम बच्चों के लिए कुछ नहीं किया…मैं इसकी भी शिकायत नही करता। क्योंकि जहां वे कम पड़ गए, वहां तू कमर कसके खड़ी हो गई और वक्त निकलवा दिया। वयो, तेरी ही हिम्मत और जिद से मैं जर्मनी जा सका, तेरे ही हठ से कृष्णाबाई और केशव की शादी हो सकी। तेरे लिए ही तो कब का भागकर गया हुआ यह जगूदादा इस घर से आज तक अपने बन्धन न तोड़ सका। नाना ने तो हर बात में, हर मौके पर आश्रम का ही हित देखा और समझा। हमारा हित बड़ी निर्दयता से उन्होंने अपने पैरों तले रौंद दिया! और हित ही क्या हमारे मन, हमारी भावनाएं तक। यह सब कुछ भूलकर भी मैं नाना को रखने को तैयार हूं, पिता के रिश्ते से भी ज्यादा तेरे लिए। तुझे दु.ख न हो सिर्फ इसलिए। उनके मठ और आश्रम से मेरा कोई वास्ता नही है। मुझे इस सब मे कुछ भी दिलचस्पी नहीं है।…लेकिन तू अगर कहेगी तो नाना का कर्मयोगी मठ एनेक्सी में तो क्या…इस घर मे भी—

वयो : रुक पुरुषा, मैं ज्यादा कुछ कहना नहीं चाहती थी पर अब जरूर पूछूंगी…इस घर में तेरे पिता रह सकते हैं पर उनका लिया हुआ व्रत नहीं? तुझे सूर्य सहन है पर धूप नहीं, यही ना? पिता के प्रति तुम बच्चों की अगर यही भावना है तो अच्छा है, ये यहां न ही रहें…रहेंगे भी नही। मठ जरूर बनेगा लेकिन उस टीले के पास के उस बाड़े में ही। जहा मठ होगा वहीं वो होंगे। और वही मैं भी! तुझे

और तेरे घर वालो को मठ की, इनकी और मेरी जरा-सी भी तकलीफ नहीं सहनी पड़ेगी।

[तभी कुछ बोलते हुए नाना साहेब और तातोबा बाहर आते हैं।]

नाना : (बयो को) बात यह है⋯बात यह है।

बयो : तातोबा, घोड़ागाड़ी लेकर आ। हमें अभी बाड़े जाना है।

पुरुषोत्तम : बयो, तू यू एकदम सिर पर राख मत डाल।

अरुंधती : मा जी, इनके बोलने का आप ऐसा उल्टा अर्थ मत लगाएं।

जगन्नाथ : बयो, पुरुषोत्तम ने जो कुछ कहा है उसमे गुस्से की कोई बात नही।

बयो : मैं गुस्सा नही हूं, और न ही किसी की भी बात के उल्टे अर्थ लगा रही हूं। पर अब हमें यहां नहीं रहना है। तातोबा, जा जल्दी घोड़ागाड़ी लेकर आ।

[तातोबा, अनिच्छा से जाता है।]

नाना : (बयो को) बात यह है⋯बात यह है⋯बात यह है⋯

पुरुषोत्तम : नाना क्या कह रहे हैं?

नाना : बात यह है⋯बात यह है⋯बात यह है⋯

बयो : (आंखों में आंसू आ जाते हैं) कह रहे है, तू बच्चो पर गुस्सा मत कर। वह जो कह रहे हैं, ठीक ही है। सचमुच मैंने बच्चों के लिए कुछ नहीं किया।

नाना : (गर्दन हिलाते हैं) बात यह है⋯बात यह है।

बयो : कहते है⋯तुझे और बच्चों को बहुत सहना पडा है।

नाना : (गर्दन हिलाते हुए) बात यह है⋯बात यह है⋯

बयो : कह रहे हैं—इन्हे मुझ पर गुस्सा है तो—

नाना : (उसे रोककर, गर्दन हिलाकर 'ना' कहते हैं) बात यह है⋯बात यह है⋯बात यह है⋯यह है⋯

बयो : ठीक है, आप पर नहीं, मठ या आश्रम पर?

[नाना साहेब गर्दन हिलाकर 'हां' कहते हैं। तभी—कह रहे हैं—इन्हें आश्रम और मठ को

लेकर गुस्सा है तो इसमें बुरा मानने की क्या बात है ?]

नाना : बात यह है⋯बात यह है⋯यह है⋯यह है⋯है⋯।

ययो : (आंसू टपकते हैं) नहीं। आपके चरणों की सौगन्ध मुझे बच्चों पर जरा भी गुस्सा नहीं। पर—

नाना : (सुख से) बात यह है⋯बात यह है⋯

ययो : इतना अफसोस जरूर है कि मुझ मरी ने जितना आपको समझा, बच्चे कम से कम उतना तो समझ लेते आपको!

[नाना उठते है और अन्दर जाने लगते हैं।]

अरे, चले—कहा हैं ?

[दरवाजे तक नाना बड़ी सफाई से जाते हैं। फिर रुकते हैं, मुड़ते है। प्रसन्न होकर मुस्काते हुए, कुछ अभिमान के साथ—]

नाना : बात यह है⋯!

[मतलब—'देख, मैं अब ठीक हो गया हूं ना ? तेरे सहारे के बिना चल सका हूं या नहीं ?']

ययो : हां हां, आप ठीक हो गए है। चलने मे अब आपको किसी का भी सहारा नहीं लेना पड़ता।

नाना : बात यह है⋯(मतलब⋯तू यहीं रुक, मैं आता हूं।)

ययो : मैं यही रुकती हूं। पर आप कहीं गिर-विर न पड़ें⋯।

[नाना साहेब अन्दर जाते हैं। अरुंधती उनके पीछे-पीछे जाने लगती है। तभी—]

ययो : बहू, तू पीछे मत जा, उन्हें अच्छा नहीं लगता।

अरुंधती : लेकिन मां जी—

ययो : देख, यहां तो तुम सब लोग हो। कल से वहां बाड़े में तो हम दोनों अकेले ही रहेंगे। अकेले चलने की आदत अब इन्हें डालनी ही चाहिए।

पुरुषोत्तम : लेकिन, ययो—

ययो : पुरुषा, गाव छोड़कर हम पर्वत के पास उस जंगल में बसाए

गए आश्रम में रहने कभी गए थे, तुझे कहां याद होगा? जगू, तुझे याद है—यह पुरुषा उस वक्त कैसे इधर से उधर गिरता पड़ता रहता था? घर का काम करते-करते भी मैं तब इसे संभाल ही लेती थी ना? उस वक्त जैसे मैंने तुम बच्चों को संभाला वैसे ही अब इन्हें भी संभाल ही लूंगी। अरे! अपने पांवों से चलने की खुशी क्या होती है, जाननी है तो किसी छोटे बच्चे से या फिर इनकी तरह किसी बुढ़ापे में अपंग हुए इन्सान से पूछो। (बोलते-बोलते दरवाजे के पास आकर देखती हुई) नहीं-नहीं, मैं नहीं आ रही। पर दीवार से हाथ टिकाकर, आराम से, पांव उठाकर चलिए। ऐसेऽ! (आंखें भर आती हैं, और पीछे लौट आती है। पुरुषा, जगू, तुम्हें उस वक्त बहुत कुछ भोगना, बहुत कुछ सहना पडा, यह मैं क्या जानती नहीं? (अन्दर देखती हुई) धीरे···धीरे···आराम से···(रुककर) तुम्हारे लिए मैं इनसे कितना लड़-लड मरती थी, याद करो जरा। वैसा वक्त अब भी आ जाए तो जरूर लड़ूंगी। अपने बच्चों की चिन्ता किस मां को नहीं होती रे? एक बात तब भी कहना चाहती हूं। मां होने के नाते अपने बच्चों के लिए मैं जन्म भर इन पर कितना भी क्यो न बिगडी हूं पर एक पत्नी के रिश्ते मेरा मन बहुत भर आता है···खुद को कितना धन्य मानती हूं। उस वक्त जैसे ये बोलते थे, व्यवहार करते थे वैसा न करते तो मेरे मन में टिका इनका रथ कब का जमीन पर लग गया होता। देखते क्या हो, गर्दन उठाकर आसमान की तरफ देखो। और बताओ, क्या कभी ऐसा हिमालय-पुरुष देखा है तुमने अपनी आखो से? (मुस्कुराती हुई) देखते कैसे? मैं भी नहीं देख पाई रे! हम सभी खडे थे उनके पावों के पास···उनकी छाया में। ऊपर दिखता है सिर्फ आसमान। चोटी कही दिखाई ही नहीं देती। चोटी तक नजर ही नहीं पहुंच पाती।

पुरुषोत्तम : (भरी हुई आंखों से) वयो...।

वयो : लो ! अरे ! यह आंखों में आंसू आने को क्या हो गया ? बच्चे बड़े हो गए और मैं क्या अब घर ही संभालती बैठूं ? मेरे इन सफेद बालों को अब इनका साथ, इनकी सोहबत ही नहीं चाहिए क्या ?

[तभी तातोबा आकर खड़ा हो जाता है।]

घोड़ागाड़ी ले आया ?

[तातोबा गर्दन हिलाकर 'हां' कहता है। वयो अन्दर जाने के लिए मुड़ती है तभी अन्दर से नाना साहेब आते हैं। हाथ में एक कपड़ों की गठरी और पहनने के कपड़े लेकर। तभी 'अरे यह क्या ? आप किस लिए उठा लाए ?' कहती हुई वयो भागती है। उससे पहले ही तातोबा गठरी ले लेता है। नाना साहेब कोट डालने लगते हैं।]

पुरुषोत्तम : वयो, मेरी मान, वहां मुश्किल होगी।

वयो : अरे मुश्किलें तो हमारी किस्मत में ही हैं, पर—

नाना : बात यह है...बात यह है...बात यह है।

वयो : तातोबा, ये कह रहे हैं, राम को आज शाम से ही वहां रहने के लिए भेज दियो। चलना चाहिए अब। (अन्दर जाती है और क्षण-भर में अपनी गठरी लेकर बाहर आती है।)

नाना : (इस बीच जगन्नाथ और पुरुषोत्तम से) बात यह है...बात यह है...(दोनों को ही कुछ समझ नहीं आती, तभी वयो आती है और—)

वयो : चलिए।

नाना : बात यह है...बात यह है...बात यह है...यह है...।

वयो : (हंसने लगती है) आपके सामने रोऊं या हंसूं, समझ नहीं आता मुझे सचमुच।

पुरुषोत्तम: क्या ? नाना क्या कह रहे हैं ?

नाना : बात यह है...बात यह है...

बयो : (हंसते-हंसते आंखों में आंसू आ जाते हैं) इतना कुछ हो गया पर आश्रम पर से माया नहीं टूटी इनकी। तुझे कह रहे हैं—आश्रम के मैंय्यादूज फंड में दान भिजवाना मत भूलना।

नाना : (गर्दन हिलाते हैं) बात यह है'''बात यह है'''।

[बयो नाना साहेब को लेकर जाती है। तातोबा पहले ही चला गया है। धीरे-धीरे पुरुषोत्तम, अरुंधती और जगन्नाथ भी भारी मन से बाहर जाते हैं—परदा गिरता है।]

□□

'लिपि' द्वारा प्रकाशित आज के
लोकप्रिय रंगमंचीय नाटक

जुलूस
बादल सरकार (अनु० यामा सराफ)

अन्त नही
बादल सरकार
(अनु० रति बार्थोलोम्यु, रामगोपाल बजाज)

बकरी
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

पंच पुरुष
डा० लक्ष्मीनारायण लाल

दूसरा दरवाजा
डा० लक्ष्मीनारायण लाल

दुलारी बाई
मणि मधुकर

सिंहासन खाली है
सुशीलकुमार सिंह

नागपाश
सुशीलकुमार सिंह

संध्या छाया
जयवंत दलवी (अनु० डा० कुसुम कुमार)

हिमालय की छाया
वसंत कानेटकर (अनु० डा० कुसुम कुमार)

गुफाएं
मुद्राराक्षस (प्रेस मे)

दंभ द्वीप
विजय तेंदुलकर (अनु० सरोजिनी वर्मा) प्रेस में

सापउतारा
शिवकुमार जोशी (अनु० प्रतिभा अग्रवाल) प्रेस में

लड़ाई
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (प्रेस मे)